आम आदमी का अपना दैनिक अखबार

तरुण छत्तीसगढ़

■ रायपुर,शुक्रवार 2 मई 2025 ■ बैसाख शुक्ल पक्ष-5 ■ वर्ष- 41 ■ अंक-034 ■ पृष्ठ-8 ■ डाक संस्करण 3 मई 2025 ■ मूल्य 1.00 रु.

E-mail:
tarunpressraipur@gmail.com
tarun_press@yahoo.co.in
Web:
www.tarunchhattisgarh.in
facebook.TarunChhattisgarh
Twitter - Tchhattisgarh36
Instagram -tarunchhattisgarh.raipur
phone: 0771-2543112

संक्षेप

धनबाद में पकड़ा गया आतंकी

रांची,2 मई। एटीएस ने प्रतिबंधित आतंकी संगठन हिज्ब-उत-तहरीर के संदिग्ध सदस्य अम्मार याशर को धनबाद से गिरफ्तार किया है. उसकी गिरफ्तारी भूली ओपी के शमशेर नगर क्षेत्र से हुई, जहां से कई संदिग्ध दस्तावेज भी बरामद किए गए. अम्मार याशर को अदालत में पेश किया गया, जिसके बाद उसे जेल भेज दिया गया. पूछताछ के दौरान, उसने एटीएस के सामने कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ साझा की हैं, जो हिज्ब-उत-तहरीर के नेटवर्क को समझने में मदद कर सकती हैं. एटीएस ने जानकारी दी है कि अम्मार का संबंध पहले प्रतिबंधित संगठन इंडियन मुजाहिदीन से था. उसे 2014 में जोधपुर पुलिस ने गिरफ्तार किया था और उसने 10 साल जेल में बिताए. मई 2024 में उसे जमानत पर रिहा किया गया. रिहाई के बाद, अम्मार याशर ने हिज्ब-उल-तहरीर (एचयूटी) के सदस्यों से फिर से संपर्क किया, जिन्हें हाल ही में एटीएस ने गिरफ्तार किया था. एटीएस द्वारा हाल में पकड़े गए एचयूटी के सदस्य अयान जावेद से पूछताछ के दौरान अम्मार की फिर से संलिप्तता का पता चला. एटीएस अधिकारियों के अनुसार, जावेद ने अम्मार के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की, जिसके परिणामस्वरूप उसके पास से संदिग्ध दस्तावेज बरामद किए गए, जो उसे इस प्रतिबंधित समूह से जोड़ते हैं.

कार ने बाइक को मारी टक्कर, एक ही परिवार के 3 की मौत

सरगुजा,2 मई। छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले में तेज रफ्तार का कहर नहीं थम रहा है। सीतापुर-अंबिकापुर मुख्य मार्ग पर दर्दनाक हादसा हुआ है। तेज रफ्तार कार ने बाइक सवार युवकों को जोरदार टक्कर मार दी। भीषण हादसे में तीन लोगों की मौत हो गई। सभी मृतक एक ही परिवार के सदस्य हैं। पुलिस मामले में आगे की कार्रवाई में जुट गई है। हादसा सीतापुर थाना क्षेत्र का है। दरअसल तीन महीने के मासूम की तबियत बिगड़ने से माता-पिता परेशान थे। वे मासूम बच्चे का इलाज कराने के लिए ग्राम दमगड़ा से निकले थे। इसी बीच सीतापुर-अंबिकापुर में बिशुनपुर के पास तेज रफ्तार कार ने बाइक सवारों को जोरदार ठोकर मार दी। हादसे में मासूम समेत तीन लोगों की मौत हो गई। बाइक को ठोकर मारते हुए कार सड़क किनारे बाउंड्री वॉल से जा टकराई कार। इस हादसे में चालक को भी चोटें आई है।पुलिस ने मामले में कार्रवाई करते हुए कार चालक को गिरफ्तार कर लिया है। मामले में आगे की कार्रवाई में पुलिस जुट गई है।

अमेरिका खुलकर भारत के साथ आया

नई दिल्ली,2 मई। भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव का कारण पहलगाम में हुआ आतंकी हमला है, जो किसी से छिपा नहीं है. पाकिस्तान लगातार सीजफायर का उल्लंघन कर भारत को provocate कर रहा है. इस स्थिति के बीच, भारत ने अमेरिका के साथ एक महत्वपूर्ण सैन्य समझौता किया है, जिसमें समुद्री निगरानी तकनीक और उपकरणों की बिक्री शामिल है. यह सौदा इंडो-पैसिफिक मैरीटाइम डोमेन अवेयरनेस कार्यक्रम के तहत हुआ है, जिसका मुख्य उद्देश्य भारत की समुद्री सीमाओं की सुरक्षा और निगरानी को सुदृढ़ करना है. यह सौदा 13 करोड़ डॉलर का है. भारत ने अमेरिका से Sea Vision सॉफ्टवेयर, तकनीकी सहायता क्षेत्र टीम प्रशिक्षण, रिमोट सॉफ्टवेयर और विश्लेषणात्मक समर्थन, साथ ही अन्य उपकरणों की खरीद के लिए अनुरोध किया था. Sea Vision सॉफ्टवेयर एक वेब-आधारित समाधान है, जो समुद्री गतिविधियों की निगरानी के लिए विकसित किया गया है. यह सॉफ्टवेयर भारत की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार कुछ विशेष सुधारों के साथ आता है. इसके माध्यम से समुद्री सीमाओं में जहाजों की गतिविधियों, अवैध कार्यों और पर्यावरणीय खतरों पर प्रभावी निगरानी की जा सकती है. अमेरिकी विशेषज्ञों की एक टीम तकनीकी सहायता और प्रशिक्षण के तहत भारत में प्रशिक्षण प्रदान करेगी, जिससे भारतीय नौसेना और अन्य बल इस तकनीक का कुशलता से उपयोग कर सकें.

भारत के खौफ से पाकिस्तान में इमरजेंसी जैसे हालात

पर्यटकों की एंट्री पर बैन और मदरसे हुए खाली, पेशावर-एबटाबाद समेत 29 जिलों में लग रहा एयर सायरन

करांची,2 मई। जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के आज 9 दिन बीत चुके हैं। समय बीतने के साथ ही भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव चरम पर पहुंच गया है। भारत ने सेना को खुली छूट दे दी है। इससे पाकिस्तान में भारत के हमले में खौफ नजर आने लगा है। भारत के हमले के खौफ से पाकिस्तान और पीओके में इमरजेंसी जैसे हालात हो गए हैं। पीओके में पर्यटकों की एंट्री बैन कर दी गई है। वहीं मदरसों को खाली कर दिया गया है। जबकि पेशावर-एबटाबाद समेत 29 जिलों में पाकिस्तान एयर सायरन लगवा रहा है। ये जंग के दौरान बजते हैं। पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में भारत के संभावित हमले की आशंका के बीच हडकंप मचा हुआ है। पीओके के प्रधानमंत्री चौधरी अनवारुल हक ने घोषणा की कि यदि स्थिति बिगड़ती है तो क्षेत्र में आपातकाल लागू करने पर विचार किया जा सकता है। पीओके के नीलम घाटी और नियंत्रण रेखा (एलओसी) के निकटवर्ती

संवेदनशील इलाकों में पर्यटकों के प्रवेश पर रोक लगा दी गई है। वहीं, धार्मिक मदरसों को 10 दिन के लिए बंद करने का आदेश दिया गया है। क्षय सरकार ने दावा किया है कि भारत की आक्रामकता की स्थिति में भोजन, दवाओं और अन्य जरूरी चीजों की आपूर्ति सुनिश्चित करने की पूरी तैयारी कर ली गई है। आपातकालीन फंड में एक अरब रुपये ट्रांसफर कर दिए गए हैं। साथ ही, होटल, गेस्टहाउस और शादी हॉल के मालिकों ने अपनी संपत्तियां सेना को देने की पेशकश की है। खुफिया जानकारी के आधार पर धार्मिक मदरसों को 10 दिनों के लिए बंद करने का फैसला किया, क्योंकि आशंका है कि भारत इन संस्थानों को आतंकी प्रशिक्षण केंद्र बताकर निशाना बना सकता है। कानून मंत्री मियां अब्दुल वाहिद ने कहा, हम एक ऐसे चालाक, क्रूर और षड्यंत्रकारी दुश्मन से निपट रहे हैं, जिसके किसी भी नीच हरकत से इंकार नहीं किया जा सकता।

PTI

केदारनाथ धाम के कपाट खुले

नैनीताल,2 मई। भगवान शिव के पावन धाम केदारनाथ के कपाट आज प्रातः 7 बजे श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए गए। वैदिक मंत्रोच्चार, ढोल-नगाड़ों की ध्वनि और भक्तों के 'हर-हर महादेव' के जयकारों के बीच मंदिर परिसर पूरी तरह भक्ति में डूबा नजर आया। इस शुभ अवसर पर उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी अपनी पत्नी गीता धामी के साथ मंदिर में उपस्थित रहे और बाबा केदार की विधिवत पूजा-अर्चना की। कपाट खुलने के साथ ही केदारनाथ धाम में श्रद्धालुओं का जनसैलाब उमड़ पड़ा। मंदिर को विशेष रूप से 108 क्विंटल फूलों से सजाया गया था, जिनमें देश-विदेश के 45 प्रजातियों के फूल शामिल थे। इस सजावट में पश्चिम बंगाल से आए 50 कुशल कारीगरों ने योगदान दिया। कपाट खुलते ही श्रद्धालुओं के स्वागत में हेलीकॉप्टर से पुष्पवर्षा की गई, जिससे पूरे वातावरण में उत्सव का उल्लास और गहराया। बाबा केदार की पंचमुखी डोली यात्रा 27 अप्रैल को ऊखीमठ स्थित ओंकारेश्वर मंदिर से प्रारंभ हुई थी, जो विभिन्न धार्मिक पड़ावों से होती हुई 1 मई को केदारनाथ पहुँची। यात्रा के स्वागत और कपाटोत्सव के लिए मंदिर परिसर में विशेष तैयारियाँ की गईं—जिसमें साफ-सफाई, दर्शन व्यवस्था, सुरक्षा प्रबंधन और पुजारियों के आवास की समुचित व्यवस्था शामिल रही। कपाट खुलने के पहले दिन ही करीब 15,000 श्रद्धालु बाबा केदार के दर्शन को पहुँचे। सुबह 10.15 बजे तक 10,000 से अधिक श्रद्धालु दर्शन कर चुके थे। प्रशासन ने भीड़ नियंत्रण हेतु टोकन सिस्टम लागू किया है, जिसके तहत हर घंटे 1,400 श्रद्धालुओं को दर्शन की अनुमति दी जा रही है। संगम स्थल पर बने 10 टोकन काउंटरों से टोकन वितरित किए जा रहे हैं, जिससे कतारों में लगने वाली भीड़ कम की जा सके। इस बार गौरीकुंड में अपेक्षाकृत कम भीड़ देखी गई। मुख्यमंत्री धामी ने कहा, चारधाम यात्रा अक्षय तृतीया से शुरू हो चुकी है। हमारा प्रयास है कि यह यात्रा सभी श्रद्धालुओं के लिए सुरक्षित, सुगम और सुविधाजनक हो।÷ उन्होंने कपाट खुलने के उपलक्ष्य में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी भाग लिया और श्रद्धालुओं से संवाद किया। मुख्यमंत्री ने यह भी बताया कि 4 मई को बद्रीनाथ धाम के कपाट भी श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए जाएंगे।

नाबालिग से दुष्कर्म का मामला , सड़कों पर उतरे लोग, किया बंद का आह्वान

देहरादून ,2 मई । उत्तराखंड के नैनीताल में नाबालिग लड़की से दुष्कर्म का मामला प्रकाश में आने के दूसरे दिन भी माहौल तनावपूर्ण है। इस घटना के विरोध में लोगों ने रोष जाहिर करते हुए बंद का ऐलान किया है। इस वजह से सभी दुकानें, रेस्टोरेंट, होटल और ढाबे बंद हैं। दूर-दूर तक लोगों का आवागमन देखने को नहीं मिल रहा है। सड़कें वीरान पड़ी हैं।लोगों ने आह्वान किया कि हमें इस घटना के विरोध में एकजुट होकर प्रदर्शन किया और आरोपी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की। इस घटना के विरोध में पथराव की घटना भी सामने आई है।

'आखिर किस बेअकल जज ने आरोपी को बरी किया'

सुप्रीम कोर्ट ने 32 साल बाद रेप के आरोपी को सुनाई सजा

नई दिल्ली,2 मई। भगवान के घर में देर है, अंधेर नहीं, यह कहावत देश के कानून के संदर्भ में भी सही साबित हुई है. 10 साल की नाबालिग के साथ दुष्कर्म के आरोपी को 32 साल बाद सुप्रीम कोर्ट ने 10 साल की सजा सुनाई है. इससे पहले, गुजरात के ट्रायल कोर्ट ने आरोपी को बरी कर दिया था, लेकिन लगभग 30 साल बाद पिछले वर्ष गुजरात हाई कोर्ट ने उस फैसले को रद्द कर दिया. अब सुप्रीम कोर्ट ने हाई कोर्ट के निर्णय को भी बरकरार रखा है.इस मामले में 54 वर्षीय व्यक्ति को सजा सुनाई गई है, जबकि घटना के समय आरोपी की उम्र 21 वर्ष थी. सुप्रीम कोर्ट ने कहा, मैं जानना चाहता हूं कि आखिर किस बेअकल जज ने फॉरेंसिक साइंस लैब की रिपोर्ट रिपोर्ट के बावजूद आरोपी को बरी किया, जबकि डॉक्टरों और पीड़िता के बयान को नजरअंदाज किया गया. एक साल बाद, अक्टूबर 1991 में अहमदाबाद ग्रामीण के अडिशनल सेशन जज ने आरोपी को बरी कर दिया था, जबकि उस पर आरोप था कि उसने खेत में पीड़िता के साथ बलात्कार किया. घटना के बाद पीड़िता को अस्पताल ले जाया गया, और सरपंच की सहायता से आरोपी के खिलाफएफआईआर दर्ज की गई. मेडिकल जांच में भी बलात्कार की पुष्टि हुई थी. ट्रायल कोर्ट ने परिस्थितियों का सही आकलन किए बिना एफआईआर में हुई देरी को आधार बनाते हुए आरोपी को रिहा कर दिया. कोर्ट

ने यह कहा कि एफआईआर दर्ज करने में 48 घंटे की देरी हुई है. इसके बाद राज्य सरकार ने हाई कोर्ट में याचिका दायर की, जो 30 वर्षों तक लंबित रही. अंततः 14 नवंबर 2024 को जस्टिस अनिरुद्ध पी मायी और दिव्येश ए जोशी ने ट्रायल कोर्ट के निर्णय को रद्द कर दिया. इसके परिणामस्वरूप आरोपी को आईपीसी की धारा 376 और 506 के तहत 10 साल की कैद और 10,000 रुपये का जुर्माना लगाया गया. हाई कोर्ट ने स्पष्ट किया था कि यदि किसी अपराधी को इस तरह से मुक्त किया गया, तो इसका समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा. यह भी महत्वपूर्ण है कि जिस लड़की के साथ दुष्कर्म हुआ, उसकी उम्र केवल 10 वर्ष थी. सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस सूर्यकांत और एन कोटिश्वर सिंह ने हाई कोर्ट के इस निर्णय का समर्थन किया है. सुप्रीम कोर्ट ने आरोपी को एक सप्ताह के भीतर आत्मसमर्पण करने का निर्देश दिया है.

सुप्रीम कोर्ट ने कंपनी को लगाई फटकार; तुरंत सुनवाई से इंकार

नई दिल्ली,2 मई। सुप्रीम कोर्ट ने गुजरात की एक रीयल एस्टेट और प्राइवेट रिजोर्ट मैनेजमेंट कंपनी को झटका देते हुए महत्वपूर्ण टिप्पणी की है. कोर्ट ने अर्जेंट सुनवाई की याचिका को खारिज करते हुए सवाल उठाया कि क्या सुप्रीम कोर्ट अब केवल अमीरों के लिए ही रह गया है. जस्टिस दीपांकर दत्ता और मनमोहन ने इस मामले को अगस्त 2025 के लिए सूचीबद्ध किया है. वाइल्डवूड्स रिजोर्ट ऐंड रियल्टीज की ओर से पेश हुए सीनियर वकील मुकुल रोहतगी से कोर्ट ने पूछा कि क्या इस मामले की सुनवाई में कोई तात्कालिकता है. बेंच ने स्पष्ट किया कि गुजरात हाई कोर्ट ने दिसंबर 2024 में इस मामले का निर्णय सुना दिया था, जबकि कंपनी ने पिछले महीने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है. इसके बावजूद, वह तात्कालिक सुनवाई की मांग कर रही है. जस्टिस दत्ता ने सवाल उठाया कि आपने सीजेआई के सामने जिस तात्कालिकता का उल्लेख किया था, वह क्या थी? उन्होंने बताया कि हाई कोर्ट का फैसला 11 दिसंबर को आया था और आपने अप्रैल में एसएलपी दायर की. याचिका में यह भी स्पष्ट नहीं किया गया कि सुनवाई की इतनी जल्दी क्यों है, जिससे यह आभास होता है कि जैसे सुप्रीम कोर्ट केवल अमीरों के लिए ही उपलब्ध है. आखिर इतनी जल्दी की आवश्यकता क्यों है? आपका मामला तो जनवरी 2026 में सूचीबद्ध होना चाहिए.

पीएम मोदी के मंच पर शशि थरूर,कांग्रेस में हलचल

प्रधानमंत्री ने तिरुवनंतपुरम में बहुउद्देशीय बंदरगाह का उद्घाटन किया

त्रिवेंद्रम,2 मई। पीएम नरेंद्र मोदी आज केरल दौरे पर हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने तिरुवनंतपुरम में 8,900 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित विशिंजम अंतरराष्ट्रीय गहरे पानी वाले बहुउद्देशीय बंदरगाह का उद्घाटन किया। हालांकि इस उद्घाटन से ज्यादा चर्चा का विषय पीएम के मंच पर कांग्रेस सांसद शशि थरूर का दिखना रहा। ये तस्वीर जैसे ही मीडिया में सामने आई कांग्रेस में हलचल मच गई।

इस दौरान मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने भी पीएम मोदी के साथ मंच साजा किया। दरअसल प्रधानमंत्री केरल तो 8,900 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित विशिंजम अंतरराष्ट्रीय गहरे पानी वाले बहुउद्देशीय बंदरगाह का उद्घाटन करने केरल पहुंचे थे। हालांकि इस दौरान उन्होंने केरल विधानसभा चुनाव के प्रचार का आगाज भी किया। पीएम मोदी ने इशारों ही इशारों में कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा कि मंच पर शशि थरूर भी बैठे हैं, आज का ये इवेंट कई लोगों के नींद उड़ा देगा। जहां पहुंचनी चाहिए ये बात पहुंच भी गई होगी। वहीं, पीएम मोदी ने कहा कि गुलामी से पहले हमारे भारत ने हजारों वर्ष की समृद्धि देखी है। एक समय ग्रोबल जीडीपी में मेजर शेयर भारत का हुआ करता था। उस दौर में हमें जो चीज दूसरे देशों से अलग बनाती थी, वो थी समुद्री क्षमता, हमारी पोर्ट सिटी की आर्थिक गतिविधि। केरल का इसमें बड़ा योगदान था. भारत सरकार ने राज्य सरकार के सहयोग से सागरमाला परियोजना के तहत पोर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर को अपग्रेड किया है। पोर्ट कनेक्टिविटी को भी बढ़ाया है। पीएम-गतिशक्ति के तहत वाटरवेज, रेलवेज, हाइवेज और एयरवेज की इंटर कनेक्टिविटी को तेज गति से बेहतर बनाया जा रहा है।

जीएसटी संग्रह में छत्तीसगढ़ देश में अव्वल

रायपुर,2 मई। अप्रैल 2025 में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) संग्रहण में छत्तीसगढ़ ने उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। छत्तीसगढ़ ने 4,135 करोड़ का जीएसटी संग्रहण कर देश के

शीर्ष 15 राज्यों की सूची में अपनी जगह बनाई है। जीएसटी संग्रहण के मामले में छत्तीसगढ़ ने केरल, पंजाब, बिहार और खनिज संसाधनों से भरपूर झारखंड जैसे राज्यों को भी पीछे छोड़ दिया है। राज्य में इस आर्थिक प्रगति को लेकर विशेषज्ञों का मानना है कि यह उपलब्धि छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा व्यापार और उद्योग क्षेत्र में किए गए सशक्त सुधारों का प्रतिफल है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में बीते 15 महीनों में राज्य सरकार ने ऐसे कई निर्णय लिए हैं, जिनसे निवेश और व्यापार को बढ़ावा मिला है। सरकार द्वारा किए गए प्रमुख सुधारों में उद्योग एवं व्यापार नियमों का सरलीकरण, गैर-जरूरी और बाधक कानूनों की समाप्ति,सभी जरूरी सेवाओं की ऑनलाइन उपलब्धता,पेट्रोल पंप खोलने के लिए लाइसेंस की बाध्यता को समाप्त करना और उद्योगों की स्थापना के लिए प्रक्रिया को सरल बनाना शामिल है। इन सभी पहल से राज्य में उद्योग और व्यापारिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिला है, जिससे राज्य की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली है और राजस्व संग्रह में निरंतर वृद्धि हो रही है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा है कि छत्तीसगढ़ को आत्मनिर्भर और समृद्ध राज्य बनाना हमारा लक्ष्य है। राज्य की आर्थिक स्थिति में यह वृद्धि जनता और उद्योग जगत के सहयोग से संभव हुई है। यह प्रदर्शन छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था के लिए सकारात्मक संकेत है और यह दिखाता है कि राज्य संसाधन आधारित अर्थव्यवस्था से आगे बढ़कर अब एक सशक्त औद्योगिक केंद्र के रूप में उभर रहा है।

साइबर पुलिस ने पंकजा मुंडे को अश्लील कॉल करने वाले को किया गिरफ्तार

मुंबई ,2 मई । महाराष्ट्र साइबर पुलिस ने भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) की वरिष्ठ नेता और महाराष्ट्र सरकार में मंत्री पंकजा मुंडे को कथित तौर पर अश्लील कॉल करने और अभद्र मैसेज भेजने के आरोप में पुणे के भोसरी से एक 25 वर्षीय व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान अमोल काले के रूप में हुई है, पिछले कुछ दिनों से पंकजा मुंडे को फोन कॉल और मैसेज के जरिए परेशान कर रहा था। इस घटना ने साइबर अपराध और महिलाओं की सुरक्षा को लेकर एक बार फिर गंभीर सवाल खड़े किए हैं।

तांदुला डेम में मछली पकड़ने गया मछुआरा लापता

बालोद,2 मई। तांदुला डेम में मछली पकड़ने गया मछुआरा तेज आंधी-तूफान के बीच लापता हो गया। घटना शुक्रवार शाम की है, जब 48 वर्षीय सोमन निषाद मछली पकड़ते वक्त अचानक गायब हो गया। किनारे पर उसकी नाव और जाल लावारिस मिले, जिससे डेम में हादसे की आशंका गहरा गई है। लापता सोमन निषाद बोरिद गांव का निवासी बताया जा रहा है। जानकारी के मुताबिक, सोमन रोज की तरह मछली पकड़ने डेम में गया था, लेकिन तेज हवाओं और मौसम की खराबी के बाद वह लौटकर नहीं आया। जबकि अन्य मछुवारे वापस घर आ गए। स्थानीय ग्रामीणों को जब उसकी नाव और मछली पकड़ने का जाल किनारे पर लावारिस हालत में मिले, तो उन्होंने तुरंत पुलिस को सूचना दी। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस और गोताखोरों की संयुक्त टीम को तैनात किया गया है। डेम में खोजबीन

जारी है, लेकिन अब तक मछुआरे का कोई पता नहीं चला है। बताया जा रहा है कि नाव (डोंगा) डूबी थी। इस घटना ने क्षेत्र में हड़कंप मच गया है। बता दें कि प्रदेश के अन्य इलाकों के साथ-साथ शाम को बालोद में भी मौसम का मिजाज बदला। जिले के कई इलाकों में बारिश हुई और तेज आंधी-तूफान के कारण कहीं पेड़ गिरे तो कहीं टिन शेड उड़ गए। बिजली खंबों को भी नुकसान पहुंचा। डेम में मछली पकड़ने गया मछुआरा, आंधी-तूफान की चपेट में आकर पानी में डूबने की आशंका जताई जा रही है।

अपोलो अस्पताल के फर्जी डॉक्टर को एमपी से लेकर छग पहुंची पुलिस

बिलासपुर,2 मई। अपोलो अस्पताल में फर्जी तरीके से डॉक्टर बनकर काम कर रहे डॉक्टर नरेंद्र जॉन केम को बिलासपुर पुलिस गिरफ्तार कर बिलासपुर पहुंच गई है. पूर्व विधानसभा अध्यक्ष स्व. राजेंद्र शुक्ल सहित अन्य मरीजों की इलाज के दौरान मौत के मामले में उसे कोर्ट में पेश किया जाएगा. इसके अलावा फर्जी डॉ. को अपोलो अस्पताल ले जाया जाएगा और मृतकों के परिजनों से पहचान परेड कराई जाएगी. एसएसपी रजनेश सिंह ने डॉक्टर नरेंद्र जॉन की गिरफ्तारी की पुष्टि की है. बता दें, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष स्व. राजेंद्र शुक्ल की इलाज के दौरान मौत के बाद परिजनों ने सरकंडा थाना में आरोपी डॉ. नरेंद्र के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई थी. इसके बाद एक व्यापारी ने भी आरोपी डॉ. के खिलाफ आरोप लगाया था कि उसके पिता को पेट दर्द के इलाज के लिए अपोलो अस्पताल में भर्ती कराया गया था, लेकिन डॉ. नरेंद्र ने उसके पिता के दिल का ऑपरेशन कर दिया, जिससे उनकी मौत हो गई. मामले की जांच में

पुलिस ने पाया कि आरोपी डॉ. की योग्यता और नियुक्ति प्रक्रिया में भारी गड़बड़ी रही है. गौरतलब है कि दमोह के मिशनरी अस्पताल में नरेंद्र विक्रमादित्य यादव ने डॉ. नरेंद्र जॉन कैम के नाम से फर्जी दस्तावेजों के आधार पर नौकरी हासिल की थी. उसने जनवरी-फरवरी 2025 में 15 से ज्यादा हार्ट सर्जरी की, जिनमें से 8 मरीजों की मौत हो चुकी है. जिन मरीजों का ऑपरेशन किया था, उनमें से तीन की मौत एंजियोप्लास्टी के समय हुई थी. जांच में पता चला कि डॉ. नरेंद्र जॉन कैम के डिग्री और अनुभव पूरी तरह से फर्जी थे. दमोह में फर्जी डॉक्टर का खुलासा होने के बाद बिलासपुर में भी हलचल हुई. अपोलो अस्पताल में 2006 में इलाज के दौरान पूर्व विधानसभा अध्यक्ष पं. राजेन्द्र शुक्ल की मौत के पीछे उनके बेटे ने प्रदीप शुक्ल ने फर्जी डॉक्टर को जिम्मेदार बताते हुए पुलिस में शिकायत की थी. इस पर फर्जी डॉ. नरेंद्र विक्रमादित्य यादव उर्फ नरेंद्र जान केम के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 420 (धोखाधड़ी), 466 (दस्तावेजों में कूटरचना), 468 (धोखाधड़ी के इरादे से जालसाजी), 471 (जाली दस्तावेजों का उपयोग), 304 (गैर इरादतन हत्या) और 34 (सामूहिक अपराध) के तहत मामला दर्ज किया गया है. इस मामले में अपोलो प्रबंधन को भी आरोपी बनाया गया है. आरोप है कि बिना दस्तावेज सत्यापन के अस्पताल प्रबंधन ने फर्जी डॉक्टर को भर्ती कर इलाज का मौका दिया, जिससे गंभीर लापरवाही हुई और मरीज की जान चली गई. पुलिस मामले में प्रबंधन की भूमिका की भी जांच कर रही है.

जांच में पाई गई फर्जी डिग्रियां- पुलिस जांच में पाया गया कि नरेंद्र का असली नाम नरेंद्र विक्रमादित्य यादव है. वह देहरादून का रहने वाला है. दस्तावेजों में नाम नरेंद्र जॉन केम लिखा है. उसके पास 2006 में एमबीबीएस की डिग्री है, जो आंध्र प्रदेश मेडिकल कॉलेज की बताई गई है.

गंगा एक्सप्रेस-वे पर वायुसेना ने दिखाई अपनी ताकत, बढ़ी पाकिस्तान की धड़कन

नई दिल्ली,2 मई। भारतीय वायुसेना की ताकत शुक्रवार को एक बार फिर देखने को मिली, जब राफेल, मिग-29, मिराज 2000 जैसे लड़ाकू विमानों ने उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर में गंगा एक्सप्रेसवे पर बनी भारत की पहली नाइट लैंडिंग स्ट्रिप पर उतरने और उड़ान भरने का अभ्यास किया। 3.5 किलोमीटर लंबी यह हवाई पट्टी वायुसेना के विमानों की दिन और रात दोनों समय लैंडिंग के लिए सक्षम है, जिससे चौबीसों घंटे सैन्य अभियान चलाने और आपात स्थिति के दौरान वैकल्पिक रनवे के रूप में एक्सप्रेसवे की व्यवहार्यता का आकलन करने में मदद मिलेगी। यह अभ्यास युद्ध या राष्ट्रीय आपातकाल के समय वैकल्पिक रनवे के रूप में एक्सप्रेसवे की क्षमता का आकलन करने के लिए आयोजित किया जा रहा है। इसके साथ ही यूपी में एक्सप्रेसवे पर कुल चार लैंडिंग स्ट्रिप हो जाएंगी, लेकिन यह पहली ऐसी स्ट्रिप होगी जिसमें रात के समय लैंडिंग की सुविधा होगी। टेकऑफ़ और लैंडिंग अभ्यास ऐसे महत्वपूर्ण समय पर हो रहा है जब 22 अप्रैल को पहलगाम हमले के बाद भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव चरम पर है, जब पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादियों ने 26 निर्दोष लोगों की निर्मम हत्या कर दी थी। यह आधुनिक हवाई पट्टी भारत की पहली ऐसी हवाई पट्टी है जो चौबीसों घंटे सैन्य अभियानों के लिए प्रावधान के साथ एक्सप्रेसवे पर बनाई गई है। सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए रनवे के दोनों ओर 250 सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे। उत्तर प्रदेश सरकार हवाई पट्टी के पास एक्सप्रेसवे के साथ एक औद्योगिक केंद्र विकसित करने की भी योजना बना रही है.

सबसे बड़ा धर्म है माता-पिता की सेवा, परिवार के जीवित देवता हैं वे:अग्रवाल

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

भिलाई। छत्तीसगढ़ प्रांतीय अग्रवाल संगठन के नवीन सत्र की द्वितीय कार्यकारिणी बैठक अग्रवाल सेवा समिति न्यू खुर्सीपार के आतिथ्य में संपन्न हुई । बैठक का शुभारंभ भगवान अग्रसेन की पूजा अर्चना कर दीप प्रज्वलित कर किया गया । अध्यक्षता प्रांतीय अध्यक्ष डॉ. अशोक अग्रवाल ने की । स्वागत उद्बोधन में डॉ. अग्रवाल ने कहा कि माता-पिता परिवार के जीवित देवी-देवता हैं, जब जीने से वे निराश हों जाएं तो समझो कि देवता आपसे रूठ गए, अब घर से खुशियों के जाने का समय आ गया है। डॉ अग्रवाल ने समाज के युवावों से आह्वान किया कि वे समाज सेवा के साथ-साथ माता-पिता की सेवा को अपना परम धर्म समझें। प्रांतीय महामंत्री संजय अग्रवाल ने कार्यकारिणी सभा का संचालन करते हुए, पिछली बैठक की कार्यवाही की सभासदों से पुष्टि कराई । छत्तीसगढ़ प्रांतीय अग्रवाल संगठन के प्रांतीय उपाध्यक्ष अशोक लोहिया एवं प्रांतीय प्रचार प्रभारी लक्ष्मण लोहिया द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति अनुसार प्रांतीय सदस्यों को रायपुर एवं छत्तीसगढ़ के अनेक अस्पतालों में छूट का लाभ प्राप्त हो रहा है । मंगल परिणय आयोग की संयोजिका शोभा केडिया ने आयोग के संदर्भ में हुई गतिविधियों की जानकारी देते हुए बताया कि अभी तक 716 सामान्य बच्चों एवं 150 विधवा - विधुर व्यक्तियों के विवाह संबंध इस ग्रुप के माध्यम से संपन्न हुए हैं । समाज द्वारा निःशुल्क 11 मंगल परिणय ग्रुप का संचालन किया जाता है । अग्र अलंकरण आयोग की संयोजिका डॉ अनिता अग्रवाल ने आयोग के संदर्भ में विस्तृत रूपरेखा से अवगत कराते हुए आगामी जून - जुलाई माह में अग्र अलंकरण समारोह आयोजित करने की जानकारी दी । गौ सेवा , पशु पक्षी सेवा एवं पर्यावरण संरक्षण आयोग के गोपाल सुल्तानिया एवं श्रीमती गूंजा सुल्तानिया ने गौ धन की सेवा को पुण्य का कार्य बताते हुए कहा कि गौ सेवा आज की बहुत बड़ी आवश्यकता है । उन्होंने बताया कि पशु पक्षीओ को जल एवं दाना देने का अभियान हाथ में लिया गया है । इसके लिए छत्तीसगढ़ प्रांतीय अग्रवाल संगठन के द्वारा बर्ड फीडर बनाया गया है जो मामूली शुल्क में उपलब्ध है , इसे कोई भी व्यक्ति अपने घर के बालकनी इत्यादि में लगा सकता है । उन्होंने प्रकृति की सुरक्षा के लिए पशु पक्षी की सुरक्षा की बात कही । अग्र पंचायत समिति के संदर्भ में राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष सियाराम अग्रवाल ने कहा कि आपसी पारिवारिक विवाद, वैवाहिक विवाद , घरेलू समस्याएं न्यायालयों से नहीं सुलझाई जा सकती है । पहले समय में समाज के मुखिया इस प्रकार के विवादों को दोनों पक्षों को आपस में बैठाकर हल निकाला करते थे । न्यायालय के फैसले से एक पक्ष खुश होता था वहीं दूसरा पक्ष दुखी होता था । पंचायत के माध्यम से सुलझाए गए मामले में दोनों पक्ष खुश होते है । प्रांतीय अध्यक्ष डॉ अशोक अग्रवाल ने 21 सदस्यीय प्रांत स्तरीय अग्र पंचायत समिति की घोषणा की । संस्था के चेयरमेन अशोक मोदी कोरबा, प्रांतीय कार्यकारी अध्यक्ष राजेंद्र अग्रवाल राजू बिलासपुर ने बताया कि, सदस्यता अभियान आयोग के संयोजक सुरेश मंगल एवं विनोद अग्रवाल ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की । इसके पश्चात कन्या विवाह योजना की विस्तृत जानकारी संयोजक दीनदयाल अग्रवाल एवं श्रीमती शोभा केडिया ने देते हुए बताया कि फुलेरा दूज को रायपुर में सनातन धर्म को मानने वाले 51 जोड़ो का

निःशुल्क सामूहिक विवाह संपन्न किया गया । सभी जोड़ो को अलग अलग लगभग 70 हजार रुपए की घरेलू उपयोग में आने वाली सामग्री एवं बिदाई में नगद राशि दी गई । इस आयोजन से प्रभावित होकर बसना सरायपाली क्षेत्र समाज द्वारा 21 जोड़ो का सामूहिक विवाह संपन्न कराया गया । यहां भी सभी जोड़ो को घरेलू सामग्री भेंट की गई । वरिष्ठ नागरिको की चौपाल के संयोजक विष्णु गोयल , श्रीमती अनीता अशोक अग्रवाल एवं हरीश अग्रवाल ने जानकारी दी कि 60 वर्ष से अधिक के व्यक्तियों के लिए माह में एक बार सामाजिक भवन में चौपाल कार्यक्रम के तहत खेल , गीत - संगीत , नृत्य , हाऊजी , जलपान इत्यादि की व्यवस्था रखी जाए । श्रीमती अनीता अशोक अग्रवाल ने बताया कि अभी अशोका रत्न सोसायटी में यह कार्यक्रम आयोजित हो रहा है , जिसमें आए हुए बुजुर्ग खुश होकर अपने घर जाते है । पूरे प्रदेश में ऐसे अभियान प्रारंभ किए जाने की तैयारी है । लक्ष्मण लोहिया को प्रदेश के अग्रवाल पत्रकारों को एकत्रित करने की जवाबदारी देते हुए उन्हें पत्रकार बंधुओ का एक बृहद सम्मेलन बुलाने जवाबदारी दी गई। अशोक लोहिया को पूर्व में संगठन द्वारा अग्र विभूति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था आज उन्हें पुनः मंच से अग्र रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।अधिवक्ता राजेंद्र अग्रवाल ने आरोग्यम हेतु किचन, क्यारी, बाड़ी से रोग मुक्ति के उपाय की जानकारी साझा की । विहंगम योग साधना के संदर्भ में उमेश अग्रवाल ने रूपरेखा प्रस्तुत की । महिला संगठन की अध्यक्ष गंगा अग्रवाल, चेयरमेंन हेमलता मित्तल दुर्ग, प्रांतीय महिला महामंत्री निधि अग्रवाल ने पहली बैठक के पश्चात अभी तक हुए, अपनी सभी जिला इकाइयों के माध्यम से हुए कार्यक्रमों की जानकारी दी । वेबसाइट आयोग के संयोजक ललित अग्रवाल ने आयोग के संदर्भ में बताया कि स्वजातीय परिवारों के लिए अग्रवाल बिजनेस कम्युनिटी डेवलपमेंट (ए बी सी डी कनेक्ट) के तहत विभिन्न सुविधाओं का लाभ प्रदान करने की योजना है । प्रांतीय सदस्यों को फ्री क्रेडिट कार्ड , फ्री सर्विस चार्ज से पासपोर्ट उपलब्धता , प्रीमियम पेय जीएसटी मोबाइल एप की सुविधा तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों में कोर्स हेतु मार्गदर्शन एवं एडमिशन के लिए सहयोग प्रदान किया जाएगा । युवा संगठन के प्रांतीय अध्यक्ष आशीष सेक्सरिया ने युवाओं की सक्रियता की बात कहते हुए नए बनने वाले युवा सदस्यों को विभिन्न लाभ दिए जाने की घोषणा की । विदेश यात्रा के संयोजक राजेंद्र अग्रवाल राजू ने दीपावली के पश्चात वियतनाम यात्रा की विस्तृत रूपरेखा बताई । अग्रसेन माधवी ट्रस्ट के अध्यक्ष नेतराम अग्रवाल ने ट्रस्ट की भावी योजनाओं अस्पताल एवं विद्यालय के संदर्भ में सदन को अवगत कराया । प्रांतीय चेयरमैन अशोक मोदी ने विभिन्न आयोगों के विस्तार से कार्य सुगम होने की वकालत करते हुए कहा कि प्रांतीय आयोग अपने नीचे जिला स्तर पर समितियां गठित करे । रायपुर, दुर्ग , भिलाई, रायगढ़ एवं अंबिकापुर की जिला इकाइयों को उत्कृष्ट जिला इकाइयों के रूप में पुरस्कृत किया गया। सामूहिक कन्या विवाह में कार्य करने वाले उत्कृष्ट कार्य करने वाले दीनदयाल गोयल, श्रीमती शोभा केडिया, श्रीमती गुंजा सुल्तानिया, रमेश अग्रवाल को सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रम संयोजक का पुरस्कार दिया गया, कार्यक्रम में विशिष्ट योगदान देने वाली महिलाओं एवं अनेक साथियों को प्रतीक चिन्ह देकर पुरस्कृत किया गया। बैठक का संचालन प्रांतीय महामंत्री संजय अग्रवाल एवं प्रांतीय कार्यकारी अध्यक्ष राजेंद्र अग्रवाल राजू ने किया । इस अवसर पर मंच में राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष सियाराम अग्रवाल , संरक्षक महेंद्र सेक्सरिया, जयदेव सिंघल , नेतराम अग्रवाल , प्रांतीय अध्यक्ष डॉ अशोक अग्रवाल , चेयरमैन अशोक मोदी , कार्यकारी अध्यक्ष राजेंद्र अग्रवाल राजू , महिला संगठन की प्रांतीय अध्यक्ष गंगा अग्रवाल , चेयरमैन हेमलता मित्तल , फ्रंटियर उपाध्यक्ष मनोज अग्रवाल दुर्ग, प्रांतीय कोषाध्यक्ष पंकज अग्रवाल दुर्ग ,युवा संगठन के अध्यक्ष आशीष सेक्सरिया , अग्रवाल सेवा समिति न्यू खुर्सीपार के महासचिव रतनलाल अग्रवाल ,मंचस्थ रहे

कार्यकारिणी सभा में दुर्ग अग्रवाल सभा के अध्यक्ष गौरीशंकर अग्रवाल राजनांदगांव अग्रवाल सभा के अध्यक्ष शरद अग्रवाल रायपुर जिला अग्रवाल संगठन के अध्यक्ष हरिकेश पालीवाल, गोविंद अग्रवाल, प्रमुख सलाहकार राधेश्याम बांका, मनीष शाह,नंदकिशोर अग्रवाल, अजय खेतान डॉक्टर मोहनलाल अग्रवाल, डॉ अनीता मोहनलाल अग्रवाल, रायपुर के महिला जिला अध्यक्ष श्रीमती प्रियंका अग्रवाल, श्रीमती सारिका खेतान, श्रीमती संतोष दिनोदिया, भिलाई के महिला अध्यक्ष , सहित बसना सरायपाली क्षेत्र से जयनारायण अग्रवाल, मनोज अग्रवाल, मिट्ठू अग्रवाल, पिथौरा अग्रवाल सभा के अध्यक्ष अनूप अग्रवाल, शिरीष अग्रवाल उमाशंकर अग्रवाल मनीष अग्रवाल, संजय गर्ग दुर्ग, मनोज कनोडिया रायपुर अरुण अग्रवाल रायपुर, बिलासपुर से राजू सुल्तानिया, राजेंद्र अग्रवाल वकील, नित्यानंद अग्रवाल मनीष अग्रवाल द्वय, सारंगढ़ से महेंद्र अग्रवाल, थान खमरिया से आशीष अग्रवाल सहित लगभग ढाई सौ सदस्यों की इस कार्यकारिणी की बैठक में उपस्थिति रही। सचिव रतनलाल अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया। बैठक के अंत में पहलगांव में गत दिवस आतंकवादियों द्वारा 26 सैलानियों की निर्मम हत्या की घोर भर्त्सना करते हुए प्रांतीय अध्यक्ष डॉ अशोक अग्रवाल ने एक प्रस्ताव रखा, जिसमें दिवंगत व्यक्तियों को श्रद्धांजलि देते हुए प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रपति के नाम दिवंगत व्यक्तियों के परिवारों को केंद्र सरकार द्वारा एक करोड रुपए की आर्थिक सहायता प्रदान करने का एक प्रस्ताव भेजने की बात कही गई , जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया । दो मिनट का मौन रखकर दिव्य आत्माओं को श्रद्धांजलि दी गई ।

एक नजर

खुर्सीपार में संचालित अवैध खटालों को हटाने नोटिस जारी

भिलाईनगर,2 मई। नगर पालिक निगम भिलाई के जोन क्रं. 04 खुर्सीपार अंतर्गत औद्योगिक क्षेत्र में वार्ड 44 एवं 45 क्रं. अमर धरम काटा में अवैध खटाल संचालित करने वालो को नोटिस तामिल करवाया गया। उनके द्वारा भारी मात्रा में गोबर व गंदगी इक्ट्ठा कर नाली में बहाया जा रहा था। जिससे नाली जाम हो रहा था। पानी निकासी में समस्या आ रही थी। आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय को जब यह ज्ञात हुआ तब उन्होने स्वास्थ्य अधिकारी जावेद अली को निर्देशित किए कि मौके पर जाकर निरीक्षण करवायें । निरीक्षण में यह पाया गया कि खटाल संचालक द्वारा अपने खटाल का गोबर, मल मूत्र, गंदगी एवं सड़ा हुआ भूसा को सड़क पर फैलाया जा रहा है। जिससे आस-पास के रहवासियों को परेशानी एवं गंदगी का सामना करना पड़ रहा था। 19 खटालों को नोटिस जारी किया गया कि अवैध खटाल जगह से हटा लें। सभी खटालों को गोकुल नगर में व्यवस्थापित किया जाएगा। समय अवधि के अंदर जो लोग खटाल नहीं हटाएंगे उनके ऊपर नगर निगम अधिनियम के अंतर्गत कार्रवाई की जाएगी। प्राप्त अधिकारों के अनुसार रिहायसी क्षेत्र में सार्वजनिक सुरक्षा के अंतर्गत लोक न्यूसेंस फैलाने के कारण दण्ड प्रक्रिया की संहिता की धारा 133 के तहत अपराध दर्ज करने की कार्यवाही प्रस्तावित की जावेगी।

दो हमलावर गिरफ्तार

भिलाईनगर,2 मई। भिलाई बदमाश राहुल सिंह पर प्राण घातक हमला करने के मामले में पुलिस ने दो युवको को गिरफ्तार किया है। आरोपियों के खिलाफ पुलिस ने धारा 109 (1), 61 (2) बीएनएस के तहत जुर्म दजर्द किया है सुपेला टीआई राजेश मिश्रा ने बताया कि लक्ष्मी नगर सुपेला के पास साजिश के तहत रोहित तिवारी और राजा पिल्ले नामक युवकों ने राहुल को जान से मारने की नियत से बकरा काटने वाले चापड़ से प्राण घातक हमला कर फरार हो गए। गंभीर अवस्था में राहुल को अस्पताल में उपचार के लिए दाखिल कराया गया जिसकी हालत अभी भी गंभीर बनी हुई है। पुलिस की शिकायत पर आरोपी युवकों की तलाश में जुटी रही सुपेला थाने पुलिस ने शंकर चौक निवासी रोहित तिवारी एवं भीम नगर सूरज साहनी को गिरफ्तार किया गया है ।

गांजा तस्कर गिरफ्तार

भिलाई, 2 मई । भिलाई गांजा तस्करी करने वाले दो को पुलिस ने गिरफ्तार किया है आरोपियों के खिलाफ पुलिस ने एनडीपीएस के तहत जुर्म दर्ज किया है मुखबिर की सूचना पर नवकार परिसर पुलगांव नाला के पास शिव मंदिर दुर्ग में एक वृद्ध गांजा बेच रहा था पुलिस घेराबंदी कर गांजा बेचने वाले को गिरफ्तार किया है पूछताछ करने पर वृद्धो ने अपना नाम नवकार परिसर पुलगांव नाला के पास दुर्ग निवासी राजकुमार यादव और शंकरपुर वार्ड चिखली राजनांदगांव लोमन सिंह नावेलकर बताया है आरोपियों के पास से पुलिस ने 420 ग्राम गांजा जब्त किया गांजा बेचने के नगदी रकम समेत 48 हजार 480 रूपये जब्त किया गया।

डिप्टी सीएम विजय शर्मा ने किया शॉपिंग कॉम्प्लेक्स निर्माण का भूमिपूजन

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

कवर्धा, 2 मई। कवर्धा शहर के विकास में एक और महत्वपूर्ण कदम बढ़ाते हुए उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने आज शॉपिंग कॉम्प्लेक्स का भूमिपूजन किया। गुरूनानक चौक स्थित पुराने नगर पालिका कार्यालय के खाली स्थान पर बनने वाले इस शॉपिंग कॉम्प्लेक्स की लागत 2 करोड़ 27 लाख 54 हजार रुपये है। शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के निर्माण से कवर्धा को एक आधुनिक व्यापारिक केंद्र के रूप में विकसित किया जाएगा, जिसमें पार्किंग की सुविधा, शॉपिंग यूनिट्स और अन्य आधुनिक सुविधाओं का समावेश होगा। इस अवसर पर सांसद संतोष पांडेय, कृषक कल्याण परिषद के अध्यक्ष सुरेश चंद्रवंशी, पूर्व विधायक डॉ. सियाराम साहू, जिला पंचायत अध्यक्ष ईश्वरी साहू, उपाध्यक्ष कैलाश चंद्रवंशी, नगर पालिका अध्यक्ष चंद्रप्रकाश चंद्रवंशी, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष संतोष पटेल, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष अनिल ठाकुर, श्री राजेंद्र सलूजा, श्री मनहरण कौशिक, नगर पालिका उपाध्यक्ष

श्री पवन जायसवाल, पूर्व उपाध्यक्ष मनोज गुप्ता , अजय ठाकुर, , जनप्रतिनिधि दुर्गेश अवस्थी , देवा साहू , , रेखा साहू सहित जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित थे। उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कवर्धावासियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि राज्य सरकार का उद्देश्य है कि शहरी क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाए और लोगों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं। उन्होंने कहा कि यह शॉपिंग कॉम्प्लेक्स न केवल व्यवसायिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करेगा, बल्कि स्थानीय युवाओं को रोजगार के अवसर भी प्रदान करेगा। सांसद संतोष पांडेय ने कहा कि शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के निर्माण से शहर को बहुआयामी लाभ प्राप्त होंगे। यह परियोजना न केवल शहरी विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, बल्कि यह स्थानीय नागरिकों के लिए रोजगार के नए द्वार भी खोलेगी। नगर पालिका अध्यक्ष चंद्रप्रकाश चंद्रवंशी ने बताया की उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा के नेतृत्व में नगरवासियों की बहुप्रतीक्षित माँग को पूरा करते हुए आज 15 वर्षों से खाली पड़ी भूमि पर शॉपिंग कॉम्प्लेक्स निर्माण कार्य का विधिविधान से भूमिपूजन किया गया। उन्होंने कहा कि यह केवल भूमिपूजन नहीं, बल्कि हमारे नगर के विकास की नई शुरुआत है। 15 वर्षों से उपेक्षित यह भूमि अब नगरवासियों की सुविधा और सेवा का केंद्र बनेगी। नगर पालिका अध्यक्ष ने उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा, सांसद श्री संतोष पांडेय तथा सभी जनप्रतिनिधियों का आभार प्रकट किया जिन्होंने इस पहल को सहयोग प्रदान किया। यह कार्य जनभावनाओं के सम्मान और नगर की उन्नति की दिशा में एक ठोस कदम है। अध्यक्ष ने बताया कि इस भूमि पर सर्व सुविधायुक्त शॉपिंग कॉम्प्लेक्स का निर्माण प्रस्तावित है, जिससे नगरवासियों को अनेक सुविधाएँ एक ही स्थान पर उपलब्ध होंगी। कार्यक्रम में नगरवासियों की भारी उपस्थिति देखी गई, जिन्होंने इस पहल का स्वागत करते हुए नगर के विकास के प्रति आशा और उत्साह व्यक्त किया। इस अवसर पर पार्षद सुनील साहू ने भी संबोधित किया।

शिव परमात्मा से आत्मा का संबंध जोड़कर स्वयं को उनके बच्चे के रूप में अनुभव करें,सदा निश्चित रहेंगे:पुष्पा दीदी

भिलाई,2 मई। सेक्टर-7 स्थित पीस ऑडिटोरियम में आयोजित विशेष योग कार्यक्रम में मुंबई, उल्लासनगर (महाराष्ट्र) से पधारी ब्रह्माकुमारी पुष्पा दीदी ने गहन राजयोग साधना और परमपिता परमात्मा शिव से सर्व संबंध जोड़ने के महत्व पर प्रकाश डाला।पुष्पा दीदी जी ने बताया कि पिता परमात्मा शिव से ही हमें आध्यात्मिक वरसे की प्राप्ति होती है। अन्य किसी से नहीं।हमारे चारों ओर देहधारी है,जिनसे हम अपेक्षाएं रखते है जो पूरी नहीं होने पर निराश मायूस हो जाते है, परमधाम स्थित सदा शिव परमात्मा से आत्मा का गहरा संबंध जोड़कर, स्वयं को उनके बच्चे के रूप में अनुभव करते हुए, समस्त जिम्मेदारियों को ट्रस्टी भाव से सौंप देना चाहिए। यही आत्मा को सदा प्रसन्न, निर्भय और शक्तिशाली बनाता है।पुष्पा दीदी जी ने कहा कि संगठन की एकता और एकमतता की शक्ति ही परमात्मा शिव को इस संसार में प्रत्यक्ष करने का माध्यम बनेगी। जब हम सभी एक संकल्प में स्थिर होते हैं, तभी दिव्य कार्यों में सफलता सुनिश्चित होती है। जीवन में समय और शक्तियों के व्यर्थ से बचने के लिए अटेंशन आवश्यक है।कार्यक्रम में बड़ी संख्या में ब्रह्मावत्स पुष्पा दीदी जी के सजीव अनुभवों व प्रेरणादायी वचनों से लाभान्वित हुए।

मजदूर दिवस पर आश्रय स्थल में निवासरत मजदूरों का बनाया गया मजदूर एवं राशनकार्ड

भिलाईनगर। आज मजदूर दिवस के अवसर पर नगर पालिक निगम भिलाई के आश्रय स्थल में निवासरत मजदूरो का मजदूर कार्ड एवं राशनकार्ड बनाया गया। नगर निगम भिलाई आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय आश्रय स्थल का निरीक्षण करने गए। वहां पर निवासरत लोगों ने बताया कि कुछ लोगो के पास राशनकार्ड एवं मजूदर कार्ड नहीं है। जबकि वे घरो में बर्तन धोना, झाडू पोछा आदि का काम करते है। आयुक्त द्वारा राशनकार्ड विभाग को निर्देशित किया गया कि सभी का राशनकार्ड एवं मजूदर कार्ड शीध्र बनवा दिया जाए। 3 मजदूर श्रीमती प्रिया भोंडेकर, रेखा ठाकरे, मुरली डोंगरे का राशन कार्ड नही बना था, जिसे बनवाकर दे दिया गया। उसी प्रकार 4 मजदूर श्रीमती राजवती, युवराज कुमार, मोहन, मंडावी, शोभा साहू जिनके पास मजदूर कार्ड नहीं था। जिसके कारण इनका राशन कार्ड नहीं बन पा रहा था। जिनका मजूदर कार्ड नहीं था उनका मजदूर कार्ड बनाने के लिए आनलाईन आवेदन कर दिया गया है। मजदूर कार्ड बन जाने के बाद उसी के आधार पर राशनकार्ड बना दिया जायेगा।आयुक्त ने राशनकार्ड प्रभारी शालिनी गुरव एवं शशीभूषण मोहंती से पूछा कि इसका राशन कार्ड निरस्त क्यों हो रहा है। इसका पता जब खादय विभाग से किया गया तब ज्ञात हुआ कि मुरली डोंगरे का नाम उनके बेटे के साथ दुर्ग में जुड़ा हुआ है। बेटे के द्वारा दुर्ग में पिता के हिस्से का राशन लिया जा रहा था, लेकिन अपने साथ नहीं रखता है। ऐसे लोग निगम के आश्रय स्थल में रहकर अपना गुजर-बसर कर रहे है। खादय विभाग से संपर्क करके मुरली डोंगरे का नाम बेटे के साथ जुड़ा था उसे कटवा दिया गया। फिर उसके स्वयं के नाम से राशन कार्ड बना दिया गया। स्वास्थ्य विभाग के 450 से अधिक मजदूरो का आज मेडिकल चेकप कराया गया। जिसमें बीपी, सुगर, थाईराइड, अस्थमा, खून जॉच एवं अन्य बिमारियों का जॉच कराया गया, उन्हे दवा भी वितरित की गई। मजदूरो ने यह भी बताया कि जब से निगम भिलाई मे हम लोगो की डयूटी समय सुबह 5 बजे से कर दिया गया है तब से हम लोगो को गर्मी से बहुत राहत मिल रही है। 1 घंटा पहले हमे अवकाश मिल जाता है। स्वास्थ्य परीक्षण के दौरान स्वास्थ्य अधिकारी जावेद अली, जोन स्वास्थ्य अधिकारी अंकित सक्सेना, अनिल मिश्रा, बीरेन्द्र बंजारे, हेमंत मांझी, वरिष्ठ स्वच्छता निरीक्षक व्ही के सेमुवल, कमलेश द्विवेदी, अंजनी सिंह आदि सहयोगी रहे।

प्रभारी ज्ञानेश्वर ताम्रकर ने ली समिति के सदस्यों के साथ कर्मशाला विभाग,विद्युत विभाग की बैठक

दुर्ग, 2 मई। नगर पालिक निगम,महापौर श्रीमती अलका बाघमार के मार्गदर्शन में विधुत विभाग/यंत्रिकी विभाग प्रभारी ज्ञानेश्वर ताम्रकर ने ली समिति के सदस्य और अधिकारी के साथ एमआईसी कक्ष में ली बैठक में उन्होंने कहा कि शहर में मच्छरों से निजात पाने प्रत्येक वार्ड में फॉगिंग मशीन सप्ताह में दो बार हो इसके लिए मशीन और दवाई एवम अन्य जो भी आवश्यकता के लिए भी प्रस्ताव आया। निगम सीमाक्षेत्रांतर्गत शहर की सफाई व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए पूर्व में नए वाहनो का खरीदी किया गया है, जिसके उपरांत वाहनो के संचालन हेतु नए चालक व हेल्पर रखे जाने के संबंध में समिति में प्रस्ताव रखा गया,उन्होंने ये भी कहा कि कर्मशाला विभाग में वाहनो के

रखरखाव के लिए टिन शेड निर्माण किये जाने एवम कर्मशाला विभाग के समस्त वाहनो के साफ सफाई के लिए वाशिंग लाईन (सर्विस सेंटर) निर्माण करने हेतु प्रस्ताव भी रखे।नगर पालिक निगम, दुर्ग में 03 नग रिफ्यूज कम्पैक्टर वाहन क्रय किया गया, जिसके लिए रैम्प बनाए जाने की व्यवस्था किया जाना है, जिसमें टाटा एस का कचरा सीधा कम्पेक्टर के अंदर जा सके.विधुत विभाग में 04 नग टाटा एस0 वाहनो की आवश्यकता है। सहायक अभियंता के लिए विभागीय कार्य हेतु 01 नग वाहन की आवश्यकता है।विधुत विभाग में नया लाईट क्रय करने हेतु ।विद्युत विभाग संबंधित कार्य के लिए प्लेसमेंट या ठेके के कर्मचारी रखे जाने की प्रस्तावित किये है।बैठक के दौरान समिति के सदस्य जीतेन्द्र ताम्रकार ,युवराज कुंजाम,श्रीमतीरंजीता पाटिल,श्रीमती मनीषा सोनी,श्रीमती रेखा बजार,प्रकाश गीते,श्रीमती ममता ओमप्रकाश सेन,श्रीमती रेशमा सोनकर,जीतू महोबिया,श्रीमती प्रतिभा सुरेश गुप्ता सहित कार्यपालन अभियंता,आरकेजैन,नोडल अधिकारी सुरेश केवलानी,सहायक नोडल अधिकारी अभ्युदय मिश्रा विद्युत विभाग,विद्युत यांत्रिकी, अग्निशमन एवं कर्मशाला विभाग के सचिव शोएब अहमद उपस्थित रहें।

इस्पात उद्योग में आज स्लैग का पुनः उपयोग एक चुनौती: राजीव

भिलाई, 2 मई । द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) की शाखा एवं इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ प्लांट इंजीनियर्स के छत्तीसगढ़ चैप्टर द्वारा समूह परिचर्चा का आयोजन किया गया। समूह चर्चा का विषय था धातुकर्म उद्योगों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन - समस्याएँ एवं चुनौतियाँ । समूह चर्चा में विषय विशेषज्ञ के रूप में राजीव वर्मा, पूर्व महाप्रबंधक प्रभारी, सेट /सेल, अनूप कुमार दत्ता, मुख्य् महाप्रबंधक प्रभारी (सिंटर संयंत्र) भिलाई इस्पात संयंत्र, डा सुभाष गांगुली , सह प्राध्यापक , मेटलर्जी एवं मटेरियल साइंस , एन आई टी रायपुर, अभिषेक दुबे, एसोसिएट जनरल मैनेजर, वेदांता एल्युमीनियम लिमिटेड, लांजीगढ़, ओडिशा, श्रीमती मंजू हरिदास, महाप्रबंधक, सेट / सेल, आई आई पी ई की छत्तीसगढ़ चैप्टर के अध्यक्ष ए एन सिंह, पुनीत चौबे, चेयरमैन द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), भिलाई शाखा उपस्थित थे। कार्यक्रम के प्रारम्भ में स्वागत भाषण में द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) की भिलाई शाखा के मानसेवी सचिव बसंत साहू ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि परिचर्चा का विषय हमारे लिए बहुत प्रासंगिक है क्योकि भारत के पूर्वी हिस्से जिसकी शुरुआत भिलाई से होती है से लेकर ओडिशा , झारखण्ड, पश्चिम बंगाल में खनिज के प्रचुर

भंडार हैं और फलस्वरूप इन्ही इलाकों में लोहा, एल्युमीनियम एवं ताम्बे के धातु उद्योग स्थापित हैं । उन्होंने कहा कि इन सभी उद्योगों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन न केवल पर्यावरणीय दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं अपितु इनके आर्थिक मायने भी हैं । विषय विशेषज्ञ राजीव वर्मा, पूर्व महाप्रबंधक प्रभारी ने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि मेटलर्जिकल वेस्ट को मुख्यतः दो प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है लौह तथा अलौह। उन्होंने कहा कि आज इस्पात उद्योग में बी ओ ?फ़ तथा ई ए ?फ़ स्लैग का पुनरुपयोग एक चुनौती है । वर्मा ने कहा कि अन्तराष्ट्रीय मानक के अनुसार प्रति टन लौह उत्पादन में 0.6 टन ठोस अपशिष्ट होना चाहिए। वर्मा ने कहा कि ग्रीन स्टील बनाने की प्रक्रिया में हाइड्रोजन का इस्तेमाल होगा जिससे ठोस इधन पर निर्भरता घटेगी परिणामस्वरूप सॉलिड वेस्ट के उत्पादन में कमी होगी । विषय विशेषज्ञ अनूप कुमार दत्ता , मुख्य् महाप्रबंधक प्रभारी ने बताया कि इस्पात उद्योग के प्रारंभिक चरण में उत्पादन प्रक्रिया में बनने वाले सॉलिड वेस्ट का निष्पादन एक बहुत बड़ी समस्या थी । उन्होंने राउरकेला इस्पात संयंत्र के अनुभव साझा करते हुए कहा कि स्लैग के पहाड़ पर पहाड़ बनते जा रहे थे । दत्ता ने कहा कि सीमेंट उत्पादन में स्लैग के उपयोग का आरम्भ होने से इस समस्या से बहुत बड़ी राहत मिली । दत्ता ने बताया कि स्लैग से रेत बनाने की प्रक्रिया पर अध्ययन एवं मंथन जारी है। उन्होंने कहा कि स्लैग से रेत बनाए जाने पर नदी से रेत उत्खनन में कमी आएगी और नदियों के संरक्षण में मदद मिलेगी । उन्होंने कहा कि दिल्ली के आसपास पराली के जलने से ठण्ड के मौसम में स्मोग से बहुत अधिक परेशानी हो रही है। अनूप कुमार दत्ता ने कहा कि सेल इस समस्या के निदान हेतु अपने सिंटर संयंत्र में पराली को जैविक इंधन के रूप में इस्तेमाल करने पर प्रयास कर रहा है । विषय विशेषज्ञ डा सुभाष गांगुली, सह प्राध्यापक, मेटलर्जी एवं मटेरियल साइंस, एनआईटी रायपुर ने अपनी बात रखते हुए कहा कि धातुकर्म उद्योगों में खतरनाक एवं जोखिम रहित अपशिष्ट कि पहचान बहुत आवश्यक है । उन्होंने कहा कि हैवी मेटल के प्रदुषण से भूगर्भ जल और जलाशयों के दूषित होने की संभावना है । सुभाष गांगुली ने कहा कि जैसे अभी सभी उद्योग जीरो लिक्विड डिस्चार्ज का लक्ष्य निर्धारित कर कार्य कर रहे हैं उसी प्रकार उन्हें जीरो सॉलिड डिस्चार्ज का भी प्रयास करना होगा । उन्होंने कहा कि मेटलर्जी आधारित उद्योगों विशेष रूप से लौह और एल्युमीनियम को अपनी उत्पादन प्रक्रिया पर पुनर्विचार करना चाहिए जिससे कम से कम ठोस अपशिष्ट निकले । सुभाष गांगुली ने कहा कि उद्योगों, शैक्षणिक संस्थानों और अनुसन्धान केन्द्रों को संयुक्त रूप से विचार कर नयी तकनीक के विकास की दिशा में काम करना होगा जिससे न केवल ठोस अपशिष्ट कि मात्र में कमी आयी अपितु प्राकृतिक खनिज साधनों पर भी निर्भरता कम हो । विषय विशेषज्ञ अभिषेक दुबे, एसोसिएट जनरल मैनेजर, वेदांता एल्युमीनियम लिमिटेड, लांजीगढ़, ओडिशा ने एल्यूमिना रिफाइनरियों में उत्पन्न होने वाले प्रमुख ठोस अपशिष्ट रेड मड से जुड़ी गंभीर चुनौतियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि रेड मड के भंडारण और पर्यावरणीय प्रभाव गंभीर चिंता का विषय हैं। दुबे ने साझा किया कि वेदांता भारत में पहली कंपनी थी, जिसने 2013 में रेड मड फिल्टरेशन तकनीक की शुरुआत की। इस तकनीक में हाइड्रॉलिक प्रेस का उपयोग कर रेड मड से जल को अलग कर ठोस केक तैयार किया जाता है, जिसे अब सीमेंट और निर्माण उद्योगों में उपयोग किया जा रहा है। समूह परिचर्चा की समन्वयक श्रीमती मंजू हरिदास, महाप्रबंधक, सेट / सेल , भिलाई ने विषय विशेषज्ञों से इस्पात और एल्युमीनियम उद्योग में ठोस अपशिष्ट के वर्तमान परिदृश्य तथा भविष्य में उनके निष्पादन से जुड़े प्रश्न पूछे। उपस्थित श्रोताओं ने भी इस पर विषय विशेषज्ञों से अपनी शंकाओं का समाधान किया।आई आई पी ई की छत्तीसगढ़ चैप्टर के अध्यक्ष ए एन सिंह एवं द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), भिलाई शाखा के चेयरमैन पुनीत चौबे ने अपने विचार साझा किए। धन्यवाद ज्ञापन आई आई पी ई की छत्तीसगढ़ चैप्टर के सचिव पी के नियोगी ने दिया । कार्यक्रम का संचालन सुश्री सृष्टि आनंद ने किया ।

एक नजर

थाना लालबाग परिसर में ओपन जिम प्रारंभ

राजनांदगांव, 02 मई। थाना प्रभारी प्रशिक्षु भा0पु0से0 ईशु अग्रवाल के नेतृत्व में समस्त थाना स्टाफ के सहयोग से थाना लालबाग परिसर में ओपन जिम का निर्माण किया गया। नवनिर्मित ओपन जिम का लोकार्पण दिनांक 30/04/25 को मुख्य अतिथि श्री अभिषेक शांडिल्य पुलिस महानिरीक्षक राजनांदगांव, रेंज राजनांदगांव एवं विषेश अतिथि श्री मोहित गर्ग पुलिस अधीक्षक राजनांदगांव, आई0एफ0एस0 श्री अभिषेक अग्रवाल के कर कमलों से किया गया कार्यक्रम में श्री पुष्पेन्द्र नायक नगर पुलिस अधीक्षक राजनांदगांव, प्रशिक्षु भा0पु0से0 श्री ईशु अग्रवाल, थाना प्रभारी लालबाग श्री राजेश कुमार साहू एवं समस्त थाना स्टाफ लालबाग उपस्थित रहे ।

जिले को नवीन पहल की श्रेणी में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान कर पुरस्कृत किया गया

राजनांदगांव, 03 मई। स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल द्वारा राज्य स्तरीय पुरस्कार समारोह में निक्षय निरामय 100 दिवसीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम अंतर्गत राजनांदगांव जिले को नवीन पहल की श्रेणी में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान कर पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर स्वास्थ्य सचिव श्री अमित कटारिया एवं आयुक्त सह संचालक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग डॉ. प्रियंका शुक्ला उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार द्वारा छत्तीसगढ़ के के 19 जिलों में 100 दिवसीय निक्षय निरामय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम संचालित किया गया था। जिसमें राजनांदगांव जिले को नवीन पहल की श्रेणी में उत्कृष्ट कार्य के लिए पुरस्कृत किया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. नेतराम नवरतन ने बताया कि 100 दिवसीय निक्षय निरामय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम अंतर्गत जिले में नवीन पहल के तहत निजी चिकित्सालयों के माध्यम से टीबी के संदेहास्पद मरीजों की निःशुल्क एक्स-रे जांच की गई। उन्होंने बताया कि जिले में टीबी मरीज हेतु निक्षय मित्र बनकर टीबी मरीजों के लिए पोषण आहार की विशेष व्यवस्था की गई है। साथ ही विभिन्न संगठनों ने निक्षय मित्र अभियान में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग द्वारा टीबी उन्मूलन की दिशा में विशेष सहभागी बनकर जिले को टीबी मुक्त बनाने की अपील की है।

अछोली स्कूल में युवक का मर्डर

डोंगरगढ़ /अछोली, 02 मई। डोंगरगढ़ समीपस्थ ग्राम अछोली के पुराना बस्ती अछोली में प्रायमरी स्कूल के कम्पाउंड में युवक की रक्तरंजीत लाश मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई. इस सनसनी खेज हत्त्याकांड से ग्रामीण दहशत में हैं वही प्रथम दृष्ट्या आपसी रंजीश में अज्ञात आरोपी के द्वारा युवक के सीने में धारदार हथियार से वार कर लहूलुहान कर फरार होने का मामला सामने आ रहा है. 05 मई शुक्रवार की सुबह घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस दलबल के साथ थाना प्रभारी जितेंद्र वर्मा घटनास्थल पर पहुंचे और फारेंसिक टीम व डॉग स्क्वायड की टीम के सहयोग से शव का पंचनामा कार्यवाही कर डोंगरगढ़ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के मर्चुरी में पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया. वही घटना स्थल पर देखने से प्रतीत हो रहा था कि आरोपी ने मृतक के सीने के बीच में धारदार खन्जर नुमा हथियार घोंप कर लहूलुहान कर दिया गया था जिससे भीम नेताम पिता स्व. श्याम सिंग उम्र 23 साल निवासी पुराना बस्ती अछोली की मृत्यु हो जाना बताया जा रहा था. इधर पुलिस ने घटना स्थल पर मृतक का जूता व मोबाइल जप्त कर मामले की विवेचना में जुट गई है. वही पुलिस ने तीन संदिग्धों को थाने लाकर पूछताछ की जा रही है. पुलिस का दावा है कि आरोपी शीघ्र पकड़े जायेंगे. घायल अवस्था में देख भाई ने अस्पताल चलने कहा परंतु मना कर दिया. घटना स्थल पर उपस्थित ग्रामीणों की मानें तो पुराना बस्ती के प्रायमिरी स्कूल में 01 मई को स्कूल के पास निवास करने वाले यादव परिवार के लड़के की शादी समारोह आयोजन था।

मुस्लिम समाज के हित में है वक्फ संशोधन अधिनियम:सीएम साय

■ **प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देश में तेजी से हो रहे सुधारः केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह**

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

रायपुर, 02 मई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पुराने वक्फ बिल की विसंगतियों को दूर करने का प्रयास नए वक्फ संशोधन अधिनियम 2025 के माध्यम से किए जा रहे है, ताकि मुस्लिम समुदाय के पिछड़े और गरीब तबके के लोगों के जीवन को बेहतर बनाया जा सकें और उन्हें विकास की मुख्यधारा में शामिल किया जा सके। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने वक्फ सुधार जनजागरण अभियान समिति रायपुर द्वारा वक्फ संशोधन अधिनियम 2025 विषय पर मेडिकल कॉलेज सभागार में आयोजित व्याख्यान माला में यह बात कही। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने कहा कि वक्फ संशोधन अधिनियम 2025 मुसलमानों के हित में है और इसका लाभ सभी मुसलमानों को होगा। यह बिल मुस्लिम समाज के विरोध में नहीं है। विषय-विशेषज्ञों एवं समाज के सभी तबके से सलाह मशवरा कर यह कानून लाया गया है। व्याख्यान माला के मुख्य वक्ता केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देश में तेजी से रिफार्म किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि चाहे जम्मू कश्मीर से धारा 370 हटाने की बात हो या ट्रिपल तलाक जैसे कानूनों को समाप्त कर मुस्लिम समाज के महिलाओं को हक दिलाने की बात हो, यह सभी कार्य प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हुए हैं। अब वक्फ बिल के माध्यम से पिछड़े मुसलमानों को उनका हक दिलाते हुए वक्फ बोर्ड की गड़बड़ियों को दूर कर सकारात्मक सुधार का प्रयास किया जा रहा है। केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने आगे बताया कि हमारी सरकार का प्रयास है कि वक्फ के माध्यम से समाज के वास्तविक लोगों को ही इसका फायदा मिल सके। उन्होंने पावर प्वाइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से यूपीए सरकार द्वारा आनन-फानन 2013 में वक्फ क़ानून में किए संशोधन से हुए नुकसान एवं विसंगतियों के बारे विस्तृत जानकारी दी। साथ ही वर्तमान वक्फ संशोधन अधिनियम 2025 से होने वाले फायदों एवं विसंगति प्रावधानों के हटाने के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री श्री राम विचार नेताम ने कहा कि आज वक्फ कानून के संबंध में जो गलतफहमी समाज में फैलाई जा रही है उससे हम सब को बचना है और नए वक्फ कानून की वास्तविकता को पहचाना एवं जानना है। हमारे विभाग द्वारा भी जिला स्तर से लेकर विकासखंडों तक ऐसे जागरण या व्याख्यान माला का आयोजन किए जाएंगे। इस अवसर में पूर्व विधायक भाटापारा श्री शिवरतन शर्मा, धमतरी महापौर श्री रामू रोहरा छत्तीसगढ़ वक्फ बोर्ड के चेयरमेन डॉ. सलीम राज सहित मुस्लिम समाज के बुद्धिजीवी वर्ग बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

नगर में ब्राह्मण समाज ने परशुराम का जन्मोत्सव हर्षोल्लास से मनाया

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

डोंगरगढ़, 02 मई। धर्मनगरी में अक्षय तृतीया के पावन पर्व के साथ साथ भगवान् परशुराम जन्मोत्सव नगरवासियों ने बड़े धूमधाम व हर्षोल्लास से मनाया गया. वही केदारबाड़ी स्थित विप्र भवन में ब्राम्हण समाज के विप्र बंधु बांधवो की उपस्थिति में भगवान् परशुराम जी की की विधिवत् पूजा अर्चना की गई इस दौरान समाज की महिलाओं के द्वारा सुंदर पाठ किया गया. वही दूसरी ओर भगवान् के जन्मोत्सव के पावन दिवस पर युवाओं का नवाचार कार्यक्रम रखा गया था जिसमें समाज के बटुको का पंडित रघुनाथ तिवारी के मंत्रोच्चार से परिवार की उपस्थिति में उपनयन संस्कार संपन्न कराया गया.

समाज सेवी संस्थाओ ने किया शोभायात्रा का स्वागत सत्कार-भगवान् की शोभायात्रा केदारबाड़ी विप्र भवन से शाम लगभग 6 बजे गाजे बाजे के साथ निकाली गई जो हाईस्कूल चौक होते हुए मुलतानीपारा, सेठपारा, बुधवारी पारा, रेलवे चौक, खंडूपारा, जयस्तंभ चौक, गोलबाजार, भगतसिंग चौक, थाना चौक, नया बस स्टैंड चौक होते विप्र भवन पहुँच समाप्त हुई. इस दौरान बुधवारी पारा में रघुनंदन हनुमान समिति, खंडूपारा में माँ बम्लेश्वरी ट्रस्ट समिति के पदाधिकारियों व सदस्यों की उपस्थिति में व गोलबाजार में हनुमान भक्त व बजरंग दल के सदस्यों के द्वारा शोभायात्रा का स्वागत करते हुए भगवान् परशुरामजी की पूजा अर्चना कर शोभायात्रा के भक्तों के लिए जलपान की व्यवस्था की गई थी इस दौरान भाजपा प्रदेश महामंत्री रामजी भारती, नपाध्यक्ष रमन डोंगरे, मंदीर ट्रस्ट समिति के अध्यक्ष मनोज अग्रवाल, संजय श्रीवास्तव, संजीव गोमास्ता, बबलू शांडिल्य, हनी गुप्ता सहित सामाजिक संस्थानों के युवा बड़ी संख्या में उपस्थित थे.

आज होगा महानदी के उद्गम स्थल को संवारने का काम

■ **सीईओ जिला पंचायत रोमा श्रीवास्तव ने अभियान में सहभागिता निभाने की आमजन से की अपील**

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

धमतरी, 02 मई। जिला प्रशासन द्वारा सिहावा में महानदी के उद्गम स्थल और उसके आसपास के क्षेत्र को पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने की पहल दो मई से मूर्तरूप लेना शुरू हो जाएगी। दो मई को सामुहिक श्रमदान से महानदी के उद्गम स्थल और उसके आसपास के इलाके की सफाई की जाएगी। महानदी जागरूकता अभियान (मां) में लगभग 10 से अधिक ग्राम पंचायतों के निवासी, सरपंच, पंच, स्थानीय जनप्रतिनिधियों के साथ-साथ छात्र-छात्राएं, ग्राम विकास समिति के सदस्य, स्व सहायता समूह की महिलाएं, स्वच्छता दीदी, रेडक्रॉस के वॉलिंटियर्स, एनसीसी और एनएसएस के केडेट्स, युवा-बुजुर्ग बड़ी संख्या में शामिल होंगे। इस अभियान की शुरुवात प्रातः 7 बजे से फरसिया महामाई मंदिर में महानदी आरती सह दीप प्रज्जवलन, प्रांगण में वृक्षारोपण, अभियान के संबंध में जनजागरूकता हेतु विडियो, अपील की जाएगी। इसके बाद सामतरा (गोरेगांव) महानदी प्रवाह क्षेत्र ग्राम सामतरा में श्रमदान के माध्यम से साफ सफाई कार्य, प्रातः 8 बजे, छिपली महानदी प्रवाह क्षेत्र ग्राम छिपली से नगरी सीमा तक श्रमदान के माध्यम से साफ सफाई कार्य, गणेश घाट (सिहावा) महानदी उद्गम स्थल गणेश घाट में पूजा एवं मंचीय कार्यक्रम के माध्यम से अभियान संबंधित जनजागरूकता विडियो अपील प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रातः 9 बजे से।

स्व और समाज कल्याण के लिए युवाओं को आगे आना चाहिए:आचार्य अवधूत

रायपुर, 02 मई। छत्तीसगढ़ी समाज के बुद्धिजीवी संघ के द्वारा युवाओं के लिए विचार संगोष्ठी का आयोजन आज किया गया . सिद्धार्थ चौक टिकरापारा ,रायपुर स्थित एक हाल में आयोजित इस संगोष्ठी का विषय सामाजिक आर्थिक दृष्टिकोण था।

संगोष्ठी के प्रमुख वक्ता-उदयभान सिंह चौहान (वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता) ने कहा कि छत्तीसगढ़ बने पच्चीस साल हो गए हैं. छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के साथ हमें युवाओं को सशक्त बनाकर विकसित देश का निर्माण करना है.संगोष्ठी को संबोधित करते हुए आचार्य अनिमेषानंद अवधूत (प्रकाशन विभाग, एमपीएस) ने कहा कि परमात्मा प्राप्ति के मार्ग में खुद के कल्याण के साथ समाज के सर्वांगीण कल्याण के लिए युवाओं को आगे आना चाहिए। छत्तीसगढ़ी समाज के रेक्टर आचार्य रितेश्वरानंद अवधुत नें भाषा, स्थानीय लोगों के हाथों में योजना, उद्योग, शिक्षा और रोज़गार की शक्ति देने की बात कही. संगोष्ठी में छत्तीसगढ़ी समाज के चेयरमैन डॉ सत्यजीत साहू और महासचिव सुबोध देव ने अपने विचार रखे. आभार प्रदर्शन बुद्धिजीवी संघ के विकास कुमार साहू ने किया. संगोष्ठी में विशेष अतिथि के रूप में वरिष्ठ इंजीनियर जी पी चंद्राकर और के पी सिंह उपस्थित रहे. कार्यक्रम में रायपुर भुक्ति प्रधान यदुनाथ जी संदीप चौहान , आकाश चंद्रवंशी और युवा संघ के डॉ दीपाली , डॉ दोलामनी , जितेंद्र बघेल, गुलशन,मानसरोवर , कांती साहू , रिया चैटर्जी , सत्य प्रकाश चंद्राकर, आदर्श दीक्षित समेत बड़ी संख्या में युवाओं नें हिस्सा लिया।

5 मई से 31 मई तक वार्डो में समाधान शिविर

■ **अपनी समस्याओं का समाधान जानने वार्डो में आयोजित समाधान शिविर में उपस्थित होने की महापौर ने नागरिको से की अपील**

राजनांदगांव, 02 मई। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा आम जनता को शासन की योजनाओं का लाभ देने उनसे संवाद स्थापित करने तथा उनकी समस्याओ के निराकरण के लिये सुशासन तिहार 2025 का आयोजन पूरे प्रदेश में किया जा रहा है, जिसके प्रथम चरण में 8 से 11 अप्रैल तक आयोजित शिविर मे प्राप्त आवेदनों का द्वितीय चरण में समाधान किया गया और आवेदको के समस्याओं का समाधान बताने तृतीय चरण में वार्डो में 5 मई से 31 मई 2025 तक प्रातः 10 बजे से संध्या 5 बजे तक समाधान शिविर आयोजित किया जा रहा है। समाधान शिविर के लिये आयुक्त श्री अतुल विश्वकर्मा ने अधिकारियों व कर्मचारियो को दायित्व सौपा है, जिसके नोडल अधिकारी सहायक अभियंता श्री प्रणय मेश्राम मो. नं. 83197 26288 तथा सहायक नोडल अधिकारी प्र.सहायक अभियंता श्रीमती गरिमा वर्मा मो. नं. 97705 19619 होंगे। महापौर यादव ने बताया कि शासकीय कामकाज में पारदर्शिता तथा योजनाओं और कार्यक्रमो का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने शासन की पहल पर सुशासन तिहार 2025 आयोजित किया जा रहा है, जिसमें प्रथम चरण में प्राप्त आवेदनों का द्वितीय चरण में उसका समाधान कर आवेदको को उनका समाधान बताने तथा शासन की योजनाओ का लाभ देने तृतीय चरण में वार्डो में शिविर आयोजित किया जा रहा है।

कवर्धा में बनेगा मुख्य डाकघर,सांसद संतोष पाण्डेय की मांग पर केंद्र सरकार ने दी मंजूरी

■ **अधिवक्ता सतीश पांडेय ने जताया आभार**

डोंगरगांव, 02 मई। कवर्धा जिलेवासियों के लिए एक बड़ी सौगात सामने आई है। सांसद संतोष पाण्डेय द्वारा कवर्धा जिले के लिए मुख्य डाकघर भवन निर्माण की मांग को केंद्र सरकार ने स्वीकृति दे दी है। इस विषय पर केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने 17 अप्रैल 2025 को आधिकारिक पत्र जारी कर जानकारी दी है कि डाक विभाग ने प्रस्ताव को स्वीकृति दे दी है तथा आवश्यक राशि भी आवंटित कर दी गई है। यह मंजूरी लोकसभा सचिवालय के माध्यम से नियम 377 के तहत रखे गए प्रस्ताव पर दी गई है, जिसमें सांसद पाण्डेय ने कवर्धा में एक पूर्ण विकसित डाकघर भवन की आवश्यकता को मजबूती से उठाया था। इस ऐतिहासिक स्वीकृति पर अधिवक्ता और भाजपा नेता सतीश पांडेय ने केंद्र सरकार और विशेष रूप से सांसद संतोष पाण्डेय का आभार जताया।

समाचार संक्षेप

बिहान से जुड़कर रेखाबाई बनी लखपति दीदी

■ **ई रिक्शा चलाकर अर्जित कर रही अतिरिक्त आय**

धमतरी, 02 मई। हौसले और कड़ी मेहनत से कोई भी सपना को पूरा किया जा सकता है। यह केवल सपना ही नहीं बल्कि जीवन जीने की शैली बदल दी। यह कहानी है जिले के विकासखंड धमतरी के ग्राम पंचायत देमार के आश्रित ग्राम उसलापुर श्रीमती रेखा बाई चेलक की। जो जय मां लक्ष्मी स्व सहायता समूह से जुड़ी हुई है। सीमित संसाधनों के बावजूद भी स्वयं को स्थापित कर लखपति दीदी बनी। श्रीमती रेखा बाई चेलक गांव में रोजी मजदूरी करके अपने परिवार का भरण पोषण रही थी। छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन बिहान के तहत गठन एवं पुनर्गठन हेतु आईसीआरपी टीम का गांव में आना हुआ। टीम की दीदीयों के द्वारा समूह का गठन और पुनर्गठन के संबंध में विस्तृत जानकारी दे रहे थे तभी रेखा बाई चेलक के मन सदस्य बनकर कार्य करने की इच्छा व्यक्त की। वाकपटुता को देखते हुए रेखा बाई जय मां लक्ष्मी स्व सहायता समूह की सदस्य के रूप में शामिल हुई । जीवन में आगे बढ़ने की जिजीविषा और बच्चों को अच्छी शिक्षा देकर संस्कारवान बनाने के उद्देश्य से समूह के माध्यम से दो प्रतिशत मासिक ब्याज दर पर ऋण लेकर ई - रिक्शा संचालन करने की थामी हाथ। इसके लिए बकायदा ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (देना आरसेटी) धमतरी में ई-रिक्शा चलाने का प्रशिक्षण लिया। कुछ दिनों के बाद रेखा बाई को अभिसरण से अनुदान में ई -रिक्शा मिला। अब देमार से धमतरी बस स्टैंड, कलेक्ट्रेट तक ई- रिक्शा सरपट दौड़ा रही है। इससे प्रतिदिन पांच सौ से हजार रूपए की आमदनी हो रही है । आत्मविश्वास में वृद्धि तो हुई साथ ही आत्मनिर्भर होकर परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूती प्रदान की। दूसरों के लिए प्रेरणा बनी रेखा बाई बताती है कि - महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ सकती हैं और समाज की सोच को बदल सकती है। इसके लिए धैर्यता का होना बहुत जरूरी है।

शराब कोचिया सहित चाकूबाज पर पुलिस ने की कार्रवाई

डोंगरगढ़, 02 मई। अवैध गतिविधियों, शराब कोचियों/तस्करों, सटोरियों, संदिग्ध व्यक्तियों, पॉकेटमार, चाकुबाज एवं अन्य असमाजिक तत्वों पर कड़ी निगरानी रखकर पुलिस द्वारा कार्यवाही की जा रही है इसी कड़ी में 01 मई 2025 को अवैध शराब कोचिया सहित चाकूबाज को रंगे हाथ दबोचने में सफलता मिली है. पुलिस से मिली जानकारी में बताया गया कि डोंगरगढ़ पुलिस ने आरोपी योगेश रायपुरी पिता स्व0 गोपाल रायपुरी उम्र- 26 साल निवासी खुंटापारा डोंगरगढ़ को पुराना कॉलेज के सामने चिचोला रोड डोंगरगढ़ के पास 07 बोतल गोवा अंग्रेजी शराब कुल मात्रा- 5.250 बल्क लीटर किमती- 3360/-रू0 जप्त कर आरोपी को धारा- 34(2) छ0ग0 आबकारी अधिनियम के तहत गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया है। वही दूसरी ओर डोंगरगढ़ पुलिस को सूचना मिली कि नीचे बम्लेश्वरी मंदिर के सामने नारियल प्रसाद दुकान के पास एक व्यक्ति अपने पास बटनवाला चाकू रखकर लोगों को दिखाकर डरा धमका रहा है कि सूचना पर डोंगरगढ़ पुलिस तत्काल मौके पर पंहुचकर आरोपी महेश्वर ठाकुर पिता टीकम ठाकुर उम्र- 19 साल निवासी अटल आवास कन्या शाला रोड डोंगरगढ़ को चाकू दिखाकर लोगों को डराते धमकाते रंगे हाथ पकड़कर आरोपी से एक नग बटनवाला चाकू जप्त कर आरोपी के विरूद्ध धारा- 25 आर्म्स एक्ट के तहत कार्यवाही किया गया है। उक्त कार्यवाही में थाना ोंगरगढ़ का विशेष योगदान रहा।

अम्बेडकर जयंती संविधान रक्षा एवं सामाजिक न्याय वर्ष के रूप में मनाई जायेगी

राजनांदगाँव, 02 मई। विश्व बौद्ध संघ छ.ग. प्रदेश शाखा के तत्वाधान में संविधान की हीरक जयंती एवं भारतीय संविधान निर्माता भारत रत्न डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर की जयंती को संविधान रक्षा एवं सामाजिक न्याय वर्ष के रूप में मनाई जायेगी। इस अवसर पर पूरे वर्ष विभिन्न कार्यक्रम आयोजन किये जायेंगे। जन जनजागरण सम्मेलन सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे जिसमें बौद्ध अम्बेडकरवादी संगठनों को प्रतिनिधि जन प्रतिनिधिगण, बौद्ध भिक्षुगण समाजसेवी, समाज प्रमुख शामिल होंगे। संविधान की हीरक जयंती एवं डॉ. अम्बेडकर जयंती समोराह को संविधान रक्षा एवं सामाजिक न्याय वर्ष 04 मई को समय 9.00 बजे से झिथराटोला में मनाई जायेगी। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि - मान. संतोष पाण्डेय जी सांसद लोकसभा क्षेत्र राजनांदगाँव, कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती किरण रविन्द्र वैष्णव अध्यक्ष जिला पंचायत राजनांदगाँव, विशिष्ट अतिथि के रूप में माननीय सचिन बघेल जी अध्यक्ष जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक, मान. कोमल ड्क्षसह राजपूत अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी, श्रीमती किरण साहू उपाध्यक्ष जिला पंचायत राजनांदगाँव, रविन्द्र वैष्णव जी भारतीय जनता पार्टी राजनांदगाँव, मान. चन्द्रिका डड़सेना जी उपाध्यक्ष जिला भाजपा रानजांदगाँव, संजय सिन्हा जी अध्यक्ष जनपद पंचायत छुरिया, मान. प्रशांत कोडापे जी सभापति जिला पंचायत राजनांदगाँव, मान. गोपाल भुआर्य जी सभापति जिला पंचायत राजनांदगाँव, मान. श्रीमती देवकुमारी साहू जी सभापति जिला पंचायत राजनांदगाँव, मान. श्रीमती अनिता मंडावी जी सभापति जिला पंचायत राजनांदगाँव, मान. अजय पटेल जी अध्यक्ष नगर पंचायत छुरिया, मान. कान्ता साहू जी मंडल अध्यक्ष छुरिया, मान. मनोज कांडे जी मंडल अध्यक्ष लाल बहादुर नगर, मान. रमेश नेटी ग्राम पटेल झिथराटोला मान. कन्हैया खोब्रागढ़े जी सामाजिक कायकर्ता होंगे।

ग्राम कोनारी में धूमधाम से मनाया गया अक्षय तृतीया पर्व

डोंगरगांव, 02 मई। ग्राम कोनारी में अक्षय तृतीया, जिसे %अक्ति% के नाम से भी जाना जाता है, बड़े हर्षोल्लास और पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ मनाया गया। गांव के लोगों ने उत्साहपूर्वक इस पर्व में भाग लिया। पर्व के दिन सुबह से ही गांव में उत्सव जैसा माहौल बना रहा। खास आकर्षण का केंद्र रहे गांव के बच्चे, जिन्होंने उत्साहपूर्वक गुड्डे-गुड़िया की पारंपरिक शादी कराई। बच्चों ने बारात, शादी की रस्में और भोज का आयोजन करके त्यौहार को और भी रंगीन बना दिया। इस बाल-नाटक को देखने के लिए ग्रामीण एकत्रित हुए और बच्चों की रचनात्मकता की सराहना की। गांव के बुजुर्गों ने बताया कि अक्षय तृतीया को शुभ कार्यों के लिए अत्यंत फलदायी माना जाता है। इस दिन कई परिवारों ने नए कार्य आरंभ किए और नई चीजों की खरीदारी भी की। गांव के सरपंच व जनप्रतिनिधियों ने ग्रामीणों को पर्व की शुभकामनाएं दीं और आपसी मेल-जोल व संस्कृति के संरक्षण पर बल दिया। इस प्रकार ग्राम कोनारी में अक्षय तृतीया का पर्व न केवल धार्मिक आस्था, बल्कि सामाजिक सौहार्द और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के रूप में उल्लासपूर्वक मनाया गया।

■ **बच्चों ने कराई गुड्डे-गुड़िया की पारंपरिक शादी, गांव में छाया उल्लास**

कानून व्यवस्था:एसडीएम एवं एसडीओपी समन्वय से करें कार्य:कलेक्टर

■ **कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक ने कानून व्यवस्था के संबंध में कार्यपालिक मजिस्ट्रेट एवं पुलिस अधिकारियों की ली संयुक्त बैठक**

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

राजनांदगांव 02 मई। कलेक्टर डॉ. सर्वेश्वर नरेन्द्र भुरे एवं पुलिस अधीक्षक श्री मोहित गर्ग ने कलेक्टोरेट सभाकक्ष में कानून व्यवस्था के संबंध में कार्यपालिक मजिस्ट्रेट एवं पुलिस अधिकारियों की संयुक्त बैठक ली। कलेक्टर डॉ. सर्वेश्वर नरेन्द्र भुरे ने कहा कि कानून व्यवस्था बनाने रखने के लिए सभी एसडीएम एवं एसडीओपी आपसी सहयोग एवं समन्वय से कार्य करेंगे। उन्होंने ऐसे संवेदनशील क्षेत्रों का चिन्हांकन करने के लिए कहा जहां समान्यतः विभिन्न मुद्दों पर जनसामान्य में तनाव व रोष की स्थिति होती है तथा ज्यादातर धरना प्रदर्शन एवं चक्काजाम जैसी स्थिति बनती हो। उन्होंने कहा कि स्थानीय स्तर पर नागरिकों से चर्चा करते हुए ऐसी स्थिति का समाधान करें। एसडीएम एवं एसडीओपी सजग एवं सर्तक रहकर आपसी समन्वय से अपने दायित्वों का निर्वहन करें। उन्होंने सड़क दुर्घटना में कमी लाने के लिए ब्लैक स्पॉट का चिन्हांकन करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सड़क सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए नागरिकों को हेलमेट पहनने एवं अन्य जागरूकता कार्यक्रम के तहत जानकारी देने की आवश्यकता है। उन्होंने जिले में अपराध की रोकथाम, की गई कार्रवाई एवं भविष्य की रणनीति के संबंध में चर्चा की। जिले में प्रतिबंधात्मक धाराओं में कार्रवाई, धरना प्रदर्शन, रैली, जूलूस, हिट एवं रन के प्रकरण के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने कहा कि शराब की अवैध बिक्री तथा अवैध खनिज उत्खनन पर कड़ी कार्रवाई करने की जरूरत है। कलेक्टर ने ध्वनि प्रदूषण की रोकथाम हेतु उच्च न्यायालय एवं पर्यावरण मंत्रालय द्वारा दिए गए निर्देशों के परिपालन में की गई प्रतिबंधात्मक कार्रवाई के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने कहा कि आगे भी ध्वनि प्रदूषण के खिलाफ कार्रवाई जारी रखें। पुलिस अधीक्षक श्री मोहित गर्ग ने बताया कि शहर में पार्किंग की व्यवस्था के लिए स्थायी समाधान करने की आवश्यकता है। शहर में भारी वाहन का लोड नहीं होना चाहिए, इस पर ध्यान देने की जरूरत है। यातायात व्यवस्था, पुलिसिंग, अवैध शराब की बिक्री एवं अवैध खनिज उत्खनन के संबंध में चर्चा की। उन्होंने कहा कि धरना प्रदर्शन चक्काजाम एवं विवाद की स्थिति उत्पन्न होने पर सभी अधिकारी आपसी सहयोग से कार्य करेंगे। उन्होंने सड़क सुरक्षा अभियान के संबंध में जानकारी ली। इस अवसर पर अपर कलेक्टर श्री सीएल मारकण्डेय,अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री राहुल देव शर्मा, प्रशिक्षु आईपीएस श्री इशु अग्रवाल सहित कार्यपालिक मजिस्ट्रेट एवं पुलिस अधिकारी उपस्थित थे।

संपादकीय

पीएम मोदी ने सेनाओं को खुली छूट दी...

कोई भी बड़ा काम करना होता है, उसकी तैयारी करनी पड़ती है, उसमें कई दिन लगते हैं। कई तरह के जरूरी काम करने होते हैं।इसमें वक्त लगता है। पहलगाम में हुई आतंकवादी घटना को लेकर देश के लोगों में नाराजगी है, देश के लोग इस मामले में बड़ी कार्रवाई चाहते हैं।वह चाहते हैं पाकिस्तान के खिलाफ कोई ऐसी कार्रवाई होनी चाहिए जिससे उसे सबक मिले कि भारत खिलाफ कुछ करने का मतलब बहुत नुकसान होता है। बड़ा नुकसान होता है।पिछली बार भी पाकिस्तान के सबक सिखाने के लिए सरकार को कई दिन तैयारी में लगे थे। भारत ने दो बार पाकिस्तान को घर में घुसकर सबक सिखाया है, इसमें 10-12 दिन का समय लगा था।इस बार तो पिछली बार से ज्यादा बड़ी कार्रवाई करनी है, इसलिए इसमें कुछ दिन और ज्यादा लग सकते हैं। पीएम मोदी,अमित शाह व राजनाथ सिंह आए दिन सेना व अन्य सरकारी संस्थाओं के अधिकारियों की बैठक कर रहे हैं, हर पहलू पर विचार किया जा रहा है। सोचा जा रहा है कि क्या करना ठीक रहेगा।पाकिस्तान से बदला तो लेना ही है लेकिन यह भी ख्याल रखा जा रहा है कि यह काम इस तरह किया जाए कि भारत को किसी तरह का नुकसान न हो।भारत की कार्रवाई के जवाब में पाकिस्तान ऐसा कुछ न कर सके कि भारत को नुकसान हो। भारत की कोशिश है कि पिछली बार जिस तरह भारत की कार्रवाई के विरोध में पाकिस्तान कुछ नहीं कर सका था। इस बार भी भारत कोई बड़ी से बड़ी कार्रवाई तो पाकिस्तान बदले में कुछ न कर सके। पाकिस्तान कुछ करे तो विश्व के देशों में संदेश जाए कि अब देश के तौर पर पाकिस्तान ने गलती की है।फिर पाकिस्तान के खिलाफ भारत जो कुछ करे वह दुनिया के देशों को लगे कि भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ जो कुछ किया है, वह गलत नहीं है।पीएम मोदी ने मंगलवार को पहलगाम में आतंकी हमले के बदले के लिए देश की तीनों सेनाओं को खुली छूट दे दी है। तीनों सेनाओं की बैठक में खुली छूट देने के बाद अब आतंकवाद को करारा जवाब देने के लिए क्या करना है, कब करना है और कैसे करना है। इसका फैसला तीनों सेनाएं करेंगी।पीएम मोदी ने उच्चस्तरीय रणनीतिक बैठक में देश की सेनाओं की सामरिक क्षमता पर पूरा भरोसा जताते हुए कहा है कि आतंकवाद को जवाब देना हमारा दृढ़ राष्ट्रीय संकल्प है। पीएम मोदी ने साफ कहा है कि पहलगाम में हमले के लिए जिम्मेदार आतंकियों व उनके संरक्षकों को किसी कीमत पर नहीं छोड़ेंगे,भले ही वह कहीं पर भी हों। पीएम मोदी ने उच्चस्तरीय बैठक में पाकिस्तान का नाम नहीं लिया है, उन्होंने हमेशा आतंकवाद को और आतंकवादियों को पनाह देने वालों को करारा जवाब देने की बात कही है।इससे साफ है को भारतीय सेना आने वाले दिनों में जो भी कार्रवाई करेगी वह आतंकवाद को जवाब देने के लिए की जाएगी। इससे फायदा यह होगा कि पाकिस्तान भारत पर यह आरोप नहीं लगा पाएगा कि भारत ने पाकिस्तान पर हमला किया है। पाकिस्तान पर हमला नहीं किया है इसलिए उसे भारत के खिलाफ किसी तरह की कार्रवाई नहीं कर सकेगा। पाकिस्तान भारत क्या कार्रवाई करने वाला है, इसे लेकर जितना परेशान है।उससे ज्यादा देश की प्रमुख विपक्षी पार्टी कांग्रेस भी बहुत परेशान है। कांग्रेस को डर है कि सरकार पाकिस्तान के खिलाफ कुछ भी करेगी तो वह उसका राजनीतिक फायदा आने वाले समय में बिहार सहित अन्य राज्यों में होने वाले चुनाव में उठाएगी।कांग्रेस को मालूम है कि पिछली बार जब भारत की सेना ने एयर स्ट्राइक की थी तो इसका फायदा भाजपा को चुनाव में हुआ था। पीएम मोदी ने उस वक्त कहा था कि हमारी सरकार घर में घुसकर मारने वाली सरकार है। हमारी सरकार ही देश की रक्षा के लिए वह सब कर सकती है जो दूसरे राजनीतिक दलों की सरकार नहीं कर सकती। कांग्रेस ने इस बार पिछली बार की तरह गलती नहीं की है। पिछली बार तो कांग्रेस नेताओं ने एयर स्ट्राइक के सबूत मांगे थे। जनता को यह बताने की कोशिश की थी कि सरकार ने कुछ नहीं किया है। इस बार कांग्रेस ने पिछले बार की तरह सरकार से अलग नहीं है, वह पाकिस्तान व आतंकवाद के खिलाफ होने वाली कार्रवाई के लिए सरकार के साथ खड़ी है। यानी इस बार कांग्रेस की कोशिश है कि पाकिस्तान पर हमले की कार्रवाई का भाजपा अकेले लाभ न उठा ले।इसका फायदा कांग्रेस को भी मिले।ऐसा करना है तो कांग्रेस को पाकिस्तान के खिलाफ होने वाली कार्रवाई की तैयारी को लेकर चुप रहना चाहिए कुछ नहीं बोलना चाहिए।कांग्रेस अध्यक्ष खरगे सहित कई नेता चुप नहीं हैं, आए दिन पीएम मोदी की आलोचना कर रहे हैं कि वह सर्वदलीय बैठक में नहीं आए।वह बिहार में चुनावी सभा को संबोधित करने चले गए। कांग्रेस नेता की योजना थी कि पीएम सर्वदलीय बैठक में आते तो उनसे कई सवाल पूछे जाते, कहीं पीएम चूक जाते तो उसको मुद्दा बनाते। पीएम मोदी कांग्रेस की रग रग से वाकिफ है, इसलिए वह सर्वदलीय बैठक में नहीं गए।बिहार गए और देश के लोगों के साथ ही विदेश में रहने वालों को संदेश दिया कि पहलगाम के दोषी लोगों को छोड़ा नहीं जाएगा। पहलगाम मामले में सब कुछ पीएम मोदी कर रहे है,इसलिए कांग्रेस भी चाहती है कि वह भी इस मामले में कुछ करती हुई दिखाई दे इसलिए उसने सर्वदलीय बैठक बुलाने के बाद संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग की है।कांग्रेस सर्वदलीय बैठक में तो पीएम मोदी से कोई सवाल नहीं पूछ सकी क्योंकि वह आए नहीं। कांग्रेस संसद का विशेष सत्र इसीलिए चाहती है कि वह जनता को बता सके कि पीएम मोदी की तरह आतंकवादियों पर कार्रवाई के पक्ष में वह भी है और वह भी जनता की तरह कड़ी व बड़ी कार्रवाई चाहती है।कांग्रेस सर्वदलीय बैठक में तो पीएम मोदी से सवाल नहीं पूछ सकी, उसकी कोशिश होगी की संसद के विशेष सत्र में वह पीएम मोदी सवाल पूछकर जनता को यह बताना चाहेगी की हम भी देश के लिए फिक्रमंद है। हम भी देश की व जनता की सुरक्षा के लिए चिंतित हैं।

आदि शंकराचार्य जयन्ती

आदि शंकराचार्य ने हिन्दू संस्कृति को पुनर्जीवित किया

ललित गर्ग

महापुरुषों की कीर्ति युग-युगों तक स्थापित रहती। उनका लोकहितकारी चिंतन, दर्शन एवं कर्तृत्व कालजयी होता है, सार्वभौमिक, सार्वदैशिक एवं सार्वकालिक होता है और युगों-युगों तक समाज का मार्गदर्शन करता हैं। आदि शंकराचार्य हमारे ऐसे ही एक प्रकाशस्तंभ हैं जिन्होंने एक महान हिंदू धमार्चार्य, दार्शनिक, गुरु, योगी, धर्मप्रवर्तक और संन्यासी के रूप में 8वीं शताब्दी में अद्वैत वेदांत दर्शन का प्रचार किया था। हिन्दुओं को संगठित किया। उन्होंने चार मठों की स्थापना की, जो भारत के विभिन्न हिस्सों में स्थित हैं। आदि गुरु शंकराचार्य हिंदू धर्म में एक विशेष स्थान रखते हैं, उनके विराट व्यक्तित्व को किसी उपमा से उपमित करने का अर्थ है उनके व्यक्तित्व को ससीम बनाना। उनके लिये इतना ही कहा जा सकता है कि वे अनिर्वचनीय है। उन्हें हम धर्मक्रांति एवं समाज-क्रांति का सूत्रधार कह सकते हैं। अपने जन्मकाल से ही शिशु शंकराचार्य के मस्तक पर चक्र का चिन्ह, ललाट पर तीसरे नेत्र तथा कंधे पर त्रिशूल जैसी आकृति अंकित थी, इसी कारण आदि शंकराचार्य को भगवान शिव का अवतार भी माना जाता है। भगवान शिव ने उन्हें साक्षात दर्शन देकर अंध-विश्वास, रूढ़ियों, अज्ञानता एवं पाखण्ड के विरूद्ध जनजागृति का अभियान चलाने का आशीर्वाद दिया। उन्होंने भयाक्रांत और धर्म विमुख जनता को अपनी आध्यात्मिक शक्ति और संगठन युक्ति से संबल प्रदान किया था। उन्होंने नए ढंग से हिंदू धर्म का प्रचार-प्रसार किया और लोगों को सनातन धर्म का सही एवं वास्तविक अर्थ समझाया। आदि शंकराचार्य के अनूठे प्रयासों से ही आज हिन्दू धर्म बचा हुआ है एवं सनातन धर्म परचम फहरा रहा है। शंकराचार्य ने अपने 32 वर्ष के अल्प जीवन में ही पूरे भारत की तीन बार पदयात्रा की और अपनी अद्भुत आध्यात्मिक शक्ति और संगठन कौशल से उस समय के 72 संप्रदायों तथा 80 से अधिक राज्यों में बंटे इस देश को सांस्कृतिक एकता के सूत्र में इस प्रकार बांधा कि यह शताब्दियों तक विदेशी आक्रमणकारियों से स्वयं को बचा सका और अखण्ड बना रहा। ऐसे दिव्य एवं अलौकिक संत पुरुष का जन्म धार्मिक मान्यताओं के अनुसार आठवीं सदी में वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को केरल के कालड़ी गांव में ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम शिवगुरु और माता का नाम आर्यम्बा था। बहुत दिन तक सपत्नीक शिव की आराधना करने के अनंतर शिवगुरु ने पुत्र-रत्न पाया था, अतः उसका नाम शंकर रखा। जब ये तीन ही वर्ष के थे तब इनके पिता का देहांत हो गया। ये बड़े ही मेधावी तथा प्रतिभाशाली थे। छह वर्ष की अवस्था में ही ये प्रकांड पंडित हो गए थे और आठ वर्ष की अवस्था में इन्होंने संन्यास ग्रहण किया था। इनके संन्यास ग्रहण करने के समय की कथा बड़ी विचित्र है। कहते हैं, माता एकमात्र पुत्र को संन्यासी बनने की आज्ञा नहीं दे रही थीं। तब एक दिन नदी किनारे एक मगरमच्छ ने शंकराचार्यजी का पैर पकड़ लिया तब इस वक्त का फायदा उठाते हुए शंकराचार्यजी ने अपने माँ से कहा ह्यमाँ मुझे संन्यास लेने की आज्ञा दो, अन्यथा यह मगरमच्छ मुझे खा जायेगां ह्ल इससे भयभीत होकर माता ने तुरंत इन्हें संन्यासी होने की आज्ञा प्रदान की; और आश्चर्य की बात है कि जैसे ही माता ने आज्ञा दी वैसे ही तुरन्त मगरमच्छ ने शंकराचार्यजी का पैर छोड़ दिया। इन्होंने गोविन्द नाथ से संन्यास ग्रहण किया, जो आगे चलकर आदि गुरु शंकराचार्य कहलाए। आदि शंकराचार्य ने प्राचीन भारतीय उपनिषदों के सिद्धांत और हिन्दू संस्कृति को पुनर्जीवित करने का अनूठा एवं ऐतिहासिक कार्य किया। साथ ही उन्होंने अद्वैत वेदान्त के सिद्धान्त को प्राथमिकता से स्थापित किया। उन्होंने धर्म के नाम पर फैलाई जा रही तरह-तरह की भ्रांतियों को मिटाने का काम किया। सदियों तक पंडितों द्वारा लोगों को शास्त्रों के नाम पर जो गलत शिक्षा दी जा रही थी, उसके स्थान पर सही शिक्षा देने का कार्य आदि शंकराचार्य ने ही किया। आज शंकराचार्य को एक उपाधि के रूप में देखा जाता है, जो समय-समय पर एक योग्य व्यक्ति को सौंपी जाती है। आदि गुरु शंकराचार्य ने हिंदू धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए चार अगल दिशाओं में चार मठों की स्थापना की। भगवद्गीता, उपनिषदों और वेदांतसूत्रों पर लिखी हुई इनकी टीकाएँ बहुत प्रसिद्ध हैं। इन्होंने अनेक विधर्मियों को भी अपने धर्म में दीक्षित किया था। इन्होंने ब्रह्मसूत्रों की बड़ी ही विशद और रोचक व्याख्या की है।

आदि शंकराचार्य ने हिन्दुओं को संगठित करने के लिए सबसे पहले दक्षिण दिशा में तुंगभद्रा नदी के तट पर श्रृंगेरी मठ की स्थापना की। यहां के देवता आदिवाराह, देवी शारदाम्बा, वेद यजुर्वेद और महावाक्य ह्यअहं ब्रह्मस्मिह्ल है। सुरेश्वराचार्य को मठ का अध्यक्ष नियुक्त किया। इसके बाद उन्होंने उत्तर दिशा में अलकनंदा नदी के तट पर बद्रिकाश्रम (बद्रीनाथ) के पास ज्योतिर्मठ की स्थापना की जिसके देवता श्रीमन्नारायण तथा देवी श्रीपूर्णगिरि हैं। यहां के संप्रदाय का नाम आनंदवार, वेद अर्थवेद तथा महावाक्य ह्यअयमात्मा ब्रह्मह्ल है। मठ का अध्यक्ष तोटकाचार्य को बनाया। पश्चिम में उन्होंने द्वारकापुरी में शारदा मठ की स्थापना की जहां के देवता सिद्धेश्वर, देवी भद्रकाली, वेद, सामवेद और महावाक्य ह्यतत्वमसिह्ल है। इस मठ का अध्यक्ष हस्तमानवाचार्य को बनाया। उधर पूर्व दिशा में जगन्नाथ मठ, जहां की देवी विशाला, वेद ऋग्वेद और महावाक्य ह्यप्रज्ञान ब्रह्मह्ल है। यहां उन्होंने हस्तामलकाचार्य को मठ का अध्यक्ष बनाया। इस प्रकार शंकाराचार्य ने अपने सांगठनिक कौशल से संपूर्ण भारत को धर्म एवं संस्कृति के अटूट बंधन में बांधकर विभिन्न मत-मतांतरों के माध्यम से सामंजस्य स्थापित किया।

आठ वर्ष की आयु में चारों वेदों में निष्णात हो गए, बारह वर्ष की आयु में सभी शास्त्रों में पारंगत, सोलह वर्ष की आयु में शांकरभाष्य तथा बत्तीस वर्ष की आयु में शरीर त्याग दिया। ब्रह्मसूत्र के ऊपर शांकरभाष्य की रचना कर विश्व को एक सूत्र में बांधने का प्रयास भी शंकराचार्य के द्वारा किया गया है, जो कि सामान्य मानव से सम्भव नहीं है। शंकराचार्य के दर्शन में सगुण ब्रह्म तथा निर्गुण ब्रह्म दोनों का हम दर्शन कर सकते हैं। निर्गुण ब्रह्म उनका निराकार ईश्वर है तथा सगुण ब्रह्म साकार ईश्वर है। जीव अज्ञान व्यष्टि की उपाधि से युक्त है। तत्त्वमसि तुम ही ब्रह्म हो; अहं ब्रह्मास्मि मैं ही ब्रह्म हूं; अयामात्मा ब्रह्म यह आत्मा ही ब्रह्म है; इन बृहदारण्यकोपनिषद् तथा छान्दोग्योपनिषद वाक्यों के द्वारा इस जीवात्मा को निराकार ब्रह्म से अभिन्न स्थापित करने का प्रयत्न शंकराचार्यजी ने किया है। ब्रह्म को जगत के उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय का निमित्त कारण बताया हैं। ब्रह्म सत (त्रिकालाबाधित) नित्य, चैतन्यस्वरूप तथा आनंद स्वरूप है। ऐसा उन्होंने स्वीकार किया है। जिस युग में आदि शंकराचार्य ने जन्म लिया उस समय देशी-विदेशी प्रभावों के दबाव में भारतीय संस्कृति संक्रमण के दौर से गुजर रही थी और उसका पतन आरंभ हो गया था। उन्होंने भयाक्रांत और धर्म विमुख जनता को अपनी आध्यात्मिक शक्ति और संगठन युक्ति से संबल प्रदान किया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ह्यआदि शंकर जन्म भूमि क्षेत्रमह्ल में प्रार्थना करते हुए कहा कि आने वाली पीढ़ियां संत-दार्शनिक आदि शंकराचार्य द्वारा हमारी संस्कृति की रक्षा में दिए योगदान की ऋणी रहेंगी।

उन्होंने भारत के हर कोने में वेद-वेदांत का प्रसार कर सनातन परंपरा को सशक्त एवं सुदृढ़ किया। दिव्य ज्ञान से आलोकित उनका संदेश देशवासियों के लिए सदैव पथ-प्रदर्शक बना रहेगा। पूर्व राष्ट्रपति एवं दार्शनिक डॉ. राधाकृष्णन ने उन्हें प्राचीन परंपरा का भाष्यकार आचार्य बताते हुए लिखा है कि देश के अन्य भाष्यकारों की तरह अपने अध्ययन में उन्होंने कभी भी किसी प्रकार की मौलिकता का दावा नहीं किया। भारत में आदि शंकराचार्य के प्रयास से एक ऐसे आंदोलन का आविर्भाव हुआ जो सनातन वैदिक धर्म को उसकी अस्पष्टताओं और असंगतियों से निकालकर स्पष्ट तथा सर्वसाधारण के लिए स्वीकार्य बनाना चाहता था। उनकी शिक्षा का आधार उपनिषद थे। उनके द्वारा स्थापित मठों की उपासना पद्धतियां सरल है। वेदांत के विरोधियों से शास्त्रार्थ करने के उनके उत्साह के कारण देश के विभिन्न दार्शनिक केंद्रों में जो जड़ता आई थी उनमें एक नए विचार-विमर्श की प्रेरणा आरंभ हुई। शंकर द्वारा स्वीकृत दर्शन तथा संगठन बौद्धों के दर्शन और संगठन से मिलते-जुलते थे। आदि शंकराचार्य ने भारत में बढ़ते विभिन्न मतों पर उन्हीं की पद्धति से अपनी वैचारिक श्रेष्ठता सिद्ध की और सनातन वैदिक धर्म की पुनरुत्थान किया।

राशिफल

मेष आज का दिन आपके लिए उत्तम रूप से फलदायक रहने वाला है। संतान किसी प्रतियोगिता में सफलता हासिल कर सकती है। नौकरी में कार्यरत लोगों को काम ना मिलने से उनका मन थोड़ा परेशान रहेगा। आप परिवार के सदस्यों के साथ कुछ समय मौज-मस्ती करने में व्यतीत करेंगे। आपको एक साथ कई काम हाथ लगने से आपकी व्याग्रता बढ़ सकती है। आप यदि कहीं घूमने-फिरने जाएं, तो अपने माता-पिता से आशीर्वाद लेकर जाएं।

वृषभ आज का दिन आपके लिए इनकम को बढ़ाने वाला रहेगा। भाग्य का आपको पूरा साथ मिलेगा। आपको बिजनेस में कामों से भी इनकम हो सकती है। आपका कोई कानूनी मामला सुलझेगा जो आपको खुशी देगा। विद्यार्थी अपनी पढ़ाई-लिखाई में आ रही समस्याओं को लेकर अपने गुरुजनों से बातचीत कर सकते हैं। माताजी से आप किसी जरूरी काम को लेकर बातचीत कर सकते हैं और आपकी सेहत पहले से बेहतर रहेगी।

मिथुन आज का दिन आपके लिए लंबे समय से रुके हुए कामों को पूरा करने के लिए रहेगा। आपके साहस और पराक्रम में वृद्धि होगी। परिवार में किसी सदस्य को नई नौकरी मिलने से कहीं बाहर जाना पड़ सकता है। आपको अपने सहकर्मियों का पूरा साथ मिलेगा। छोटे बच्चे आपसे किसी चीज की फरमाइश कर सकते हैं। आपको अपने बॉस से कोई भी ऐसी बात नहीं बोलनी है, जोकि उन्हें बुरी लगे। जो लोग नया व्यवसाय करने की सोच रहे हैं, उनके लिए आज का दिन अच्छा रहेगा।

कर्क आज का दिन आपके लिए वाणी और व्यवहार पर संयम बनाए रखने के लिए रहेगा। जीवनसाथी को किसी नई नौकरी की प्राप्ति हो सकती हैं। आप अपने परिवार में छोटे बच्चों के साथ कुछ समय मौज-मस्ती करने में व्यतीत करेंगे। आपको अपने मित्रों का पूरा सहयोग मिलेगा। आप किसी से कोई जरूरी जानकारी शेयर करने से बचें। आपको राजनीति में सोच-समझकर कदम बढ़ाना होगा। आपको यदि किसी दूसरी नौकरी का ऑफर आ रहा है, तो आप उसमें बहुत ही सोच समझकर अमल करें।

सिंह आज का दिन आपके लिए जल्दबाजी में कोई निर्णय लेने से बचना होगा। आप अपनी सोच में सकारात्मकता बनाए रखें और संतान आपसे किसी चीज की फरमाइश कर सकती है, जिसे आपको सोच समझकर पूरा करना होगा। नौकरी में कार्यरत लोगों को कोई बड़ी जिम्मेदारी मिल सकती है। जीवनसाथी को लेकर आप कहीं बाहर कर सकते हैं। आपकी कोई प्रिय वस्तु यदि खो गई थी, तो उसके भी आपको मिलने की संभावना है। आपको कोई जोखिम लेने से बचना होगा।

कन्या आज का दिन आपके लिए खर्चो से भरा रहने वाला है। आपको किसी भरोसेमंद व्यक्ति से धोखा मिल सकता है, जिससे आपको कोई भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है। आपको सरकारी योजनाओं में धन लगाना बेहतर रहेगा। आपको अपने पिताजी की सेहत को लेकर भी कोई लापरवाही नहीं करनी है। आपको भाई-बहनों का भी पूरा साथ मिलेगा। परिवार में किसी मांगलिक कार्यक्रम का आयोजन हो सकता है।

तुला आज का दिन आपके लिए व्यस्तता भरा रहने वाला है। संतान आपकी उम्मीदों पर खरी उतरेगी। परिवार में किसी सदस्य से आपको कोई खुशखबरी सुनने को मिल सकती है। आपके घर किसी नये मेहमान का आगमन हो सकता है। विद्यार्थियों को बौद्धिक व मानसिक बौझ से छुटकारा मिलेगा। आपको अपने जीवनसाथी से काम को लेकर बातचीत कर सकते हैं। आप यदि कोई इंवेस्टमेंट करने की सोच रहे हैं, तो उसमें किसी अनुभवी व्यक्ति से सलाह लिए बिना न करें।

वृश्चिक आज का दिन आपके लिए किसी नई संपत्ति की प्राप्ति के लिए रहेगा। ससुराल पक्ष से भी आपको मान-सम्मान मिलेगा। आपका डूबा हुआ धन आपको मिलने की संभावना है, लेकिन आप यदि बिजनेस में किसी के साथ कोई डील फाइनल करें, तो आप उस पर पूरा ध्यान दें, क्योंकि आपके साथ कोई धोखा होने की संभावना है। आपको किसी अजनबी के बातों में आने से बचना होगा। शेयर मार्केट में इन्वेस्टमेंट करना आपको अच्छा लाभ देगा।

धनु आज का दिन आपके लिए खुशनुमा रहने वाला है। आपको अपने किसी मित्र की ओर से कोई उपहार मिल सकता है। आप अपने समय का सदुपयोग करें। आपको किसी सामाजिक आयोजन में भाग लेने का मौका मिलेगा। आपके कामों की गति भी तेज रहेगी। आप किसी जरूरतमंद व्यक्ति की मदद के लिए भी आगे आएंगे। आपको अपने किसी सहयोगी की कोई बात बुरी लग सकती है। तरक्की की राह में आ रही बाधाएं दूर होंगी। बिजनेस में आप किसी के साथ पार्टनरशिप ना करें।

मकर आज का दिन आपके लिए शीघ्रता और भावुकता में निर्णय लेने से बचने के लिए रहेगा। आप किसी नई नौकरी को ज्वाइन कर सकते हैं और बिजनेस में आप अपनी योजनाओं से बिल्कुल छेड़छाड़ ना करें, नहीं तो वह आपकी समस्याओं को ही बढ़ाएंगी। घूमने-फिरने के दौरान आपको कोई महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होगी। आपको पूरा सहयोग मिलेगा, लेकिन आप अपने खान-पान में लापरवाही बिल्कुल ना करें, नहीं तो आपकी पेट संबंधित समस्याएं बढ़ सकती हैं।

कुंभ आज का दिन आपके लिए सकारात्मक परिणाम लेकर आएगा। जीवनसाथी आपके कामों में आपका पूरा साथ देंगे। भगवान की भक्ति में आपका खूब मन लगेगा और आपकी इनकम के सोर्स भी बढ़ेंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति भी पहले से बेहतर होगी। आपको यदि काम को लेकर कोई समस्या थी, तो वह भी दूर होगी। प्रेम जीवन जी रहे लोगों का अपने साथी के ऊपर विश्वास और गहरा होगा। आपको किसी पारिवारिक मामले को धैर्य और संयम रखकर सुलझाने की आवश्यकता है।

मीन आज आपको अपनी सेहत के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है। कार्यक्षेत्र में आपके कुछ नए विरोधी उत्पन्न हो सकते हैं। आप लोगों से अपने काम से काम मतलब रखें, तो आपके लिए बेहतर रहेगा। ससुराल पक्ष का कोई व्यक्ति आपसे धन उधार मांग सकता है, जिससे आपके आपसी रिश्ते खराब हो सकते हैं। आपको अपने किसी परिजन से कोई खुशखबरी सुनने को मिल सकती है। आप संतान के साथ कुछ समय व्यतीत करेंगे.

विश्लेषण

नेताओं की देशभक्ति की अग्निपरीक्षा सेना में बेटा भेजो, पेंशन लो!

डॉ. सत्यवान सौरभ

भारत में एक बार विधायक या सांसद बन जाना आजीवन पेंशन की गारंटी बन चुका है, चाहे उनका संसदीय रिकॉर्ड शून्य क्यों न हो। वहीं, सीमाओं पर तैनात सैनिक हर रोज जान जोखिम में डालते हैं, लेकिन उनके परिवारों को न्यूनतम सुविधाएं भी संघर्ष से मिलती हैं। सवाल उठता है क्या नेताओं की देशभक्ति सिर्फ भाषणों और नारों तक सीमित है? क्यों नहीं उनके बेटे-बेटियां सेना में भर्ती होते? अगर आम जनता अपने बच्चों को देश सेवा के लिए भेज सकती है, तो नेता सिर्फ 'वोट' नहीं, 'बलिदान' भी दें। वक्त आ गया है कि नेताओं की पेंशन को सेना सेवा से जोड़ा जाए झ्र ताकि देशभक्ति सिर्फ मंच की बातें न रह जाए, बल्कि जीने का सच्चा प्रमाण बने।

पेंशन नहीं, पराक्रम दोः नेताओं की देशभक्ति का असली टेस्ट देशभक्ति का जोर जब चुनावी भाषणों में सिर चढ़कर बोलने लगे और हर गली-चौराहे पर तिरंगे का रंग दिखने लगे, तब हमें थोड़ा रुककर यह सोचना चाहिए कि यह प्रेम किसके लिए है देश के लिए या कुर्सी के लिए? क्योंकि जिनके मुँह में हर पल 'भारत माता की जय' और 'वंदे मातरम्' है, उनके बच्चे किसी इंटरनेशनल स्कूल में पढ़ते हैं, विदेश में नौकरी करते हैं, और कभी गलती से भी सीमा की तरफ नहीं देखते। लेकिन वही नेता, जब जनता से त्याग और बलिदान माँगते हैं, तो आत्मा काँप जाती है। भारत में एक बार विधायक या सांसद बन जाने का मतलब है झ्र रिटायरमेंट सेट है भाई! एक बार कुर्सी मिली, तो ज़िंदगीभर पेंशन, बंगला, सुरक्षा, गाड़ी, ड्राइवर, और 'माननीय' की उपाधि मुफ्त में। चाहे संसद में आपने एक भी सवाल न पूछा हो, चाहे सदन की कार्यवाही में सिर्फ झपकी ली हो, चाहे जनता आपको अगले चुनाव में बाहर का रास्ता दिखा दे झ्र पेंशन मिलती ही मिलती है! क्या आपने कभी सुना कि एक सैनिक, जो सियाचिन में तैनात था और तीन साल में घर आया, उसे जीवन भर की पेंशन मिल गई हो? नहीं ना? उसे हर सेवा वर्ष का हिसाब देना पड़ता है। उसे शहीद होने पर भी 'मुआवजे' की फाइलें घूमती हैं। देशभक्ति की बात करते समय नेता अक्सर कहते हैं झ्र हम तो देश के लिए जान देने को तैयार हैं! पर यह 'हम' कौन है? उनके बच्चे कहाँ हैं? क्यों नहीं कोई 'माननीय पुत्र' सीमा पर तैनात है? क्यों नहीं कोई 'राजकुमारी' मेडिकल कोर में है? सच्चाई यह है कि ये नेता देशभक्ति को अपनी राजनीतिक दुकान के प्रमोशनल पोस्टर की तरह इस्तेमाल करते हैं, और उनके बच्चे उस दुकान से मुनाफा उठाते हैं। अगर देश में जनता को मुफ्त राशन के लिए आधार-OTP देना पड़ता है, तो नेता की पेंशन के लिए भी एक शर्त होनी चाहिए झ्र पेंशन तभी मिलेगी, जब आपके परिवार का कोई सदस्य सेना में सेवा देगा। कल्पना कीजिए क्या दृश्य होगाः एक विधायक के बेटे की यूनिफॉर्म की पहली प्रेस हो रही है, एक सांसद की बेटी बूट पहन रही है, एक मंत्री का पोता हथियार चलाने की ट्रेनिंग ले रहा है। क्या तब उनके बयानों में सच्ची देशभक्ति नहीं दिखेगी? देश की सबसे कठिन सेवा झ्र सेना की सेवा झ्र को गरीब, मध्यम वर्ग के बच्चे निभाते हैं। वो जिनके पास न जुगाड़ है, न सुरक्षा। वो भर्ती में दौड़ते हैं, दौड़ते हुए मर भी जाते हैं। कोई कैमरा नहीं आता, कोई चैनल ब्रेकिंग न्यूज नहीं दिखाता। दूसरी ओर नेता के बच्चे अगर विदेश में शराब पीते पकड़े जाएं, तो भी नेता कहता है बेटा थोड़ा भटक गया, अब अमेरिका भेज रहे हैं पढ़ने। भाई, अगर 'भटकने' की सजा विदेश है, तो 'सीधे' लोगों को सजा क्यों? हर बार चुनाव के समय सेना की तस्वीरें, सैनिकों की कहानियाँ, शौर्य गाथाएं पोस्टरों पर होती हैं। सर्जिकल स्ट्राइक का श्रेय लेने में हर दल आगे है, लेकिन उस ऑपरेशन में जान गंवाने वाले सैनिक का नाम किसी को याद नहीं। नेताओं को सेना सिर्फ इमोशनल वोट बैंक लगती है झ्र जब जरूरत हो, तो उनकी वर्दी का इस्तेमाल करो, जब चुनाव जीत जाओ, तो उनका हाल पूछना भी गुनाह मानो।

अगर सच में ये देशभक्ति दिल से है, तो नेताओं को पेंशन की जगह एक प्रमाण पत्र देना चाहिए कि उनके परिवार से कोई सदस्य सेना में सेवा दे रहा है या दे चुका है। ये एक नया कानून होना चाहिए सिर्फ पेंशन के हक के लिए नहीं, बल्कि असली देशप्रेम का सबूत देने के लिए।

एक बार एक नेता जी भाषण दे रहे थे झ्र अगर पाकिस्तान आँख उठाएगा, तो हम आँख निकाल लेंगे!

एक नौजवान खड़ा हुआ और बोला झ्र आपका बेटा कौन-सी यूनिट में है साहब?

नेता जी मुस्कराए झ्र वो तो इंजीनियरिंग कर रहा है, विदेश जाना है उसे...

जनता हँसी नहीं, रोई। क्योंकि देशभक्ति अब सिर्फ 'नारा' बन गई है, 'नियति' नहीं। देशभक्ति अगर सिर्फ भाषणों तक सीमित रह जाए, तो वह 'वोटबैंक की दुकान' बन जाती है। जब तक नेता और उनका परिवार उस देशभक्ति को जीते नहीं, तब तक हमें उनके भाषणों पर तालियाँ नहीं, सवाल उठाने चाहिए। नेताओं को पेंशन से ज्यादा जिम्मेदारी चाहिए, और उनके बच्चों को भाषण से ज्यादा बूट। देश को सिर्फ जनता नहीं, नेता भी बराबर दें त्याग, परिश्रम और बलिदान।

देशभक्ति भाषणों से नहीं, भागीदारी से साबित होती है। जब तक नेताओं के बच्चे सेना की वर्दी नहीं पहनते, तब तक उनके ह्यबलिदानह्ल के बोल खोखले लगते हैं। पेंशन कोई सम्मान नहीं, एक ज़िम्मेदारी होनी चाहिए झ्र जो तभी मिले, जब परिवार भी राष्ट्र सेवा में उतरे। आम नागरिक के टैक्स पर ऐश करना बंद हो, अब बारी है नेता भी हिस्सा लें झ्र सरहद पर, जमीन पर, और ज़िम्मेदारी में। वर्ना जनता सिर्फ सुनती रहेगी, और देश सेवा का बोझ उठाते रहेंगे वही, जिनके पास न ताकत है, न पहचान झ्र सिर्फ जुनून है।

वैशाख शुक्ल पंचमी (2मई) जयंती पर विशेष

भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण के अधिष्ठाता संस्कृत-संस्कृति के संवर्धक आद्यगुरु शंकराचार्य

सुशील कुमार 'नवीन '

भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण के अधिष्ठाता, संस्कृत और संस्कृति के संवर्धक राष्ट्रभक्त आद्यगुरु शंकराचार्य की शुक्रवार दो मई को जयंती है। उनका जन्म 788 ईस्वी में वैशाख माह शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को हुआ था। बाल्यकाल में ही उन्होंने अपनी विलक्षण प्रतिभा को प्रदर्शित कर दिया था। आठ वर्ष की उम्र में ही वे वेदों के ज्ञान में पारंगत हो चुके थे। संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए संपूर्ण भारत की यात्रा कर चारों दिशाओं में चार पीठों की स्थापना की। ये पीठ गोवर्धन पुरी (जगन्नाथ पुरी), श्रृंगेरी (रामेश्वरम्), शारदा(द्वारिका) और ज्योतिर्मठ (बद्रीनाथ धाम) के नाम से हम सब जानते हैं। अद्वैत वेदांत दर्शन को स्थापित करने के साथ-साथ संस्कृत भाषा और सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देने में उनका योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता। इनका जन्म स्थान केरल माना जाता है। पिता का नाम शिवगुरु और माता का नाम आर्यम्बा था। उनका मूल नाम शंकर था, लेकिन उन्हें श्रीशंकराचार्य के रूप में प्रसिद्धि मिली। पांच वर्ष की उम्र में यज्ञोपवीत संस्कार करवाकर कर उन्हें विद्याध्ययन हेतु भेजा गया। दो वर्ष में ही षडंग सहित वेदों का अध्ययन पूर्ण कर वे घर वापस आ गये। उसी समय उनके अंदर संन्यास लेने की इच्छा प्रबल हो उठी थी, पर माता ने उन्हें इसके लिए स्पष्ट रूप से इनकार कर दिया। शंकर मातृभक्त थे, इसलिए उनकी अनुमति के बिना वे सन्यास नहीं लेना चाहते थे। वो कहते हैं कि जो भाग्य में लिखा गया है वो सही समय पर होकर रहता है। जिस संन्यास के लिए शंकर की माता का स्पष्ट इनकार था, परिस्थिति ऐसी बनी कि उन्हें उसके लिए शंकर को अनुमति देनी पड़ी। बताते हैं कि एक दिन वे माता के साथ नदी तट पर गये, वहां स्नान करते समय एक ग्राह (मगरमच्छ) ने उनका पैर पकड़ लिया। वह उन्हें पानी में अंदर की तरफ खींचने लगा। ऐसी स्थिति में उनकी माता सहायता के लिये चिल्लाने लगीं। उसी समय उन्होंने माता से कहा ' यदि आप मुझे सन्यास लेने की आज्ञा दें तो यह ग्राह मुझे छोड़ देगा।' पुत्र मोह में माता ने फौरन हां कर दी। विधि का विधान देखिए माता के संन्यास की हामी भरते ही ग्राह ने उनका पैर छोड़ दिया। माता से अनुमति लेकर उन्होंने आठ वर्ष की अवस्था में गृह त्याग दिया। माता ने उनसे यह यह वचन अवश्य लिया कि उनके अंतिम समय में वे अवश्य उपस्थित होंगे। गृह त्यागने के बाद वे नर्मदा नदी के तट पर स्थित स्वामी गोविन्द भगवत्पाद के आश्रम में पहुंचे और उनसे दीक्षा ग्रहण की। बहुत कम समय में ही उन्होंने गुरू के सानिध्य में ज्ञान प्राप्त लिया। इनकी योग्यता से खुश होकर गुरू ने इन्हें काशी जाने एवं वेदान्त सूत्र पर भाष्य लिखने की आज्ञा दी। काशी आने पर उनकी ख्याति सर्वत्र फैलने लगी। लोग इनका शिष्यत्व ग्रहण करने लगे। इनके सर्वप्रथम शिष्य सनन्दन हुए, जो पद्मपादाचार्य के नाम से प्रसिद्ध हुए। बाल्यकाल से ही असाधारण विद्वत्ता को प्राप्त करने वाले शंकर ने भारतीय दर्शन और वेदांत के महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अध्ययन किया। खासकर अद्वैत वेदांत पर उनका विशेष ध्यान रहा। उन्होंने अपने जीवन के दौरान भारत के विभिन्न भागों का भ्रमण कर विविध धार्मिक वाद-विवादों में हिस्सा लिया। उन्होंने वेदांत के सिद्धांतों की व्याख्या की और अनेक शास्त्रीय ग्रन्थों की टीका तथा व्याख्या की। भारतीय साहित्य और धार्मिक संस्कृति को एक मजबूत आधार प्रदान करने में उनका योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा। उनकी मृत्यु के बाद उनके विचार और सिद्धांतों ने भारतीय धार्मिक और दार्शनिक परंपरा पर अत्यंत प्रभाव डाला। उनके द्वारा स्थापित वेदांत के सिद्धांत आज भी विश्वसनीय और महत्वपूर्ण माने जाते हैं। उनके द्वारा स्थापित अद्वैत वेदान्त के सिद्धांतों ने भारतीय समाज को एकता और एकात्मता की दिशा में अग्रसर किया। उनके अनुसार जगत में अनंतता की दिशा में सत्य एक है और सभी जीवों में एक ही आत्मा का आभास होता है। उन्होंने समाज में धार्मिक समरसता और सहयोग को प्रोत्साहित करने के साथ धर्म, भाषा, और क्षेत्रीय भेदों को दूर करने का भी संदेश दिया। वे सभी भारतीयों को एक सामान्य आधार पर जोड़कर राष्ट्रीय एकता और सहयोग को बढ़ावा देने के पक्षधर थे। अद्वैत वेदांत के सिद्धांतों के माध्यम से विभिन्न धार्मिक और जातिवादी भेदों का खंडन करने में भी वे पीछे नहीं रहे। उनका मुख्य सिद्धांत था कि ब्रह्म सत्य है, जगत मिथ्या है, और आत्मा ब्रह्म है। उनके द्वारा शिक्षित अनुयायियों ने भी भारतीय समाज में समरसता, सामंजस्य, और सहयोग की भावना को बढ़ावा दिया। उनके विचार और संदेश राष्ट्रीय एकता और समरसता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उनके द्वारा स्थापित दार्शनिक सिद्धांत ने भारतीय समाज में सामाजिक और राष्ट्रीय एकता की भावना को

इंद्रावती नदी सूखी तो बस्तरवासी होंगे पलायन को मजबूर मांग पूरी होने तक जारी रहेगी कांग्रेस की लड़ाई:सुशील मौर्य

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

जगदलपुर, 2 मई। आज संभाग मुख्यालय राजीव भवन में प्रेसवार्ता का आयोजन किया गया जिसे बस्तर जिला कांग्रेस कमेटी शहर अध्यक्ष सुशील मौर्य जी के द्वारा संबोधित किया गया।

पत्रकारवार्ता को संबोधित करते हुए शहर कांग्रेस अध्यक्ष श्री मौर्य ने कहा बस्तर की जीवनदायिनी इंद्रावती नदी को बचाने बस्तर से छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री दीपक बैज जी के नेतृत्व में समस्त कांग्रेसजन, आमजन व किसानों ने 40 किलोमीटर की पदयात्रा कर तपती धूप में कलेक्ट्रेट का घेराव किया गया...वही दूसरी ओर बस्तर से ही भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री किरण देव ने इंद्रावती बचाने को लेकर कोई भी सकारात्मक पहल नहीं की और न ही प्रदेश अध्यक्ष द्वारा सरकार पर कोई दबाव बनाया गया जिससे अब आमजन को यह स्पष्ट हो चुका है कि कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज ही बस्तर हित में लड़ने वाले नेता हैं किंतु दूसरी ओर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सिर्फ विघ्न डालने का कार्य करते रहे.. बावजूद यह पदयात्रा ऐतिहासिक रही। मौर्य ने आगे बताया प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज ने बस्तर में जल समस्या इंद्रावती नदी में जलधारा जलप्रवाह से निदान करने का सार्थक प्रयास किया कांग्रेस की सरकार में देउरगांव की छक्क तैयार करवाने का कार्य किया.. भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बस्तर के कोटे से, जल संसाधन व वनमंत्री केदार कश्यप और संसद महेश कश्यप सिर्फ और सिर्फ कागजों में धारा दिखाने का झूठा सब्जबाग दिखाने का कार्य कर रहे हैं.. उड़ीसा से पानी छोड़ने का झूठा और मानगढ़त व कागजी कार्यवाही का इवेंट करते नजर आते हैं.शहर कांग्रेस अध्यक्ष सुशील मौर्य ने इंद्रावती आगे कहा अगर इंद्रावती नदी सुखी तो बस्तरवासी होंगे पलायन को मजबूर, जब तक मांग पूरी नहीं होती तब तक कांग्रेस की लड़ाई जारी रहेगी,जब तक इंद्रावती नदी में जलप्रवाह शुरू नहीं होती तब तक कांग्रेस की ये संघर्ष भी जारी रहेगी।

प्रभारी महामंत्री मलकीत सिंह गैदु ने प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए कहा कांग्रेस पार्टी भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण देव, जल संसाधन वनमंत्री केदार कश्यप, व सांसद महेश कश्यप से सवाल पूछती है कि डेढ़ साल की सरकार में अपने इंद्रावती नदी के लिए क्या किया!! सिर्फ और सिर्फ इंद्रावती विकास प्राधिकरण को ठंडे बस्ते में डालने का कार्य किया है..इंद्रावती विकास प्राधिकरण में अभी तक ताला क्यों लगा हुआ है सरकारी नियुक्तियां क्यों सरकार करवा नहीं पा रही है... मटनार बैराज पर आगे का कार्य क्यों नहीं बढ़ रहा है, जोरानाला से छत्तीसगढ़ को 50प्रतिशत पानी मिले इसके लिए भाजपा सरकार उड़ीसा सरकार पर दबाव क्यों नहीं बना रही है...कुल मिलाकर सरकार सत्ता की लोलुपता में पूरी तरह से निष्ठुर हो चुकी है..कांग्रेस पार्टी इंद्रावती को बचाने हर संभव कार्य करेगी.।ग्रामीण अध्यक्ष प्रेमशंकर शुक्ला ने कहा महानदी जलविवाद को लेकर भाजपा सरकार उड़ीसा सरकार के साथ बैठक करती है दूसरी ओर इंद्रावती नदी सुख गई है इसके लिए दबाव क्यों नहीं बना रही है। किसानों की फसलें बर्बाद हो चुकी हैं कांग्रेस की सरकार इंद्रावती को मां का दर्जा देती है इसके महत्व को समझती है बस्तर वासियों के हित को देखते हुए इंद्रावती विकास प्राधिकरण का गठन करती है मटनार और बैराज का प्रोजेक्ट लाने का कार्य करती है दूसरी ओर 15 साल की रमन सरकार और 2003 में तत्कालीन भाजपा सरकार ने जलसंधि समझौते को लेकर ग्रीष्म ऋतु में 50-50 प्रतिशत इंद्रावती नदी में पानी छोड़े उस पर दबाव क्यों नहीं बनाती है 15 साल की रमन सरकार में भी गठन क्यों नहीं किया गया था । पूर्व शहर कांग्रेस अध्यक्ष राजीव शर्मा ने कहा बस्तर की प्राणदायिनी इंद्रावती नदी पूरी तरह से सूख चुकी है, पिछले कई दिनों से इंद्रावती से सटे किसान इंद्रावती नदी में पानी की मांग को लेकर आंदोलनरत हैं,परंतु डबल इंजन की सरकार किसानों की मांग को अनसुना कर रही है,जल संसाधन मंत्री बस्तर से ही आते हैं भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष बस्तर से हैं जो कि स्वयं जगदलपुर के विधायक हैं वही उड़ीसा में भी भाजपा की सरकार है मटनार बैराज और देउरगांव बैराज को प्रशासनिक स्वीकृति ये सरकार नहीं दे रही है और ना ही ओडिशा सरकार पर खातिगुड़ा डैम से पानी छोड़ने दबाव बनाया जा रहा है कुल मिलाकर भाजपा सरकार सुनने को तैयार नहीं है.. जब तक हमारी मांग पूरी नहीं होती तब तक कांग्रेस का संघर्ष जारी रहेगा इस दौरान निगम के नेता प्रतिपक्ष राजेश चौधरी,उप नेता प्रतिपक्ष कोमल सेना,महिला जिला कांग्रेस अध्यक्ष लता निषाद, महामंत्री जाहिद हुसैन,सुषमा सूता, विक्रम सिंह डांगी, ललिता राव, शुभम् यदु,एस नीला,मौजूद रहे।

एक नजर

मोदी सरकार सुरक्षा मामले में विफल

कांकेर, 2 मई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार हाल के सुरक्षा मामलों में बार-बार विफल रही है। जब देश के नागरिकों की सुरक्षा की जिम्मेदारी निभाने में सरकार असफल होती है, तब लोगों का आक्रोश स्वाभाविक है। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि सरकार अपनी नाकामियों की जवाबदेही लेने के बजाय, विपक्ष पर 'पाकिस्तान की भाषा' बोलने जैसे आरोप लगाकर ध्यान भटकाने की कोशिश कर रही है। यह रवैया बेहद गैर-जिम्मेदाराना और लोकतांत्रिक मूल्यों के विरुद्ध है।देश की जनता यह जानना चाहती है कि आखिर कब तक सुरक्षा चूक और लापरवाही की कीमत आम लोगों की जान से चुकानी पड़ेगी? अगर सरकार के पास ठोस कार्रवाई करने का साहस नहीं है, तो उसे देश की भावना का सम्मान करते हुए कोई निर्णायक कदम उठाना चाहिए – या सत्ता से हट जाना चाहिए।सत्ता में रहकर सवालों से भागना नहीं चलेगा। अगर चूक सरकार की है, तो आलोचना भी उसी की होगी। आज देश को जिम्मेदार नेतृत्व की जरूरत है, बहानेबाजियों की नहीं।

बैठक में खाद्य आपूर्ति से जुड़े पहलुओं पर चर्चा की गई

दंतेवाड़ा, 2 मई । आज कलेक्ट्रेट के सभाकक्ष में कलेक्टर श्री कुणाल दुदावत की अध्यक्षता में खाद्य विभाग एवं भण्डारण निगम की विभागीय समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में जिले के खाद्य आपूर्ति से जुड़े समस्त पहलुओं की विस्तार से समीक्षा की गई। कलेक्टर श्री दुदावत ने जिले में संचालित समस्त उचित मूल्य की दुकानों, गैस एजेंसियों और पेट्रोल पंपों की संख्या की जानकारी मांगी। उन्होंने समर्थन मूल्य पर धान खरीदी केंद्रों की संख्या, अब तक की गई खरीदी एवं आगामी लक्ष्य की भी समीक्षा की।बैठक में उज्ज्वला योजना के अंतर्गत जिलेवार अनुमोदित हितग्राहियों की संख्या, राशन कार्डधारियों की वर्तमान स्थिति, शेष बचे पात्र हितग्राही परिवारों की जानकारी भी तलब की गई। कलेक्टर ने पात्र परिवारों को जल्द से जल्द राशन कार्ड उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। इसके साथ ही स्टेट वेयरहाउसिंग कॉरपोरेशन के गोदामों की भंडारण क्षमता, जिले में खाद्यान्न भंडारण की वर्तमान स्थिति तथा आवश्यक सुधारों पर भी चर्चा की गई। श्री दुदावत ने 'नेल्लानार योजना' के तहत चयनित ग्रामों में रहने वाले ग्रामीण परिवारों को राशन कार्ड एवं उज्ज्वला योजना का लाभ शीघ्र दिलाए जाने के निर्देश अधिकारियों को दिए।कलेक्टर ने समस्त संबंधित विभागों को निर्देशित किया कि योजनाओं का लाभ पात्र हितग्राहियों तक समय पर पहुंचे तथा इसमें किसी प्रकार की लापरवाही न हो।

आईटीआई में 7 अप्रैल को होगा प्लेसमेंट कैम्प का आयोजन

सुकमा, 2 मई (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। सुकमा एवं अन्य जिले के 10वींए 12वीं और स्नातक प्लस बीएडडीएड उत्तीर्ण महिला अभ्यर्थियों के लिए प्लेसमेंट कैम्प का आयोजन किया जा रहा है। कैम्प के माध्यम से शिक्षक सहायक शिक्षक भृत्य रिसेप्शनिस्ट, कंप्यूटर ऑपरेटर और सिक्योरिटी गार्ड पुरुष की भर्ती की जाएगी। जिला रोजगार अधिकारी ने बताया कि निजी क्षेत्र के नियोजक ओओसीए स्मार्ट पाठशाला अंजना बोस महेश्वरी पाराए मलकानगिरी रोड सुकमा में कार्य करने हेतु शैक्षणिक और ग़ैर शैक्षणिक पद पर भर्ती की जायेगी। प्लेसमेंट कैम्प जिला रोजगार एवं स्वरोजगार मार्गदर्शन केन्द्र सुकमा में 7 अप्रैल को पूर्वाह 11 बजे से अपराह्न 3 बजे तक आयोजित की जाएगी। इच्छुक एवं पात्र महिला तथा पुरुष;1 पद अभ्यर्थी अपने समस्त शैक्षणिक दस्तावेज सहित 7 अप्रैल को प्लेसमेंट कैम्प में उपस्थित होकर रोजगार के अवसर का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

महापौर ने शहरवासियों से बोला झूठ,निगम की सामान्य सभा में होगा खुलासा : राजेश चौधरी

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

जगदलपुर, 2 मई। जगदलपुर नगर निगम में नेता प्रतिपक्ष व पार्षद राजेश चौधरी ने शहर में बढ़ती पेयजल समस्या व जलभराव को लेकर जगदलपुर महापौर संजय पांडे पर कड़ी प्रतिक्रिया दी है..श्री चौधरी ने महापौर संजय पांडे पर तंज कसते हुए कहा कि कुछ ही दिन पूर्व में जगदलपुर में हुई तेज बारिश से पूरा शहर जलमग्न हो गया था जिसके कारण शहर के अधिकतर वार्डो व प्रतिष्ठानों में बारिश का पानी घुसने लगा था शहर में जलमग्न की गंभीर समस्या से निजात दिलाने को लेकर भाजपा के महापौर संजय पांडे के पास कोई भी सकारात्मक कार्ययोजना आज पर्यंत तक नहीं बनाई गई है जो कि बेहद गंभीर विषय का मामला है।

नेता प्रतिपक्ष राजेश चौधरी ने आगे कहा कि वहीं जगदलपुर शहर में पेयजल की समस्या दिनों दिन बढ़ते जा रही है शहर के अधिकांश वार्ड में पेयजल की गंभीर समस्या बनी हुई है.. जिसको लेकर नगर निगम महापौर संजय पांडे व उनकी पूरी टीम के पास अभी तक कोई सार्थक प्रयास व योजना नहीं बनाई गई है..कुल मिलाकर महापौर संजय पांडे ने शहर की जनता से सिर्फ झूठ बोलने का ही कार्य किया है कल नगर निगम में होने वाली सामान्य सभा में शहर में पेयजल व जलभराव समस्या को लेकर समस्त कांग्रेस पार्षदों के साथ इसका खुलासा किया जाएगा।

30 घंटे से बिजली बंद

दोरनापाल, 2 मई। मंगलवार को आए तेज हवाओं के बाद बीते 24 घंटे से कई इलाकों में बिजली आपूर्ति ठप्प दोरनापाल में नदी रोड में बीते 30 घंटे से बिजली आपूर्ति ठप है दोरनापाल के विद्युत कर्मचारियों की मेहनत से शहर की अधिकतर लाइन हुई बहाल विद्युत आपूर्ति नदी रोड पर आज भी बहाल नहीं होने की मिल रही खबर बिजली सेवा बहाल नहीं होने की खबर को लेकर नदी रोड के लोगों में भारी आक्रोश।

रात में भी होगा सुधार कार्य

सुकमा, 2 मई। सुकमा कलेक्टर देवेश कुमार ध्रुव ने दोरनापाल में बंद पड़ी विद्युत सेवा पर लिया संज्ञान कलेक्टर ने तत्काल सुकमा से विद्युत कर्मचारियों को दोरनापाल रवाना करने के दिए निर्देश कलेक्टर के निर्देश पर अब रात में भी सुधार कार्य रहेगा जारी।

सुशासन तिहार के माध्यम से मिल रहा समाधान

सुकमा, 2 मई (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में प्रदेश में संचालित सुशासन तिहार आम जनमानस के लिए राहत और विश्वास का प्रतीक बनकर उभरा है। इस अभियान के अंतर्गत अब सरकारी योजनाओं और सेवाओं का सीधा लाभ लोगों तक पहुंच रहा है। कलेक्टर श्री देवेश कुमार ध्रुव के निर्देश पर सुशासन तिहार में प्राप्त आवेदनों का गुणवत्तापूर्ण निराकरण कर इसका लाभ लोगों तक पहुंचाया जा रहा है। सुशासन तिहार के माध्यम से समाधान खुद चलकर दरवाजे पर पहुंच रहा है। इसी क्रम में कृषि विभाग द्वारा सुशासन तिहार में प्राप्त आवेदन पर छिंदगढ़ विकासखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत तालनार में शिविर लगाकर कृषकों को कृषि विभाग अंतर्गत संचालित योजनाओं की जानकारी प्रदान किया गया ।

नगर पालिका अध्यक्ष ने किया नवीन उचित मूल्य दुकान निर्माण के लिए भूमिपूजन

किरंदुल, 2 मई। शहर के वार्ड नंबर 11 में कई वर्षों से उचित मूल्य की दुकान न होने के कारण वार्डवासियों को बहुत से परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था जिसके त्वरित निराकरण हेतु नव निर्वाचित अध्यक्षा श्रीमती रूबी शैलेन्द्र सिंह के द्वारा आज दिनांक 01/05/2025 दिन गुरुवार को वार्ड नंबर 11 चीता कॉलोनी, आंगनबाड़ी के सामने नवीन उचित मूल्य दुकान निर्माण के लिए भूमि पूजन किया गया जिसका लगत लगभग 10.00 लाख है 7 इस दौरान उपाध्यक्ष श्री बबलू हामिद सिद्दकी, पार्षद लक्ष्मी ठाकुर, गिरजा विश्वकर्मा, अमृत टंडन, यशोदा चुन्नम, गोपीनाथ हरिजन, राजकुमार सोनी, लीना सोनी, थॉमस बाबू दुर्गम, गायत्री साहू , इला पटेल, अनिल कुमार मरकाम एवं सीएमओ श्री शशि भूषण महापात्र, इंजीनियरिंग मार्कण्डे सर एवं वार्डवासी उपस्थित थे ।

नक्सल पुनर्वास नीति के तहत आत्मसमर्पित नक्सलियों को मिल रहा प्रशिक्षण

सुकमा, 2 मई (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। जिला प्रशासन सुकमा द्वारा नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में शांति व्यवस्था क़ायम रखने और पुनर्वास की दिशा में निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। कलेक्टर श्री देवेश कुमार ध्रुव के निर्देशन और जिला पंचायत सीईओ श्रीमती नम्रता जैन के मार्गदर्शन में ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (RSETI) के माध्यम से आत्मसमर्पण करने वाले पूर्व माओवादियों को मुख्यधारा में लाने का सार्थक प्रयास किया जा रहा है।नक्सल पुनर्वास नीति के तहत इन युवाओं को कृषि विज्ञान केंद्र सुकमा में कृषि की आधुनिक तकनीकों तथा पशुपालन के नवीन और उत्पादक तरीकों का गहन प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यह प्रशिक्षण उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के साथ-साथ सम्मानजनक जीवन जीने की दिशा में एक सशक्त कदम है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में ड्रिप इरिगेशन, वर्मी कम्पोस्ट, जैविक खेती, सब्जी उत्पादन, डेयरी पालन, मुर्गी पालन और मत्स्य पालन जैसे विषयों पर जानकारी दी जा रही है। साथ ही उद्यमिता विकास के लिए वित्तीय साक्षरता और लघु उद्यम स्थापित करने की प्रक्रिया भी सिखाई जा रही है।कलेक्टर श्री देवेश कुमार ध्रुव ने बताया कि पूर्व माओवादियों को मुख्यधारा में जोड़ना सिर्फ पुनर्वास नहीं, बल्कि एक नवजीवन की शुरुआत है। हमारा प्रयास है कि ये युवा स्वरोजगार से आत्मनिर्भर बनें और समाज के लिए प्रेरणा बनें। आरसेटी के माध्यम से उन्हें व्यावहारिक प्रशिक्षण देकर स्थायी आजीविका के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। इससे रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे और वे समाज की मुख्य धारा में शामिल होंगे। लाइवलीहुड कॉलेज के नोडल अधिकारी सुश्री मधु तेता ने बताया कि 20 आत्मसमर्पित माओवादियों को कृषि एवं पशुपालन से संबंधित प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यह प्रशिक्षण 03 माह तक चलेगा। इसके पश्चात सिलाई मशीन और मोटर ड्राइविंग का भी प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।

कटेकल्याण में निर्माणाधीन पीएचसी भवन का निरीक्षण तुलिका कर्मा ने किया

- गुणवत्ताहीन है निर्माणाधीन स्वास्थ भवन, पूर्ण होने से पहले ही पड़ी दरारे
- शासकीय पैसों का सिर्फ बंदरबाट कर रहे है इंजीनियर - ठेकेदार, मरीजों की कोई परवाह नहीं

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

दन्तेवाड़ा 2 मई। पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष एवं कटेकल्याण से जिला पंचायत सदस्य एक बार फिर से अपने क्षेत्र में स्वास्थ्य विभाग के निर्माणधीन भवन के निरीक्षण पर पहुँची और वहाँ का नज़ारा काफी भयावहः निकला । स्थानीय जनप्रतिनिधियों के साथ जब तुलिका कर्मा ने निरीक्षण किया तो पाया कि यह भवन तो निर्माण होने से पहले ही जजर्र नज़र आ रहा है और अभी से इसमें जगह जगह टूट फुट दिखना चालू हो गया है ।

स्थानीय जनप्रतिनिधियों का इस मामले में साफ रोष नजर आ रहा है कि अगर निर्माण को पूरी गुणवत्ता के साथ नही किया गया तो इस टेंडर को निरस्त कर नए भवन के निर्माण की मांग रखी जायेगी । इस पूरे निरीक्षण के दौरान जब भवन को देखा गया तो एक ही बात समझ आया कि कैसे डीएमएफ फंड और जनता के पैसों का निर्माण एजेंसी और ठेकेदार के द्वारा बन्दरबांट किया जा रहा है । पूर्व में भी जब कटेकल्याण में संचालित स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण किया गया था तब भी यही स्थिति देखने को मिला था और अब जब नए निर्माणाधीन पीएचसी भवन का निरीक्षण किया तो बची हुई उम्मीदों पर भी भ्रष्टाचार का पानी फेर दिया । तुलिका ने कहा कि जब हमें साफ नजर आ रहा है कि इस भवन की हालत जर्जर है तो विभागीय अधिकारियों ने क्यों आंखे बंद कर रखी है। निर्माण एजेंसी जनपद के एसडीओ और अभियंता ने क्या बिना निरीक्षण के ही बिल राशि स्वीकृत कर दी होगी या किसी लालच में आकर इन त्रुटियों को अनदेखा किया जा रहा है । तुलिका ने दो टूक कहा कि निर्माण एजेंसी के अधिकारियों और ठेकेदारो को अब समझ लेना चाहिए कि भ्रष्टाचार करने के तरीकों को छोड़ कर जनता की सेवा करने के तरीके खोजे अन्यथा वो दिन दूर नही जब हम सड़को में उतर कर प्रदशर्न करेंगे और तब तक शांत नही बैठेंगे जब तक सभी जिम्मेदार अधिकारियों पर निष्काशन की कार्यवाही न हो जाये । तुलिका ने सीधा कहा कि हम जनता के स्वास्थ के साथ ये खिलवाड़ को कतई बर्दास्त नही करेंगे । जनता को सही स्वास्थ सेवा मिलना उनका मूलभत अधिकार है और अगर प्रशासन इसमें भी ढिलाई बरतेंगी तो यह कतई बर्दाश्त नही होगा । इस पूरे मामले में तुलिका ने चिंता जाहिर करते हुए कहा सवाल किया है कि भविष्य में जब यहां अस्पताल का संचालन होगा और अगर यह गुणवत्ताहीन भवन मरीज़ों पर ही गिर गयी तो इसका जिम्मेदार कौन होगा।

10 लाख के डाक जीवन बीमा मृत्यु दावा का भुगतान किया गया

कोंडागांव,2 मई। भारतीय डाक विभाग में 140 वर्षों से जारी डाक जीवन बीमा जो भारत की सबसे पुरानी जीवन बीमा का सुरक्षा देने वाली संस्था है। जिला पुलिस में पदस्थ बद्रीनारायण नाग ने वर्ष 2022 में कोंडागांव उप डाकघर से 10 लाख का डाक जीवन बीमा करवाया था। और लगभग 8 महीना पश्चात उनकी आकस्मिक मृत्यु हो गई। नॉमिनी उनकी पत्नी श्रीमती लिलेश्वरी नाग निवासी पुलिस लाइन कोंडागांव ने घटना पश्चात बीमा दस्तावेज को लेकर डाकघर पहुच मृत्यु दावा प्रकरण प्रस्तुत किया जिस पर डाक प्रशासन ने त्वरित कार्यवाही करते हुए बीमा व बोनस की राशि 10 लाख 52 हजार रुपये उनके बचत खाते में हस्तांतरित किये गए। इस पर नॉमिनी श्रीमती लिलेश्वरी नाग ने डाक विभाग के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सभी को डाक जीवन बीमा करने की अपील की है। उप संभागीय निरीक्षक डाक श्री आरएस मिश्रा ने कहा डाक जीवन बीमा प्रत्येक नागरिक को कराना चाहिए डाक जीवन बीमा कर्मचारियों के साथ साथ स्नातक योग्यताधारी भी अब पीएलआई करवा सकते है अधिक जानकारी के लिए नजदीकी डाकघर में सम्पर्क कर सकते है।

तीर्थ दर्शन योजना के तहत दर्शनार्थियों के लिए वाहन सहित नाश्ता, भोजन एवं टेंट व्यवस्था के लिए निविदा आमंत्रित

बीजापुर, 2 मई । समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के क्रियान्वयन अंतर्गत् शासन स्तर से जिला बीजापुर हेतु निर्धारित तीर्थ दर्शन योजना अनुसार वर्ष 2025-26 में बीजापुर जिले के वरिष्ठ नागरिक, विधवा, परित्यक्त महिलाओं तथा दिव्यांगजनों को तीर्थ दर्शन पर भेजने के लिये हितग्राहियों को जिला मुख्यालय बीजापुर से बोर्डिंग स्थल रेल्वे स्टेशन रायपुर ले जाने तथा तीर्थयात्रा पश्चात् रेल्वे स्टेशन रायपुर से जिला मुख्यालय बीजापुर वापस पहुँचाने हेतु परिवहन व्यवस्था तथा जिला मुख्यालय बीजापुर में तीर्थयात्रियों के ठहरने व रूकने के दौरान आवश्यक भोजन, चाय नाश्ता, टेंट आदि व्यवस्था हेतु स्थानीय स्तर पर परिवहन एजेंसियों/केटरर्स/फर्मों/संस्थाओं से निविदा आमंत्रित किया गया है। जिसके लिये खुली निविदा आमंत्रण हेतु निविदा की शर्ते व अनुदेश एवं निविदा फार्म समाज कल्याण विभाग से प्राप्त किया जा सकता है।

अक्षय तृतीया के दिन अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद का हुआ गठन

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

जगदलपुर, 2 मई। अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद जगदलपुर की बैठक संघ कार्यालय जगदलपुर में बुधवार की शाम को हुई। सर्व प्रथम भारत माता की चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। उसके बाद परिषद के बस्तर जिला पदाधिकारियों की नियुक्ति अधिवक्ता परिषद प्रदेश अध्यक्ष झंरना बांगर सिंह के द्वारा सर्वसम्मति से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग प्रचारक यज्ञ सिंह की उपस्थिति में की गई। इसमें जिला अध्यक्ष अर्पित मिश्रा, उपाध्यक्ष साक्षी रामटेके, उमेश सिंह ठाकुर, सचिव शक्ति सिंह व कोषाध्यक्ष कौस्तुभ ठाकुर, स्टडी सर्कल प्रमुख लोकेश पटेल अधिवक्ता को नियुक्त किया गया। बैठक अधिवक्ता परिषद के प्रदेशाध्यक्ष झरना बांगर ने समस्त नव नियुक्त पदाधिकारी को शुभकामनाएं दी तथा अपने अधिवक्ता परिषद की कार्यो से समाज में लाभ पहुंचाने की बात की। वरिष्ठ अधिवक्ता और ईश्वर राव ने भी कानून के क्षेत्र में समाज को जागरूक करने और उनके आवश्यकताओं को पूर्ति करने में परिषद के द्वारा किए जाने वाले कार्यों के संबंध में जानकारी दी। अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद के संभाग अध्यक्ष सपन देवांगन ने बताया कि अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद भारतीय न्यायिक प्रणाली में सुधार की वकालत करता है, जो हिंदू परंपराओं के अनुरूप हो। इस अवसर पर अधिवक्ता परिषद के आरती दुआ, श्रीनिवास रथ,प्रतिमा राय, सावित्री बघेल,राजेश्वरी वर्मा, सोनम राजपुत, इंद्रजीत सेठिया, चित्रा सिंह ,अदिति रावत,सुरेखा मरकाम,संजना पाणिग्राही, सौरभ चौरसिया,लोकेश पटेल,गेशु पाणीग्राही एवं अन्य उपस्थित थे।

पीएम आवास योजना अंतर्गत सुकमा बस्तर संभाग में प्रथम स्थान पर

सुकमा, 2 मई (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। सुकमा जिले में प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण अंतर्गत कलेक्टर श्री देवेश कुमार ध्रुव के नेतृत्व एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्रीमती नम्रता जैन की कड़ी मेहनत एवं सतत निगरानी के परिणामस्वरूप सुकमा जिला बस्तर संभाग मे आवास निर्माण कार्य, आवास की स्वीकृति, नियद नेल्लानार योजना मे आवास स्वीकृति एवं निर्माण कार्य, स्पेशल प्रोजेक्ट अंतर्गत आवास की स्वीकृति आदि बिंदुओ मे अव्वल स्थान पर है।

नियद नेल्लानार योजना के तहत निर्माण कार्यो मे आई तेजीमुख्य कार्यपालन अधिकारी श्रीमती नम्रता जैन के द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण अंतर्गत वर्ष 2016-25 तक 1577 पात्र परिवारों मे से 512 हितग्राहियों का आवास स्वीकृत किया गया है जिसके विरुद्ध 117 आवास को पूर्ण का लिया गया है। जिला सीईओ श्रीमती जैन के द्वारा जनपद पंचायत सुकमा एवं कोंटा के मुख्य कार्यपालन अधिकारी को शेष बचे हुए पात्र हितग्राहियों का आवश्यक दस्तावेज एकत्रित करके सॉफ्टवेयर मे अतिशीघ्र पंजीयन करने के निर्देश दिये गए हैं।

एक नजर

प्रकृति परीक्षण में उत्कृष्ट कार्य करने वाले डॉक्टर्स सम्मानित

रायगढ़, 2 मई। छ.ग.राज्य आयुर्वेद यूनानी योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा रजिस्ट्रार डॉ.संजय शुक्ला गत दिवस एक दिवसीय रायगढ़ प्रवास पर आए थे। इस दौरान उन्होंने जिला आयुर्वेद कार्यालय रायगढ़ में समीक्षा बैठक ली। उन्होंने सभी चिकित्सकों को हमेशा सक्रिय रूप से कार्य करने हेतु प्रेरित करते हुए उनका उत्साहवर्धन किया। साथ ही उन्होंने प्रकृति परीक्षण में उत्कृष्ट कार्य करने वाले जिले के डॉक्टरों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

जिला आयुष अधिकारी डॉ.चन्द्रशेखर गौरहा के मार्गदर्शन में आयुष विभाग रायगढ़ में कार्यरत आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारियों द्वारा प्रकृति परीक्षण में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए डॉ.शुक्ला ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी। डॉ.शुक्ला ने कहा कि रायगढ़ जिले के डॉक्टरों ने निष्ठा पूर्वक कार्य करते हुए प्रकृति परीक्षण में पूरे राज्य में अव्वल स्थान हासिल किए। इस दौरान डॉ.शुक्ला ने जिले में प्रथम स्थान के लिए डॉ.प्रियंका नायक, द्वितीय स्थान के लिए डॉ.अजय नायक एवं तृतीय स्थान के लिए डॉ.कुणाल पटेल को प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किए।

नीट यूजी परीक्षा 4 मई को

रायगढ़, 2 मई। नीट यूजी परीक्षा का आयोजन 4 मई 2025 को किया जाएगा। जिसके सफल संचालन हेतु डिप्टी कलेक्टर एवं प्रभारी अधिकारी परीक्षा शाखा रायगढ़ श्री समीर बड़ा मोबा.नं.97103-26388 को जिला स्तरीय नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। जिला कार्यालय रायगढ़ के कक्ष क्रमांक-19 में जिला स्तरीय नियंत्रण कक्ष स्थापित किया गया है जिसका दूरभाष नंबर 07762-223750 है। उक्त नियंत्रण कक्ष में जनसामान्य एवं परीक्षार्थियों से प्राप्त होने वाले शिकायतों को पंजी में दर्ज करने हेतु नगर सैनिकों की ड्यूटी लगाई गई है। जिसमें प्रात- 6 बजे से दोपहर 2 बजे तक नगर सैनिक क्रमांक 202 श्री गजेन्द्र सिंह मोबा.नं.93299-55828, दोपहर 2 बजे से रात्रि 10 बजे तक नगर सैनिक क्रमांक 42 श्री महेश साहू मोबा.नं.90398-65526 तथा रात्रि 10 बजे से प्रात- 6 बजे तक नगर सैनिक क्रमांक 125 श्री हरिशंकर चौहान मोबा.नं.95757-04296 की ड्यूटी लगाई गई है।

चाचा-भतीजा को मिली किसान किताब की दूसरी प्रति, खेती में अब होगी आसानी

रायगढ़, 2 मई। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में प्रदेशभर में चल रहे सुशासन तिहार-2025 के तहत आम नागरिकों की समस्याओं का त्वरित समाधान किया जा रहा है। इसी क्रम में धरमजयगढ़ विकासखण्ड के साम्हरसिंघा के चाचा-भतीजा श्री अजरदास महंत एवं रामदास द्वारा प्रस्तुत आवेदन की जांच उपरांत निराकरण करते हुए दोनों को किसान किताब की द्वितीय प्रति प्रदाय किया गया।

रामदास ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री साय द्वारा शुरू की गई सुशासन तिहार लोगों के लिए काफी फायदेमंद साबित हो रही है। उन्होंने कहा कि आवेदन करने से पहले सोचे नहीं थे कि इतना जल्दी निराकरण हो जाएगा। उन्होंने कहा कि जमीन पहले अन्य के नाम पर थी। किसान किताब में अपना नाम नहीं होने के कारण खेती-किसानी में परेशानी हो रही थी। सुशासन तिहार में आवेदन के पश्चात उनके नाम से अब किसान किताब प्राप्त हो चुका है। उन्होंने कहा कि किसान किताब की द्वितीय प्रति मिलने से अब समर्थन मूल्य में धान विक्रय, सोसायटी से खाद लेने एवं खेती-किसानी में अब कोई परेशानी नहीं होगी। उन्होंने खुशी जाहिर करते हुए छत्तीसगढ़ के मुखिया मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय को धन्यवाद ज्ञापित किया है।

गौरतलब है कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ में चल रहे सुशासन तिहार जनता की समस्याओं के त्वरित निराकरण और शासकीय योजनाओं के लाभ को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने का एक प्रभावी माध्यम बन रहा है। 8 अप्रैल से 31 मई 2025 तक तीन चरणों में आयोजित यह अभियान जवाबदेही और जनसंवाद को बढ़ावा दे रहा है, जिसका उद्देश्य शासन को जन-केंद्रित बनाना है।

आंधी और तेज बारिश से बीजापुर में कई घंटे बिजली बंद,लोग परेशान रहे

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बीजापुर, 2 मई । देर रात अचानक मौसम के बदलने से बीजापुर में आंधी तूफान और तेज बारिश हुई इससे. लोगों को गर्मी से जरूर. राहत मिली है पर आंधी तूफान के चलते क ई घरों के छप्पर उड़ गये वार्ड नंबर चार में बरगद पेड गिरने से कई घंटे बिजली गुल रही इससे नगर वासियों को पेयजल समस्या से जूझना पड़ा वार्ड वासियों ने समस्या के समाधान के लिए नगरपालिका अध्यक्ष से गुहार लगाई इस पर तत्काल अध्यक्ष महोदया ने संबंधित विभाग को निर्देश दिया है ।

बीजापुर के आसपास भी आंधी तूफान का असर हुआ है फिलहाल कहां कितनी छति हुई है इसकी जानकारी नहीं मिल पाई है विदित हो पिछले एक सप्ताह से जिले के मौसम में बदलाव हुआ है और प्रायः आये दिन शाम के वक्त तेज हवाओं के साथ बारिश हो रही है इस वजह से खासकर बिजली सेवा बार-बार बाधित हो रही हैजिले के भोपाल पटनम क्षेत्र मे तो इसका सबसे अधिक असर हो रहा है वहां आये दिन लोगों को.बिजली बाधित होने की समस्या से जुझना पड़ रहा है आवापल्ली क्षेत्र में भी यही समस्या है इस भीषण गर्मी में बिजली सेवा के बाधित होने से आम जनमानस को काफी परेशानी यो का सामना करना पड़ रहा है इससे शासकीय कार्य भी प्रभावित हो रहे है संबंधित विभाग को इस पर ध्यान देने की जरूरत है।

मुख्यमंत्री साय के नेतृत्व में स्वास्थ्य विभाग में लगातार हो रहे हैं नवाचार

रायगढ़, 2 मई। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में स्वास्थ्य विभाग में लगातार नए नवाचार किए जा रहे हैं। स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर करने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं। रायगढ़ क्षेत्र में वित्त मंत्री श्री ओ.पी.चौधरी के विशेष मार्गदर्शन में मेडिकल कॉलेज रायगढ़ में सुविधाओं में लगातार विस्तार हो रहा है, जिससे मरीजों और उनके परिजनों को लाभ मिल रहा है। इसी दिशा में स्व.श्री लखीराम अग्रवाल स्मृति शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय संबद्ध संत बाबा गुरु घासीदास जी स्मृति शासकीय चिकित्सालय रायगढ़ के डीन डॉ.विनीत जैन एवं अस्पताल अधीक्षक डॉ.एम.के.मिंज और चिकित्सा प्रबंधन समिति के द्वारा चिकित्सा परामर्श के लिए निःशुल्क बस सेवा की शुरुआत की गई है। श्रमिक दिवस के दिन शुरू की गयी यह बस सेवा किरोड़ीमल शासकीय जिला चिकित्सालय (केजीएच) से मेडिकल कॉलेज संबद्ध चिकित्सालय के लिए रविवार और शासकीय अवकाश छोड़कर प्रत्येक दिवस को चलेगी। यह बस सेवा पूरी तरह से निःशुल्क रहेगी।

अस्पताल अधीक्षक डॉ.एम.के.मिंज ने इस संबंध में बताया कि सुबह के वक्त ओपीडी के समय केजीएच जिला हॉस्पिटल से मेडिकल कॉलेज के आऊटर रूट पर होने के कारण लोगों को पब्लिक ट्रांसपोर्ट उपलब्ध नहीं होता है। जबकि मेडिकल कालेज से लौटते समय ऐसी समस्या नहीं रहती है। ऐसे में ओपीडी के समय जरूरतमंद लोगों को प्राइवेट टैक्सी या आटो किराए पर लेना पड़ता है जो आर्थिक रूप से परेशानी भरा होता है। इसकी वजह से इलाज कराने वाले गरीब और श्रमिक लोगों को आर्थिक समस्या उत्पन्न हो रही थी। इन्ही सब बातों को ध्यान में रख कर निःशुल्क बस सेवा के लिए केजीएच को सेंटर पॉइंट बनाया गया है इससे चिकित्सा परामर्श के लिये रेफर मरीज भी इस बस सुविधा का लाभ ले सकते हैं। अभी शुरुआत में निःशुल्क बस सेवा को एक फेरा (ट्रिप) चलाया जा रहा है। समय के साथ आवश्यकता एवं मांग के अनुरूप बस का फेरा (ट्रिप)बढ़ाया जाएगा।मेडिकल कॉलेज चिकित्सालय के सामने बस के खड़े होने का समय प्रात- 09.30 बजे है। यह जिला अस्पताल के लिए प्रात- 09.40 बजे रवाना होगी। यह बस टीवी टॉवर के बस स्टॉप से कलेक्टोरेट के सामने से होते हुए जिला अस्पताल (केजीएच) 10 बजे पहुंचेगी। पुन- यहां से ये बस सुबह 10.15 बजे छूटकर 10.35 बजे मेडिकल कालेज रायगढ़ पहुंचेगी ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग चिकित्सकीय परामर्श लेने मेडिकल कॉलेज पहुंच सकें।इस बस में मेडिकल कॉलेज का एक स्टाफ भी उपलब्ध रहेगा। यह स्टाफ उन मरीजों का जिनका आभा आईडी नहीं हैं, बस में ही जनरेट करने में सहयोग करेंगे। बस में आभा क्यू आर भी लगाया गया है, जिसमे बस में बैठे-बैठे ही टोकन प्राप्त हो जाएगा, इससे मरीज को लाइन नहीं लगानी पड़ेगी। बल्कि मरीज को हॉस्पिटल के पंजीयन काउण्टर में सिर्फ अपना टोकन नंबर बताना होगा। टोकन नंबर से पंजीयन पर्ची प्राप्त हो जायेगी, जिससे मरीज और उसके परिजनों की समय की बचत होगी।

जिला महासमुन्द को टीबी उन्मूलन में मिला राज्य में प्रथम स्थान

महासमुंद 2 मई । राष्ट्रीय क्षय (टीबी) उन्मूलन कार्यक्रम अंतर्गत वर्ष 2024-25 में जिला महासमुन्द ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इस उपलब्धि के लिए चिकित्सा महाविद्यालय रायपुर के अटल बिहारी वाजपेयी ऑडिटोरियम में आयोजित राज्य स्तरीय सम्मान समारोह में महासमुन्द जिले को सम्मानित किया गया। समारोह में छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल, स्वास्थ्य सचिव श्री अमित कटारिया तथा आयुक्त सह संचालक डॉ. प्रियंका शुक्ला द्वारा महासमुन्द जिले के स्वास्थ्य अधिकारियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।स्वास्थ्य मंत्री श्री जायसवाल ने इस अवसर पर कहा छत्तीसगढ़ को देश में टीबी मुक्त ग्राम पंचायत अभियान को सर्वोत्तम तरीके से लागू करने हेतु राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया है, जो समस्त राज्यवासियों के लिए गर्व की बात है।÷ उन्होंने बताया कि राज्य की 4103 ग्राम पंचायतों को अब तक टीबी मुक्त घोषित किया जा चुका है।

जिले के टॉपर विद्यार्थियों से मिलकर कलेक्टर ने दी शुभकामनाएं

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

सुकमा, 2 मई। छत्तीसगढ़ शासन के स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित कक्षा 5वीं एवं 8वीं की केंद्रीकृत वार्षिक परीक्षा 2025 का परिणाम 30 अप्रैल को घोषित किया गया। इस अवसर पर कलेक्टर श्री देवेश कुमार ध्रुव ने जिला स्तर पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों से भेंट कर उन्हें स्मृति चिन्ह प्रदान किया और उनके उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

कलेक्टर श्री ध्रुव के निर्देशन में जिले के तीनों विकास खंड सुकमा, कोंटा और छिंदगढ़ में परीक्षा का सफल आयोजन किया गया। कक्षा 5वीं की परीक्षा 636 केंद्रों में संपन्न हुई, जिसमें 3823 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इनमें से 3759 विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए, जिससे उत्तीर्ण प्रतिशत 99.50 रहा। वहीं कक्षा 8वीं की परीक्षा 224 केंद्रों में आयोजित हुई, जिसमें 3537 विद्यार्थियों में से 3358 विद्यार्थी सफल रहे, और उत्तीर्ण प्रतिशत 98.48 रहा।इस अवसर पर परीक्षा प्रभारी श्री आशीष राम, संकुल समन्वयक श्री अल्बर्ट टोप्पो, प्रधान पाठक श्री अबलम बघेल, कौशल नाग सहित संबंधित विद्यालयों के शिक्षक, विद्यार्थी एवं अभिभावक उपस्थित रहे। कलेक्टर श्री ध्रुव ने सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

पीएमश्री स्वामी आत्मानंद स्कूल का वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

सुकमा, 2 मई। पीएमश्री स्वामी आत्मानंद हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालय कोंटा में आज ज़िला शिक्षा अधिकारी सुकमा के मार्गदर्शन में बुधवार 30 अप्रैल को सत्र 2024-25 के वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित किए गए। कक्षा 1 से 8 एवं 9 और 11 के परिणाम जारी किए गए। इस मौके पर स्कूल परिसर में विशेष कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस अवसर पर शाला प्रबंधन समिति के सदस्य अंबाटी देवी, श्रीकांत, सुकमा जिला के परीक्षा प्रभारी ए पी सी आशीष राम, प्राचार्य बी एल औरसा,प्रधान अध्यापक टी श्रीनिवास वासु,अभिभावक और शिक्षक शामिल हुए।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए एपीसी श्री आशीष राम ने परीक्षा परिणाम उम्मीद के अनुसार न आने पर तनाव से निपटने के तरीके बताए। उन्होंने मेहनत, अनुशासन और लगातार प्रयास की अहमियत समझाई। छात्रों को नए शैक्षणिक सत्र के लिए शुभकामनाएं दीं।शाला विकास व प्रबंधन समिति के सदस्य अम्बाटी देवी ने छात्रों की उपलब्धियों की सराहना की और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। सेवा निवृत शिक्षक एम सत्यनारायण ने विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना की । कार्यक्रम में मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया । पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरण के समय छात्र और उनके अभिभावक मौजूद रहे। अभिभावकों ने स्कूल और शिक्षकों का आभार जताया। विद्यालय परिवार ने बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए लगातार प्रयास करते रहने का संकल्प लिया।

महापौर संजय ने समावेशी दृष्टिकोण के साथ पेश किया निगम का बजट

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

जगदलपुर,2 मई। नगर निगम जगदलपुर की सामान्य सभा में महापौर संजय पांडे ने वर्ष 2025-26 का बजट सदन में प्रस्तुत करते हुए इसे जनता की आकांक्षाओं का प्रतिबिंब बताया। अपने प्रेरणादायक संबोधन में उन्होंने कहा कि मैं बस्तर के आराध्य माँ दंतेश्वरी, बुढ़ादेव, मावली माता के चरणों में प्रणाम करते हुए, जनता जनार्दन को नमन कर यह संकल्प लेता हूँ कि यह बजट जगदलपुर को प्रगति, समृद्धि और सम्मान के नए शिखर तक ले जाएगा।महापौर ने कहा कि यह बजट सिर्फ एक प्रशासनिक दस्तावेज नहीं, बल्कि पूरे शहर की जनता की आशाओं, सुझावों और सपनों का आईना है। इस वर्ष एक अभिनव पहल करते हुए, सोशल मीडिया के माध्यम से आम नागरिकों से सुझाव लिए गए। हमें 4700 से अधिक सुझाव प्राप्त हुए जिनमें स्वच्छता, पेयजल की उपलब्धता, सड़क सुधार, तालाबों के जिर्णोद्धार, हरियाली बढ़ाने और स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने जैसी प्राथमिकताओं को शामिल किया गया है। महापौर संजय पाण्डे ने कहा कि हमने इन सभी सुझावों को गंभीरता से अध्ययन किया और इस बजट में यथासंभव उन्हें समाहित करने का प्रयास किया है। यह बजट जगदलपुर के महान जनता के विचारों, आशाओं, और उनके सपनों का प्रतिबिंब है।

जगदलपुर,2 मई। नगर पालिक निगम जगदलपुर की सामान्य सभा की बैठक से पूर्व महापौर संजय पाण्डे, निगम सभापति खेमसिंह देवांगन, एमआईसी मेंबर लक्ष्मण झा दंतेश्वरी मंदिर पहुंचे। मालूम हो कि आज नगर निगम बजट 2025-26 पेश होने के साथ नगर विकास से जुड़े अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की जाएगी।

निर्माण कार्यों को तेजी के साथ करें पूरा, गुणवत्ता पर हो फोकस:कलेक्टर

रायगढ़, 2 मई। कलेक्टर श्री मयंक चतुर्वेदी ने रायगढ़ नगर निगम अंतर्गत चल रहे प्रोजेक्ट्स का निरीक्षण कर काम में प्रगति की समीक्षा की। निरीक्षण के दौरान नगर निगम आयुक्त श्री बृजेश सिंह क्षत्रिय ने शहर के प्रोजेक्ट्स के बारे में कलेक्टर श्री मयंक चतुर्वेदी को विस्तार से जानकारी देते हुए अद्यतन स्थिति के बारे में अवगत कराया।

बैटरी चलित ट्रायसिकल मिलने से विकास की राह हुई आसान

कांकेर 2 मई । छत्तीसगढ़ शासन द्वारा संचालित सुशासन तिहार के माध्यम से ग्रामीणों को विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित किया जा रहा है। साथ ही दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्र में शिविर लगाकर आम जनता की समस्याओं संबंधित आवेदन प्राप्त कर त्वरित निराकरण भी किया जा रहा है। इसी क्रम में जिले के माहुरबंदपारा कांकेर के श्री विकास सोनी, 80 प्रतिशत अस्थिबाधित दिव्यांगजन द्वारा बैटरीचलित ट्रायसिकल हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया।जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती किरण नरेटी द्वारा बुधवार को कांकेर निवासी 42 वर्षीय श्री विकास सोनी को बैटरीचलित ट्रायसिकल प्रदाय की गयी। ट्रायसिकल आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता एवं कृतज्ञता की चमक स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

मछली पालन का एक दिवसीय प्रशिक्षण दिया

सुकमा, 2 मई (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। कृषि विज्ञान केन्द्र सुकमा के मछली पालन विशेषज्ञ डॉ संजय सिंह राठौर ने छिंदगढ़ स्थित ग्राम कोकावाड़ा में मछली पालकों को मछली पालन की नई तकनीक विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण दिया। उन्होंने मुख्यतः मछली पालन की आधारभूत जानकारी जैसे कैसे किसान बंधु रोहू, कतला, मृगल, सिल्वर कार्प, ग्रास कार्प और कॉमन कार्प मछलियों को सही अनुपात में पालकर एक एकड़ तालाब से ही लाखों रुपए कमा सकते हैं। उन्होंने बताया कि समन्वित मछली पालन के अंतर्गत मछली के साथ साथ तालाब के ऊपर मुर्गी, बटेर और बतख को हवादार शेड में पालकर चारे की लागत को 25 से 30 प्रतिशत कम किया जा सकता है। साथ ही इनके मांस के साथ अंडे बेचकर आय को दुगुना किया जा सकता है। बतख को तालाब के पानी का चलता हुआ खाद कहा जाता है क्योंकि यह जब तैरता है तो हवा के ऑक्सीजन को पानी में घोलकर डिसॉल्व (घुलित) ऑक्सीजन को बढ़ाता है जिससे मछली की बढ़वार तेज होती है। ट्रेनिंग समाप्त होने के बाद उन्होंने गांव के तालाब का भी निरीक्षण किया और तालाब के पानी का परीक्षण करके बताया गया कि पानी का तापमान, पीएच, अमोनिया आदि सभी पैरामीटर एकदम सही हैं। आज के प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री ज्योतिष कुमार पोटला और श्री विनोद ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

273 आवेदनों में से 96 लोगों का बना लर्निंग लायसेंस

सुकमा, 2 मई (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की मंशा के अनुरूप सुकमा जिले में सुशासन तिहार के अंतर्गत नागरिकों की समस्याओं और आवश्यकताओं का त्वरित समाधान किया जा रहा है। इस अभियान के तहत परिवहन विभाग ने लर्निंग लाइसेंस की प्रक्रिया को आसान और त्वरित बनाकर आम नागरिकों को बड़ी राहत दी है। परिवहन सुविधा केंद्र के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन करने वाले आवेदकों को उसी दिन तत्काल लर्निंग लाइसेंस प्रदान किया जा रहा है। सुशासन तिहार के अंतर्गत विभाग को कुल 273 आवेदन प्राप्त हुए हैं, जिनमें से लगभग 96 आवेदकों को लर्निंग लाइसेंस जारी किया जा चुका है। शेष आवेदकों को ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया पूरा करने के पश्चात कार्यालय में उपस्थित होने के लिए पत्र भेजा जा रहा है, जिससे उन्हें भी समय पर लाइसेंस प्रदान किया जा सके। जिले में इस व्यवस्था को लेकर आमजनों में उत्साह है और लोग शासन की इस तत्परता की सराहना कर रहे हैं।

सेवानिवृत्त कर्मचारी बघेल को दी गई विदाई

सुकमा, 2 मई (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। जिला सुकमा के एकीकृत आदिवासी विकास परियोजना कार्यालय में सहायक ग्रेड-02 के पद पर कार्यरत श्री मोहन सिंह बघेल आज 37 वर्षों की शासकीय सेवा पूर्ण कर सेवानिवृत्त हो गए। इस अवसर पर कलेक्टर श्री देवेश कुमार ध्रुव के द्वारा उनके पेंशन प्रकरण में त्वरित कार्रवाई कर पीपीओ (पेंशन भुगतान आदेश) जारी किया गया। कलेक्टर ने श्री बघेल को साल व श्रीफल भेंट कर उनके उत्तम स्वास्थ्य व दीर्घायु जीवन की कामना की।सेवानिवृत्ति के अवसर पर श्री शरतचन्द्र शुक्ला, सहायक आयुक्त आदिवासी विकास सुकमा सहित श्री मुकेश कुमार मिश्रा, श्री बी.आर. बघेल, श्री बी.एल. बेलेकर, श्री एम.एन. नामदेव, श्री एस.पी. नेताम, श्री एम.के. नाग, श्रीमती राधा कश्यप एवं श्री कोमलदेव मरकाम सहित अनेक अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे। सभी ने श्री बघेल के कार्यकाल की सराहना करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

कृषि विज्ञान केंद्र में धूमधाम से मनाया गया अक्ती तिहार

सुकमा, 2 मई (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया को हम लोग अक्ती तिहार (अक्षय तृतीया) के रूप में मनाते हैं। इस दिन धरती माता की विधि विधान से पूजा करके खेतों की जुताई कर बीज बुवाई का कार्य शुरू करते हैं। इसी तारतम्य में 30 अप्रैल को कृषि विज्ञान केन्द्र, सुकमा के मुरतोंडा स्थित प्रक्षेत्र में अक्ती तिहार (अक्षय तृतीया) विधि विधान एवं हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम में ÷ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (आरसेटी)÷ में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे 26 किसान भाई-बहनों के साथ-साथ उन्हे ट्रेनिंग दे रहे श्री कुश कुमार सिंन्हा (डी.एस.टी.) एवं श्री राहुल मेहरा उपस्थित हुए। इस अवसर पर प्रतीकात्मक रूप से थोड़े से क्षेत्र में धान की नर्सरी डाली गई तथा 25 डेसीमल क्षेत्रफल में आये हुए प्रशिक्षणार्थियों द्वारा मेढ़ बनाकर भिण्डी की बुआई भी की गई। कृषि विज्ञान केन्द्र से वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख एच.एस. तोमर, कृषि वैज्ञानिक डॉ. परमानन्द साहू, कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ. संजय सिंह राठौर तथा अन्य कर्मचारी उपस्थित थे।

कार्यालयीन सामग्री के लिए निविदा आमंत्रित

बीजापुर, 2 मई। बीजापुर जिला के लिए वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु कार्यालयीन कार्य में लगने वाले समस्त कार्यालयीन लेखन सामाग्री, अन्य आकस्मिक सामाग्री, प्रिन्टर कॉटरेज, फोटोकॉपी टोनर, नियम-अधिनियम पुस्तक क्रय करने तथा कॉटरेज रिफिलिंग, फोटोकॉपी प्रति हेतु निविदा आंमत्रित किया गया है। उक्त सामग्री की निविदा भरने हेतु नियम व शर्त तथा निविदा फार्म 09 मई 2025 तक कार्यालयीन समय सायं 5:00 बजे तक जिला कार्यालय के स्थापना शाखा से प्राप्त कर सकते है। निविदा फार्म बीजापुर के शासकीय वेबसाईट www.bijapur.gov.in में भी अपलोड किया जावेगा। निविदा प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 13 मई 2025 को दोपहर 2:00 बजे तक होगी। एवं 13 मई 2025 को ही सायं 4:00 बजे निविदा खोली जावेगी।

श्रमिक दिवस पर मनरेगा श्रमिकों ने कार्यस्थल पर ली शपथ

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बलौदाबाजार, 02 मई। अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस के अवसर पर जिले के ग्राम पंचायतों में मनरेगा श्रमिकों ने कार्यस्थल पर ही स्वच्छता व जल संचयन की शपथ ली। स्व सहयता समूह एवं जल संचयन वाहिनी के द्वारा तालाबों की सफाई के साथ जल संचयन व स्वच्छता की शपथ ली गई। विकासखंड भाटापारा के ग्राम पंचायत लेवई में स्वच्छता कार्यक्रम के तहत स्वच्छता के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए महिला समूह को ग्राम पंचायत द्वारा सम्मानित किया गया। इसके साथ ही गांव के तालाब में पचरी निर्माण में लगे श्रमिकों ने जल संचयन की शपथ ली। विकासखंड पलारी के ग्राम पंचायत भवानीपुर में अमृत सरोवर तालाब निर्माण कार्य स्थल पर मजदूर दिवस मनाया गया साथ ही स्वच्छता एवं जल संचयन की शपथ दिलाई गई।विकासखंड सिमगा के ग्राम पंचायत जारौद में तालाब सफाई, जल संचयन शपथ और स्वच्छताग्रही दीदियों का सम्मान किया गया।विकासखंड कसडोल के ग्राम गुडागढ़ में अमृत सरोवर तालाब निर्माण कार्य स्थल एवं ग्राम पंचायत भिंभौरी में श्रमिकों ने जल संचयन की शपथ ली।विकासखंड बलौदाबाजार के ग्राम पंचायत हरदी में श्रमदान से तालाब सफाई कार्य,जल संरक्षण शपथ एवं समूह की महिलाओं का सम्मान किया गया।

संगीत प्रशिक्षक पद के लिए इंटरव्यू 3 मई को

बलौदाबाजार, 02 मई। बलौदाबाजार नगर अंतर्गत संचालित समस्त शासकीय, अशासकीय शालाओं के संगीत कला क्षेत्र में रूचि रखने वाले छात्र छात्राओं को निःशुल्क संगीत प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु गायन,वादन और शास्त्रीय नृत्य संगीत प्रशिक्षकों की अस्थायी कार्यव्यवस्था की गई है। प्रशिक्षक पद हेतु वॉक -इन -इंटरव्यू 3 मई 2025 को प्रातः 10.30 बजे से जिला ग्रन्थालय बलौदाबाजार में आयोजित है। विस्तृत जानकारी वेबसाईट http://balodabazar.gov.in पर देख सकते है।

परशुराम जयंती बड़ी धूमधाम से विप्रजनों ने मनाई

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

सिमगा, 02 मई। परिक्षेत्र के सभी विप्रजनों ने दादा गुरू परसुराम जी का जन्मोत्सव मनाया गया तिल्दा रोड स्थित विप्र भवन में सुबह 11:00 बजे श्री सत्यनारायण जी का कथा तत्पश्चात छोटे छोटे बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम व रंगोली पेंटिंग का कार्य बड़े उत्साह से किया शाम 6:00 बजे विप्रजनों महिला एवं पुरूषो ने ढोल तासों के साथ रैली निकाली सिमगा के चौक चौराहो से होते हुये पुनः विप्र भवन पहुंचा। इसी तारतम्य में जयस्तम्भ चौक में विप्रजनों ने रैली रोककर जम्मू कश्मीर पहलगांव में आंतकियो द्वारा कायरतापूर्ण कार्य कर निर्दोषो की जान ली उसके लिये दो मिनट का मौन धारण कर उन्हें श्रद्धांजली अर्पित की। जो दादा गुरू परसुराम जी का पूजा अर्चना पश्चात छोटे-छोटे बच्चों ने सराहनीय कार्य किया उसके लिये आर्शीवाद के रूप में भेटस्वरूप गिफ्ट प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम में विशेष रूप से विप्र समाज के प्रदेशाध्यक्ष ललित मिश्रा रायपुर, जयप्रकाश शर्मा, सांस्कृति मंच प्रदेशाध्यक्ष सुमित शर्मा रायपुर, सिमगा परिक्षेत्र के अध्यक्ष सुनिल तिवारी, रामानंद तिवारी, अनिल पाण्डेय, दिनबंधु शर्मा, विक्रम मिश्रा, विक्रमादित्य पाण्डेय, बिट्टू चौबे, गदन शर्मा, गदन तिवारी, महिला मोर्चा अध्यक्ष सुवर्णा ओमप्रकाश शर्मा, किरण शर्मा, शिला तिवारी, नंदनी तिवारी, उमा दुबे, श्वेता अवस्थी, प्रभा शर्मा, ममता चतुर्वेदी, रत्ना शर्मा, संध्या शर्मा, कुमारी श्रेया, खुशी शर्मा, मुस्कान शर्मा, अल्का मिश्रा, रजनी दुबे एवं सर्व विप्रसमाज सिमगा परिक्षेत्र के विप्रजन उपस्थित थे।

एक नजर

सोलेशियम योजनांतर्गत 22 लाख रुपए से अधिक सहायता राशि स्वीकृत

बलौदाबाजार, 02 मई। सोलेशियम योजना (हिट एंड रन) अंतर्गत आर्थिक सहायता राशि मृतक के निकट एवं पीड़ितों को मुआवजा राशि प्रदान किया गया। योजना के तहत 1जनवरी 2025 से 1 मई 2025 तक 12 लोगों को 22 लाख 25 हजार मुआवजा राशि प्रदान किया गया। प्राप्त जानकारी अनुसार चंद्रकांत साहू पिता दयालु साहू निवासी रिसदा तहसील बलौदाबाजार 2 लाख रूपए, योगेश्वरी पति दिलहरण साहू निवासी अमेरा तहसील पलारी 2 लाख रूपए, पुनूराम साहू पिता रामजी साहू निवासी ग्राम लवनबंद तहसील लवन 2 लाख रूपए, ममता गेंडरे पति देवादास गेंडरे निवासी डोकला 25 हजार रूपए, टालेश्वरी पति स्व. नीलकंठ ध्रुव निवासी ग्राम सेमराडीह तहसील बलौदाबाजार 2 लाख रूपए, राही बाई पति गुहाराम निवासी वार्ड क. 05 शंकर नगर सिमगा तहसील सिमगा 2 लाख रूपए, पुषन बाई पति मोहन निषाद निवासी ग्राम नवागांव तहसील सिमगा 2 लाख रूपए, सुनीता पति राजेन्द्र निवासी सीलदाग तहसील छतरपुर जिला पलामू झारखण्ड 2 लाख रूपए, रजवंतीन पति संतोष साहू निवासी ग्राम कामता तहसील सिमगा 2 लाख रूपए, रानी कटारे पति रमेश कटारे निवासी के. के. वार्ड भाटापारा तहसील भाटापारा 2 लाख रूपए, सरिता वर्मा पति राजेन्द्र वर्मा निवासी अमलीडीह तहसील भाटापारा 2 लाख रूपए की मुआवजा राशि प्रदान की गई।

भीषण गर्मी में पशुओं से भारवाहन एवं सवारी परिवहन 30 जून तक प्रतिबंधित

बलौदाबाजार, 02 मई। जिले में भीषण गर्मी एवं तेज धूप की स्थिति को देखते हुए पशुओं की सहायता से चलने वाली गाडियों पर वजन ढोने एवं सवारी ले जाने पर जिला प्रशासन द्वारा प्रतिबंध लगाया गया है। पशु क्रूरता निवारण परिवहन तथा कृषि पशुओं पर क्रूरता निवारण नियम 1965 के 6 (3) के तहत प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किया गया है। जिसमें कृषि पशुओं दोपहर 12 बजे से 3 बजे के बीच तांगे, बैलगाड़ी, भैंसागाड़ी, ऊंटगाड़ी, खच्चर, टट्टू गाड़ी एवं गधे पर भारी वजन ढोने पर 30 जून 2025 तक प्रतिबंध लगाया गया है।

ड्रायविंग लायसेंस बनवाने के लिए शिविर का आयोज 3 एवं 4 मई को

बलौदाबाजार, 02 मई। राज्य शासन के निर्देश पर जिले में सुशासन तिहार 2025 के तहत आम नागरिकों द्वारा ड्रायविंग लायसेंस से संबंधित मांग का त्वरित निराकरण हेतु परिवहन सुविधा केन्द्र में 3 एवं 4 मई 2025 को प्रातः 9 बजे से शिविर का आयोजन किया जाएगा। जनपद कार्यालय बलौदाबाजार, भाटापारा, पलारी, कसडोल एवं सिमगा में परिवहन सुविधा केन्द्र के माध्यम से लर्निंग लायसेंस बनाने शिविर लगायी जायेगी।

सीईओ जिला पंचायत ने स्वच्छ भारत मिशन की ली समीक्षा बैठक

कोरबा 02 मई। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत दिनेश कुमार नाग ने जिला पंचायत के सभाकक्ष में स्वच्छ भारत मिशन की समीक्षा बैठक लेकर निर्माण कार्यों को गुणवत्ता पूर्ण तरीके से निश्चित समय अवधि में पूर्ण करने के निर्देश उपस्थित अधिकारी कर्मचारियों को दिए। श्री नाग ने निर्देश दिए कि सभी विकासखंडों में बनाए जा रहे फिकल स्लज ट्रीटमेंट प्लांट निर्माण कार्य एवं कटघोरा जनपद पंचायत अंतर्गत ग्राम पंचायत ढेलवाडीह में प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट व निर्माण कार्य को गुणवत्ता पूर्ण तरीके से शीघ्र ही पूर्ण करने के निर्देश दिए।

संवाद कार्यक्रम का चौथा चरण आज से

नागरिकों की समस्याओं के त्वरित निराकरण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा संपर्क केन्द्र

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बलौदाबाजार-भाटापारा, 02 मई। ग्रामीणों की समस्याओं के समाधान के लिए जिला प्रशासन बलौदाबाजार-भाटापारा की विशेष पहल ''संवाद कार्यक्रम'' का चौथा चरण कल 2 मई से प्रारंभ होकर 16 जुलाई तक चलेगा। कलेक्टर श्री दीपक सोनी के निर्देशानुसार प्रतिदिन जिले की प्रत्येक जनपद पंचायत की 02 इस प्रकार कुल 10 ग्राम पंचायतों के लोगों की समस्या का समाधान किया जाता है। संपर्क केन्द्र द्वारा जारी रोस्टर के अनुसार प्रत्येक ग्राम पंचायत में कोटवार के माध्यम से मुनादी करवाकर ग्रामीणों को पहले से सूचित कर दिया जाता है। इसके बाद संबंधित पंचायत में ग्रामीण अपनी मांगे, शिकायतें और समस्याएं लेकर ग्राम पंचायत भवन में एकत्रित हो जाते है जहां सरपंच, पंच, पंचायत सचिव सहित मैदानी अमला मौजूद रहता है और जिला मुख्यालय से विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी जुड़ते है।

उल्लेखनीय है कि कलेक्ट्रेट परिसर स्थित संपर्क केन्द्र के माध्यम से 21 अगस्त 2024 से संवाद कार्यक्रम की शुरूआत की गई जिसके तहत बलौदाबाजार-भाटापारा जिले की विभिन्न ग्राम पंचायतों मे रहने वाले नागरिकों की समस्याओं का समाधान किया जाता है। संवाद कार्यक्रम का उद्देश्य जिले के दूर-दराज क्षेत्रों में रहने वाले नागरिकों की समस्याओं का निराकरण वर्चुअल माध्यम से किया जाता है। इसके लिए ग्रामीणों को जिला कार्यालय आने की आवश्यकता नहीं हैं जिससे उनके समय और धन की बचत तो होती ही है साथ ही विभागीय अधिकारियों से सीधा संवाद हो जाता है। संवाद कार्यक्रम के तहत विभिन्न विभागों के अधिकारी दो पालियों में विडियों कान्फ्रेसिंग के माध्यम से आम नागरिकों से जुड़ते है। प्रथम पाली सुबह 11 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक और द्वितीय पाली दोपहर 2.30 बजे से शाम 5.30 बजे तक आयोजित की जाती है। जिला प्रशासन द्वारा 48 घंटे के भीतर समस्याओं का समाधान किया जाता है। अगस्त 2024 से लेकर अब तक जिले की 519 ग्राम पंचायतों के 500 से अधिक प्रकरणों का निराकरण किया जा चुका है।

अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस पर श्रमिकों का किया गया सम्मान

■ जिले के 671 श्रमिक विभिन्न योजनाओं के तहत हुए लाभान्वित

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बलौदाबाजार, 02 मई। अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस के अवसर पर गुरुवार को संयुक्त जिला कार्यालय के सभाक्क्ष में श्रमिकों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर कलेक्टर दीपक सोनी ने श्रम विभाग अंतर्गत संचालित योजनाओं के तहत श्रमिको को चेक वितरित किया। इसके साथ ही श्रम विभाग द्वारा जिले के 671 श्रमिकों को विभिन्न योजनाओं के तहत 1करोड़ 35 लाख 88 हजार 974 रुपये का डीबीटी के माध्यम से बैंक खाते में अंतरित किया गया। इस अवसर पर कलेक्टर ने जल संचायन की शपथ भी दिलाई। कलेक्टर श्री सोनी ने श्रमिक दिवस की बधाई देते हुए कहा कि श्रम से ही देश -दुनिया में विकास आगे बढ़ रहा है। श्रमिक अपने श्रम से बड़े -बड़े निर्माण कार्य को अंजाम दे कर देश की प्रगति में अहम भूमिका निभा रहे हैं । आज का दिन उनके श्रम का सम्मान करने का दिन है। उन्होंने कहा कि केंद्र एवं राज्य शासन द्वारा श्रमिकों के कल्याण के लिए अनेक योजनाएं संचालित किये जा रहे हैं। उन योजनाओं से हर श्रमिक को पात्रता अनुसार लाभान्वित करने का प्रयास जिला प्रशासन द्वारा किया जा रहा है। उन्होने कहा कि सभी श्रमिक अपनी पात्रता के अनुसार योजना का लाभ जरूर लें। उन्होंने श्रमिकों को संगठित और असंगठित क्षेत्र की जानकारी देते हुए बताया कि दोनों अलग- अलग क्षेत्र हैं कार्य की प्रकृति और नियोजन अनुसार पंजीयन के पश्चात श्रम कार्ड बनता है। इसमें किसी प्रकार से भ्रमित न हो और श्रम कार्ड में अनावश्यक परिवर्तन न कराये। उन्होंने श्रम विभग के अधिकारियो को योजनाओं की जानकारी के लिए जागरूकता अभियान चलाने के भी निर्देश दिये।

छात्र-छात्राओं ने मंच पर बिखेरी चमक

■ 11 छात्रों की शानदार जीत ने बढ़ाया विद्यालय का गौरव

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

भाटापारा, 02 मई। खमरिया,भाटापारा स्थित दिल्ली वर्ल्ड पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल, के विद्यार्थियों ने। डीडब्ल्यूपीएस नोएडा एक्सटेंशन द्वारा आयोजित राष्ट्रीय इंटर डीडब्ल्यूपीएस मॉडल यूनाइटेड नेशन प्रतियोगिता में देशभर के लगभग 17-18 डीडब्ल्यूपीएस विद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया था। इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में भाटापारा विद्यालय के 19 छात्रों ने सहभागिता की, जिनमें से 11 प्रतिभाशाली विद्यार्थियों ने पुरस्कार जीतने की ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की। इस शानदार प्रदर्शन के लिए छात्रों को मार्गदर्शन प्रदान करने में विद्यालय के एक्टिविटी इंचार्ज श्याम बहादुर ने मेंटर की भूमिका निभाई। विद्यालय के प्रधानाचार्य योगेश पोपट ने इंस्ट्रक्शनल मेंटर एवं प्रमुख नेतृत्वकर्ता के रूप में विद्यार्थियों को दिशा दी। उनके प्रेरणादायी मार्गदर्शन में छात्रों ने राष्ट्रीय मंच पर उत्कृष्ट कूटनीति, शोधकार्य और प्रभावी सार्वजनिक वक्तृत्व कौशल का शानदार प्रदर्शन किया। विद्यालय के प्रबंधक अश्विनी शर्मा, संदीप गोयल एवं प्रधानाचार्य योगेश पोपट ने सभी विजेता विद्यार्थियों को हार्दिक बधाइयाँ दीं प्रधानाचार्य योगेश पोपट ने छात्रों की इस उल्लेखनीय सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि ÷प्रतिभा और अनुशासन का संयोजन ही किसी विद्यार्थी को श्रेष्ठता की ऊँचाइयों तक ले जाता है। विद्यालय सदैव छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है। उल्लेखनीय है कि दिल्ली वर्ल्ड पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल, भाटापारा के विद्यार्थियों की यह लगातार दूसरी राष्ट्रीय विजय है।

सट्टा पट्टी खाईवाल राज नारायण साहू को किया गया गिरफ्तार

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बलौदाबाजार, 02 मई। पुलिस अधीक्षक श्रीमती भावना गुप्ता के निर्देशन में थाना सिटी कोतवाली पुलिस द्वारा अवैध रूप से शराब बिक्री करने वाले असमाजिक तत्वों एवं जुआ, सट्टा जैसे अंवैधानिक कार्यों में लिप्त आरोपियों की धरपकड़ कार्यवाही जारी है।

इसी क्रम में दिनांक 29.04.2025 को पुलिस टीम द्वारा घेराबंदी कर ग्राम रवान में सट्टा-पट्टी लिखने वाले एक आरोपी सटोरिया हरिराम वर्मा को गिरफ्तार कर आरोपी से सट्टा-पट्टी एवं नगदी ?600 जप्त किया गया था। आरोपी सटोरिया के विरूद्ध थाना सिटी कोतवाली में छत्तीसगढ़ जुआ प्रतिशेध अधिनियम 2022 की धारा 06 के तहत अपराध क्र. 425/2025 पंजीबद्ध कर कार्यवाही किया गया।

आरोपी हरिराम से पूछताछ पर उसके द्वारा बताया गया कि, बलौदाबाजार के राज नारायण उर्फ राजू साहू से तीन-चार साल से उसकी जान पहचान है तथा मोबाइल एवं प्रत्यक्ष रूप से उससे बातचीत होते रहता है। आरोपी हरिराम द्वारा उसी के कहने पर सट्टा पट्टी लिखने का काम करने, जिसके बदले में 10त्न कमिशन के रूप में पैसा मिलना बताया गया।

सांथ ही प्रतिदिन दोपहर के समय राज नारायण साहू के पास जाकर सट्टा-पट्टी एवं उससे मिले पैसे को उसके पास जमा करना बताया गया। कि प्रकरण में थाना सिटी कोतवाली पुलिस द्वारा आरोपी राज नारायण साहू उर्फ राजू साहू को आज दिनांक 01.05.2025 को विधिवत गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करने की प्रक्रिया की जा रही है।

महतारी वंदन योजनाः लापरवाही बरतने पर ग्राम सचिव को जारी किया गया चेतावनी पत्र

कोरबा 02 मई। पवन कुमार राठिया,सचिव ग्राम पंचायत सोलवां, जनपद पंचायत कोरबा के द्वारा ग्राम पंचायत सोलवां के आश्रित ग्राम छुईढोढ़ा की महिलाओं के द्वारा महतारी वंदन योजना के प्राप्त आवेदन पत्रों को ऑनलाईन एंट्री नहीं कराये जाने के कारण लगभग 40 पात्र हितग्राहियों को महतारी वंदन योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है। श्री राठिया सचिव ग्राम पंचायत सोलवां का कार्य अत्यंत निराशाजनक है।मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री दिनेश कुमार नाग के द्वारा पवन कुमार राठिया सचिव ग्राम पंचायत सोलवां, जनपद पंचायत कोरबा को महतारी वंदन योजना के कार्य में लापरवाही बरतने एवं सचिव पदीय कर्तव्यों में उदासीनता के फ्लस्वरूप भविष्य में ऐसी पुनरावृत्ति न करने हेतु चेतावनी पत्र जारी किया गया है।

मानवीय संवेदनाओं को जीवित रखें, किसी भी मजदूर को मानसिक यातना न दें: हारुन

छूरिया, 02 मई। विश्व श्रमिक दिवस के अवसर पर श्रम आयुक्त दर वन कर्मचारी संघ के प्रांत प्रमुख हारुन मानिकपुरी ने अपना विचार रखते कहा कि अनंत मानसिक तनाव जिसे व्यक्त करना शब्दों में संभव नहीं। मजदूरी से शुरु होती है जिंदगी और अंत भी वहीं होता है। आखिर कब तक चलेगा श्रमिकों से ये भेदभाव। एक अमीर व्यक्ति जिनके यहां एक श्रमिक मजदूरी करके अपनी एवं अपने बाल बच्चे,बुढ़ी मां बाप का आजिविका चलाते हैं , वह मालिक उनको अपना गुलाम समझते हैं। मेहनत की राशि देने में भी आनाकानी करते हैं। धिक्कार है ऐसे लोगों को सुबह से रात तक काम लेने के बाद भी श्रमिकों से बुरा बर्ताव करना यह मानवता की निशानी नहीं है। किसी की मजबूरी का फायदा उठाना कहां की इंसानियत है। आखिर एक ही मिट्टी के हम सब पुतले है। एक दिन सब छोड़ मिट्टी में मिल जाना है। श्रम आयुक्त दर वन कर्मचारी संघ के प्रांत प्रमुख हारुन मानिकपुरी ने शासन ,प्रशासन,समाजसेवियों से आग्रह करते हुए कहा है कि मानवियत संवेदनाओं को जीवित रखकर मजदूर को मानसिक यातना न दें ।

निर्वाचक नामावलियों को अपडेट करने मृत्यु पंजीकरण का डेटा इलेक्ट्रॉनिक रूप से प्राप्त किया जाएगा

■ बीएलओ को मानक फोटो पहचान-पत्र दिया जाएगा

■ मतदाता सूचना पर्चियों को और अधिक निर्वाचक-अनुकूल बनाया जाएगा

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बलौदाबाजार, 02 मई। भारत निर्वाचन आयोग ने निर्वाचक नामावलियों की सटीकता में सुधार लाने तथा नागरिकों के लिए मतदान प्रक्रिया को और अधिक सुविधाजनक बनाने के उद्देश्य से नई पहल की है। ये उपाय भारत के मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) श्री ज्ञानेश कुमार द्वारा निर्वाचन आयुक्त डॉ. सुखबीर सिंह संधु और निर्वाचन आयुक्त डॉ. विवेक जोशी की उपस्थिति में इसी वर्ष मार्च में मुख्य निर्वाचन अधिकारियों (सीईओ) के सम्मेलन के दौरान परिकल्पित पहलों के अनुरूप हैं।

आयोग अब निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण नियम, 1960 के नियम 9 और जन्म एवं मृत्यु रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1969 (वर्ष 2023 में यथा-संशोधित) की धारा 3(5) (ख) के अनुरूप भारत के महापंजीयक से मृत्यु पंजीकरण का डेटा इलेक्ट्रॉनिक रूप से प्राप्त करेगा। इससे यह सुनिश्चित होगा कि निर्वाचन रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों (ईआरओ) को पंजीकृत मौतों के बारे में समय पर जानकारी मिले। इससे बूथ लेवल अधिकारी (बीएलओ) भी फॉर्म 7 के तहत औपचारिक अनुरोध की प्रतीक्षा किए बिना, फील्ड विजिट के माध्यम से जानकारी को फिर से सत्यापित करने में सक्षम होंगे। मतदाता सूचना पर्ची (वीआईएस) को मतदाताओं के लिए अधिक अनुकूल बनाने के लिए आयोग ने इसके डिजाइन में भी सुधार करने का फैसला किया है। मतदाता की क्रम संख्या और भाग संख्या अब अधिक प्रमुखता से प्रदर्शित की जाएंगी, साथ ही फ़ॉन्ट का आकार भी बढ़ाया जाएगा जिससे मतदाताओं के लिए अपने मतदान केंद्र की पहचान करना आसान हो जाएगा और मतदान अधिकारियों के लिए निर्वाचक नामावली में उनके नाम को कुशलतापूर्वक ढूंढना आसान हो जाएगा। आयोग ने यह भी निदेश दिया है कि लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 की धारा 13ख (2) के तहत ईआरओ द्वारा नियुक्त सभी बीएलओ को मानक फोटो पहचान-पत्र जारी किए जाएं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि मतदाता सत्यापन और पंजीकरण अभियान के दौरान नागरिक बीएलओ को पहचान सकें और उनके साथ आश्वस्त होकर बातचीत कर सकें। चुनाव संबंधी कर्तव्यों के निष्पादन में मतदाताओं और आयोग के बीच प्रथम प्रतिनिधि के रूप में, यह महत्वपूर्ण है कि घर-घर जाकर काम करने के दौरान बीएलओ को जनता आसानी से पहचान सके।

ट्रायसिकल मिलने से दिव्यांग कमलेश का चेहरा खिला

छुरिया, 02 मई। छुरिया विकासखंड के ग्राम पंचायत भंडारपुर निवासी पैर से 50त्न दिव्यांग होने पर कमलेश निर्मलकर को आज छुरिया जनपद पंचायत कार्यालय में संजय कुमार सिन्हा अध्यक्ष जनपद पंचायत छुरिया व होरीलाल साहू मुख्यकार्यपालन अधिकारी छुरिया द्वारा ट्रायसाइकल प्रदान किया गया ,ट्रायसिकल मिलने से कमलेश के चेहरे में आई मुस्कान उन्होंने मान. मुख्यमंत्री विष्णु देव साय सहित स्थानीय जनप्रतिनिधियों को धन्यवाद ज्ञापित किया है । इस अवसर पर टीकम साहू ,प्रेमानंद रामटेके पंचायत निरीक्षक उपस्थित रहे ।

कार्यालय कार्यपालन अभियंता, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खण्ड बीजापुर (छ0ग0)

''ई-प्रोक्योरमेंट निविदा सूचना''

निविदा क्रमांक 04./व ले लि/ लो.स्वा.यॉ. खण्ड/2025 बीजापुर — दिनांक 29.04.2025

(प्रथम निविदा आमत्रंण सूचना)

छत्तीसगढ के राज्यपाल की ओर से एकीकृत पंजीयन प्रणाली में पंजीकृत ठेकेदारों से अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में निम्नलिखित निर्माण कार्य के लिए आनलाईन (Online) निविदा आमंत्रित की जाती है

क्र.	निविदा आमंत्रण क्र. /दिनांक	सिस्टम क्रमांक	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (रू. लाख में)	धरोहर राशि (रू. लाख में)	ठेकेदार की श्रेणी	निविदा की अंतिम तिथि
1	2	3	4	5	6	7	8
1	04/ 29.04.2025	167665	Providing laying jointing of HDPE Pipe line 75 mm dia 2500 mtr (6kg/cm2) pipe line, & providing connection in house hold and public instiutions-100 nos with valve specials and all fitting i/c all allied civil works complete with 06 Months, and 03 month trial run & operation, maintanace. at village-P.M.A.Y.COLONY JANGLA, Block-BHAIRAMGARH, District -Bijapur. (1st Call)	25.85	19388/-	D	23.05.2025

उपरोक्त निर्माण कार्यो की निविदा की सामान्य शर्ते, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी ई-प्रोक्योरमेंट वेब पोर्टल https://eproc.cgstate.gov.in पर दिनांक 01.05.2025 से डाउनलोड की जा सकती है।

कार्यपालन अभियंता,
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खण्ड
बीजापुर

G-252600599/4

एक नजर

आरओडीटीईपी योजना के विस्तार की मांग

रायपुर, 02 मई। भारतीय एल्यूमिनियम उद्योग की एकजुट मांग को मजबूत करने वाले एक कदम के तहत फैडरेशन ऑफ इंडियन मिनरल इंडस्ट्रीज़ (फिमी) ने वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के समक्ष एक औपचारिक प्रतिनिधित्व प्रस्तुत किया है, जिसमें एडवांस ऑथराइज़ेशन (एए) होल्डरों, निर्यातोन्मुख इकाइयों (एक्सपोर्ट ओरियेंटेड यूनिट्स) और विशेष आर्थिक क्षेत्रों (एसईजेड) में स्थित एल्यूमिनियम उत्पादक इकाइयों के लिए निर्यात उत्पादों पर शुल्कों या करों में छूट (रिमिशन ऑफ ड्यूटीज़ और टेक्सिस ऑन एक्सपोर्ट प्रोडक्ट्स-आरओडीटीईपी) योजना के तत्काल विस्तार की मांग की गई है। वाणिज्य सचिव सुनील बर्थवाल को प्रस्तुत फिमी के प्रतिनिधित्व ने मंत्रालय द्वारा प्रगतिशील नीति सुधारों की सराहना की, किंतु साथ ही इस बात पर भी प्रकाश डाला कि 5 फरवरी 2025 के बाद आरओडीटीईपी स्कीम कवरेज की समाप्ति भारतीय एल्यूमिनियम उत्पादकों को लागत में नुकसान पहुंचा रही है। इन इकाइयों को ऐम्बैडेड टैक्स और ड्यूटी को वहन करना पड़ रहा है, जो उनकी उत्पादन लागत का 5-10 प्रतिशत है, इसके चलते अंतरराष्ट्रीय बाजार में उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता कम हो रही है।

ऑपरेशन साइबर शील्ड 212 आरोपी गिरफ्तार

रायपुर, 02 मई। पुलिस महानिरीक्षक रायपुर रेंज श्री अमरेश मिश्रा द्वारा साइबर क्राईम पोर्टल में रिपोर्टेड म्यूल बैंक अकाउंट की जांच करने हेतु योजना तैयार कर म्यूल अकाउंट खोलने में शामिल खाता धारक/संवर्धक/ब्रोकर-एजेंट/बैंक अधिकारी/सिम सप्लायर सभी आरोपियों के विरुद्ध कार्यवाही करने हेतु रेंज साइबर थाना रायपुर को निर्देशित किया गया है। थाना गंज रायपुर के अपराध क्रमांक 79/25 धारा 317(2), 317(4), 317(5), 111, 3(5) बी एन एस में निर्देशों का पालन कर कार्यवाही करते हुए, पूर्व में गिरफ्तार आरोपियों से पूछताछ एवं तकनीकी विश्लेषण से खाता खुलवाने, साइबर ठगी की रकम प्राप्त करने, रकम को इधर-उधर करने में शामिल 4 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार आरोपियों के द्वारा बैंक खातों को खुद ऑपरेट किया जाता था तथा ठगी की रकम को इधर उधर किया जाता था। आरोपियों द्वारा अत्यधिक मात्रा में ठगी की रकम प्राप्त की गई है। आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेजा गया है।

नक्सल हिंसा से प्रभावित 2500 परिवारों के खाते में आई पहली किस्त

रायपुर, 02 मई। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने आज आत्मसमर्पित नक्सलियों और नक्सल हिंसा से प्रभावित 2500 परिवारों को प्रधानमंत्री आवास योजना की पहली किस्त जारी की. बता दें कि छत्तीसगढ़ के विशेष आग्रह पर केंद्र सरकार ने ऐसे परिवारों के लिए 15 हजार आवास स्वीकृत किए हैं. कुल दस करोड़ रुपए आज हितग्राहियों के खातों में अंतरित की गई. प्रथम किस्त के रूप में 2500 परिवारों को 40-40 हजार रुपए जारी किए गए. मुख्यमंत्री ने राशि अंतरण कार्यक्रम में मंत्रालय से वर्चुअली जुड़े 17 जिलों के हितग्राहियों से बातचीत की और आवास निर्माण के लिए पहली किस्त मिलने पर बधाई दी. कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा, मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव सुबोध सिंह और पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग की प्रमुख सचिव निहारिका बारिक सिंह भी मौजूद रहीं. मुख्यमंत्री के सचिव पी. दयानंद, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के सचिव भीम सिंह और प्रधानमंत्री आवास योजना के संचालक तारन प्रकाश सिन्हा भी कार्यक्रम में उपस्थित थे.

राजधानी में हिट एण्ड रन, महिला की मौत

■ तीन लोगों को टक्कर मारकर कार चालक हुआ फरार

रायपुर, 02 मई। रिश्तेदार के घर आई प्रिया साहू को क्या मालूम था कि आज वह अंतिम बार मॉर्निंग वॉक पर निकलेगी. अज्ञात कार चालक ने प्रिया के साथ उसकी रिश्तेदार रिया साहू और एक अन्य ललिता बंजारे को सुबह-सुबह ठोकर मारकर फरार हो गया. हादसे में प्रिया की मौत हो गई, वहीं रिया और ललिता बंजारे गंभीर हालत में मेकाहारा में भर्ती हैं. जानकारी के अनुसार, मुंगेली की रहने वाली प्रिया साहू सिंधी कालोनी निवासी रिया के घर आई थी. आज सुबह प्रिया और रिया के साथ ललिता बंजारे मॉर्निंग वॉक पर निकले थे. इस दौरान अज्ञात कार चालक ने तीनों को चपेट में ले लिया. सीसीटीवी फुटेब में नजर आ रहा है कि कार की ठोकर से प्रिया कई फीट ऊछल कर सीधे सिर के बल सड़क पर जा गिरी, वहीं रिया और ललिता भी गंभीर रूप से घायल हो गईं. प्रिया की हादसे में जहां मौत हो गई, वहीं रिया और ललिता को गंभीर हालत में उपचार के लिए मेकाहारा में भर्ती कराया गया है. राजधानी में हिट एण्ड रन के मामलों में लगातार इजाफा होता जा रहा है. करीबन महीने भर पहले पुरानी बस्ती थाने के सामने पैदल चल रहे व्यक्ति को तेज रफ्तार कार ने ठोकर मार दी थी. इस घटना में व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई, वहीं आरोपी कार चालक दुर्घटना को अंजाम देने के बाद फरार हो गया था. इसके एक महीना पहले 5 फरवरी को रायपुर के वीआईपी रोड पर आधी रात को नशे में धुत कार चालक ने एक्टिवा सवार तीन युवकों को टक्कर मारी थी. हादसे में गंभीर रूप से घायल तीनों युवकों को मेकाहारा में भर्ती कराया गया था, जिनमें से एक की उपचार के दौरान मौत हो गई थी. कार में डीआरआई के विशेष लोक अभियोजक भावेश आचार्य के साथ एक रशियन युवती (उज्बेकिस्तान) सवार थे.

पाटोत्सव समारोह 3 मई को

रायपुर, 02 मई। भगवती राजराजेश्वरी महात्रिपुर सुन्दरी ललिता प्रेमाम्बा महारानी का भव्य दिव्य 19 वां पाटोत्सव समारोह कल 3 मई शनिवार को श्री जगद्गुरु शंकराचार्य आश्रम बोरियाकला में आयोजित किया गया है। यह जानकारी देते हुए आचार्य धर्मेंद्र महाराज ने बताया कि समरोह का शुभारंभ आज 1 मई को श्रंगार आरती के उपरांत आश्रम परिसर से संतोषी नगर,सायंकाल 5 बजे संतोषी नगर से डुन्डा मार्ग से श्री शंकराचार्य कालेज सेजबहार शोभायात्रा पहुँची। धर्मेंद्र महाराज ने बताया कि रात्रि विश्राम उपरांत भगवती राजराजेश्वरी महात्रिपुर सुन्दरी ललिता प्रेमाम्बा महारानी की शोभा यात्रा आज 2 मई शुक्रवार को सायंकाल 4.30 बजे श्री शंकराचार्य कालेज से ग्राम बोरियाकला के लिए प्रस्थान करेगी। तत्पश्चात ग्राम भ्रमण होगा।1 व 2 मई को आयोजित सम्पूर्ण यात्रा 1008 यतिप्रवर दण्डी स्वामी इन्दुभवानन्द तीर्थ जी महाराज के पावन सानिध्य एवं मार्ग दर्शन में सम्पन्न हुआ।उन्होंने कहा कि कल 3 मई को भगवती राजराजेश्वरी महात्रिपुर सुन्दरी ललिता प्रेमाम्बा महारानी का भव्य दिव्य 19 वें पाटोत्सव समरोह पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

राजधानी में बढ़े आपराधिक प्रकरण: विकास

रायपुर, 02 मई। पूर्व विधायक विकास उपाध्याय ने आज अपने बयान में कहा कि जब से छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है, अपराधियों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हो गई जिससे आपराधिक प्रकरण का ग्राफ लेवल भी बहुत ज्यादा बढ़ चुका है। उपाध्याय ने बताया बीते दिवस रायपुर के समता कॉलोनी में कंस्ट्रक्शन कंपनी के कर्मचारी से 1 नहीं बल्कि 4-4 बदमाशों ने गाड़ी, मोबाईल और लाखों रूपये लूट लिया और अब तक फरार हैं। बीजेपी की सरकार में सिर्फ यही होते आ रहा है और आगे भी इससे कहीं ज्यादा की आशंका दिखाई दे रही है।

पूर्व विधायक विकास उपाध्याय ने पूर्व में भी रायपुर में लगातार हो रही चोरियों पर बयान दिया था कभी किसी मंदिर को निशाना बनाया जाता है तो कभी कॉलोनी के रहवासियों के लगातार साइकिल चोरी गार्डन एवं घरों से हो जाते हैं और लगातार असामाजिक तत्वों का जमावड़ा पूरे रायपुर शहर में देखने को मिलता है जहां लाइट बंद रहती है वहीं रात के अंधेरे का वे लोग फायदा उठाते हैं और अपराधियों का मनोबल बढ़ रहा है। उपाध्याय ने कहा पूर्व की सरकार की तरह बीजेपी के प्रशासन में ना ही पुलिस की गस्त रहती है और न ही अपराधियों में पुलिस का कोई डर नजर आता है, जिसके कारण अपराधी बेखौफ होकर घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। और आज इसी के कारण रायपुर के समता कॉलोनी में कंस्ट्रक्शन कंपनी के कर्मचारी से 1 नहीं बल्कि 4-4 बदमाशों ने गाड़ी, मोबाईल और लाखों रूपये लूटा फिर फरार हो गए इसके बाद भी सत्ताधारी लोग मूकदर्शक बने हुए बैठे हुए हैं और भला ऐसा क्यों नहीं होगा जब बीजेपी ने छत्तीसगढ़ को सत्ता आते ही अंधेर नगरी बना रखा है।

उपाध्याय ने कहा कि छत्तीसगढ़ में बीजेपी सरकार की ना नीति काम कर रही है और न ही रीति। पूर्व की कांग्रेस सरकार में स्मार्ट सिटी कहे जाने वाले रायपुर शहर में सीसीटीवी के उपयोग से बदमाशों में भय और आम जन स्वयं को सुरक्षित महसूस करते थे। उन्होंने आगे कहा कि जहां कॉलोनी में लगातार चोरियां हो रही है वही कॉलोनी छोड़कर आप बस्ती की तरफ जाएंगे तो वहां अवैध नशे का कारोबार, सट्टा-जुआँ धड़ल्ले से चल रहा है कोई रोकने टोकने बोलने वाला नहीं है माताएं, बहने लगातार परेशान है और आये दिन शिकायतें करती रहती है उसके बाद भी जनप्रतिनिधि द्वारा उनकी शिकायतों को नजर अंदाज किया जाता है। पूर्व विधायक विकास उपाध्याय ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की 17 माह की सरकार ने प्रदेश की जनता को उपहार में उनके विश्वास के बदले में सिर्फ अपराध दिया है। उन्होंने कहा कि लगातार हत्या, लूट, डकैती, चोरी, चैन स्नैचिंग, नशीले पदार्थ का व्यापार, अवैध शराब बिक्री, जुआं, सट्टा सहित जघन्य अपराध प्रदेश की जनता को उपहार में दिया है। वहीं भारतीय जनता पार्टी की सरकार के संरक्षण में पुलिस की प्रतिक्रिया पर लगाम है और अपराधियों के हौसले बुलंद हैं।

विद्यार्थियों ने अभियान चला पक्षियों के लिए की, दाना-पानी की व्यवस्था

रायपुर, 02 मई। छत्तीसगढ़ छत्तीसगढ़ युवा विकास संगठन संचालित विप्र कला, वाणिज्य एवं शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय में विद्यार्थियों ने कॉलेज परिसर में चिड़ियों के लिए माटी का सकोरा में पानी और दाने की व्यवस्था के लिए अभियान चलाया। कॉलेज परिसर के चारों ओर सैकड़ो पेड़ों में हर पेड़ में चिड़िया के लिए दाना- पानी की व्यवस्था विद्यार्थियों ने अलग-अलग ग्रुप बनाकर किया है। यह ग्रुप प्रतिदिन अपने क्षेत्रों के पेड़ों पर चिड़ियों के लिए दाना- पानी की व्यवस्था वर्षा ऋतु आने तक करते रहेंगे। नियमित रूप से इसका निरीक्षण वाणिज्य संकाय के प्राध्यापक डॉ .आराधना शुक्ला, डॉ. निधि श्री शुक्ला , डॉ. सीमा अग्रवाल एवं वरिष्ठ विद्यार्थियों का एक ग्रुप करता रहेगा। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ.मेघेश तिवारी ने कहा कि विद्यार्थियों को अध्ययन-अध्यापन के साथ प्रकृति से जोड़ना इस प्रकार के कार्यों का मुख्य उद्देश्य है।

बिजली कटौती जनता के लिये आफत: दीपक बैज

रायपुर, 02 मई। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि भाजपा सरकार में आम जनता को मांग के अनुसार बिजली नहीं मिल रहा है। बिजली कटौती और लो वोल्टेज की समस्या से शहर और गांव की जनता जूझ रही हैं। कांग्रेस की सरकार के दौरान 24 घंटा बिजली की आपूर्ति होती थी। गर्मी के दिनों में मांग बढ़ने पर दूसरे राज्यों से भी बिजली की खरीदी किया जाता था और आम जनता को 24 घंटा बिजली की आपूर्ति की जाती थी। रवि फसल लगाने वाले किसानों को भी बोरवेल चलाने के लिए बिजली निःशुल्क मिलता था। कांग्रेस की सरकार के दौरान बिजली आपूर्ति निर्बाध गति से चले इसके लिए ट्रांसफार्मर के पावर बढ़ाए गए थे, नए ट्रांसफार्मर लगाए गए थे। ट्रांसमिशनों को अपग्रेड किया गया। 15 माह से अधिक भाजपा की सरकार में बिजली की व्यवस्था चरमरा गई है, आम जनता सड़कों पर उतरकर बिजली की समस्या को लेकर आंदोलन कर रहे हैं। प्रदेश

कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि भाजपा सरकार में बिजली गुल होना आम बात हो गई है, आम जनता सड़कों पर उतरकर बिजली की मांग कर रही है। कांग्रेस सरकार के दौरान बिजली की समस्या को लेकर जनता कभी सड़कों पर उतरी नहीं थी, गर्मी के दिनों मे मांग के अनुसार बिजली की आपूर्ति किया जाता था। 15 माह से अधिक भाजपा सरकार में बिजली की अव्यवस्था देखने को मिल रहा है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि भाजपा सरकार बनने के बाद विद्युत सरप्लस वाला छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत कटौती का केंद्र बन गया है।

श्रमवीरों का कांग्रेस अध्यक्ष ने किया सम्मान

रायपुर, 02 मई। कांग्रेस असंगठित क्षेत्र एवं समस्या निवारण प्रकोष्ठ के द्वारा श्रमिक दिवस पर शहीद स्मारक भवन में श्रमिक सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने श्रमिकों का श्रीफल, शॉल व टिफिन बॉक्स भेंटकर सम्मान किया। कार्यक्रम में पूर्व मंत्री मोहम्मद अकबर, पूर्व मंत्री सत्यनारायण शर्मा, श्रम कल्याण मंडल के पूर्व अध्यक्ष शफी अहमद ,पूर्व अध्यक्ष जिला सहकारी बैंक पंकज शर्मा ने सभा को संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रदेश महामंत्री छाया विधायक रायपुर दक्षिण कन्हैया अग्रवाल ने किया। प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा श्रमिक साथी देश के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। कांग्रेस पार्टी श्रमिकों का कल्याण व सम्मान करती है। गरीब व श्रमिकों के हित में मनरेगा, शिक्षा व भोजन का अधिकार पूर्व की कांग्रेस सरकार ने प्रदान किया था। कांग्रेस सरकार ने श्रमिकों के कल्याण हेतु अनेक योजनाएं संचालित की थी। कांग्रेस ने श्रमिक दिवस को बोरे बासी दिवस के रुप में मनाया है। केन्द्र व राज्य की भाजपा सरकार श्रमिक विरोधी है। भाजपा सरकार में श्रमिक अन्य राज्यों में पलायन कर रहे हैं। कांग्रेस असंगठित क्षेत्र एवं समस्या निवारण प्रकोष्ठ के अध्यक्ष मोहम्मद सिद्दीक ने कहा श्रमिक साथियों की मेहनत अनमोल है वह दिन रात देश व लोगों के लिए पसीना बहाते हैं। श्रमिक साथियों के बिना विकास की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती है। कांग्रेस श्रमिकों हितों के लिए हमेशा कार्य करती रही है। कार्यक्रम में प्रमुख रूप प्रदेश महामंत्री दीपक मिश्रा,सकलैन कामदार,सुरेश शुक्ला, शारिक रईस खान,श्रम कल्याण मंडल सदस्य नरेश गड़पाल,युगल पांडे,अब्दुल हैदर,अशरफ हुसैन,अजय अग्रवाल, पार्षद शेख मुशीर,मनीष दयाल,दीपा बग्गा,नवीन चंद्राकर, मो. अरशद, मो. शब्बीर,राहुल इंदुरिया,रवीन्द्र शुक्ला,पूनम यादव,इंटक नेता आशीष दुबे,वहीदुद्दीन ,सैयद चिराग अली,रेशम अजगले,जिवराखन साहू,राहुल सिंह, गौरव एरी, गम्मन कौशिक , फणींद्र लाल बोस, भानू प्रताप सिन्हा,ईश्वरी साहू,हेमराज बघेल,अफ़रोज़ खान,राजेश त्रिवेदी,मुकुंद कागडेलवार,कल्पना सागर,राधिका रेड्डी,मल्लिका प्रजापति,मोहसिन खान,राजेश कटारे,मुनेश गौतम,श्रेयांश शुक्ला,मोहम्मद नईम,कमल भोई,मोहम्मद शफीक,कालू,अशफाक,सल्लू,अतायत अली,हेमंत,वर्मा,सहित भारी संख्या में श्रमिक व कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद रहे।

भारत स्काउट एवं गाइड ने दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

रायपुर, 02 मई। भारत स्काउट एवं गाइड की 75 वें हीरक जयंती के उपलक्ष एवं मजदूर दिवस के अवसर पर आज 1मई को प्रातः 7ः00 बजे पर्यावरण एवं जल संरक्षण के लिए साइकिल रैली निकालकर संदेश दिया यह रैली नगर पालिका निगम से गांधी चौक होते हुए मरीन ड्राइव तक निकाली गई या आयोजन राज्य मुख्य आयुक्त भारत स्काउट गाइड छत्तीसगढ़ डॉक्टर सोमनाथ यादव एवं राज्य सचिव कैलाश सोनी के निर्देशन में जिला मुख्य आयुक्त सुरेश शुक्ला राज्य उपाध्यक्ष जी स्वामी जी जिला शिक्षा अधिकारी विजय खंडेलवाल जी के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ रैली का शुभारंभ राज्य सचिव जिला शिक्षा अधिकारी जिला मुख्य आयोग जिला उपाध्यक्ष द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया यह साइकिल रैली जल एवं पर्यावरण को बचाने हेतु संदेश दिया गया साथ ही 1 में मजदूर दिवस के अवसर पर मजदूरों को मट्ठा वितरण भी किया गया कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में जिला पंचायत पूर्व अध्यक्ष लक्ष्मी वर्मा द्वारा जल एवं पर्यावरण को बचाने के लिए यह संदेश दिया कि आने वाली पीढ़ी को बचाना है तो जल और वायु दोनों की रक्षा करनी होगी। उक्त कार्यक्रम में जिला सचिव मृत्युंजय शुक्ला डीओसी गाइड लक्ष्मी नायक विकासखंड धरसीवां सचिव मुकेश बोरकर रोहित कुमार वर्मा विकासखंड सचिव आरंग भूपेश कुमार साहू आरती राजपूत दामिनी नाग मीना भारद्वाज मनीषा वायकर नमन साहू सहित समस्त रोवर रेंजर स्काउट गाइड के बच्चे उपस्थित थे।

दृष्टि एवं श्रवण बाधित बच्चों के लिए शिक्षा का सफर अब होगा आसान : मुख्यमंत्री

रायपुर, 02 मई। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने अपने निवास परिसर से दृष्टि एवं श्रवण बाधित बच्चों को एक बड़ी सौगात देते हुए दो विशेष बसों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। ये बसें रायपुर और बिलासपुर स्थित शासकीय दृष्टि एवं श्रवण बाधित विद्यालयों में अध्ययनरत डे-स्कॉलर बच्चों को प्रतिदिन निःशुल्क घर से स्कूल और स्कूल से घर तक पहुंचाएंगी।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि यह सुविधा विशेष बच्चों के लिए न केवल सुगम और सुरक्षित आवागमन सुनिश्चित करेगी, बल्कि उनके आत्मविश्वास, शिक्षा की निरंतरता और सामाजिक समावेश को भी मजबूती प्रदान करेगी। उन्होंने कहा कि यह पहल उन माता-पिता के लिए भी राहत लेकर आएगी, जो अपने बच्चों की दैनिक आवाजाही को लेकर चिंतित रहते हैं, विशेष रूप से जब दोनों अभिभावक कार्यरत हों। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार का संकल्प है कि हर विशेष आवश्यकता वाले बच्चे तक पहुँचा जाए और उन्हें एक बेहतर जीवन देने के लिए सभी आवश्यक सुविधाएं सुनिश्चित की जाएं। यह बस सेवा केवल परिवहन सुविधा नहीं, बल्कि विशेष बच्चों के जीवन में बदलाव लाने का माध्यम है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि शिक्षा तक पहुंच सभी बच्चों का अधिकार है और सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि किसी भी शारीरिक बाधा के कारण कोई बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे। उल्लेखनीय है कि इन विशेष बसों के संचालन से रायपुर और बिलासपुर के सैकड़ों दृष्टि एवं श्रवण बाधित बच्चों को प्रतिदिन सम्मानजनक और सुरक्षित यात्रा का अवसर मिलेगा, जिससे वे मुख्यधारा की शिक्षा से सहज रूप से जुड़ सकेंगे।

ब्रह्माकुमारी संस्थान में समर कैम्प का उद्घाटन

रायपुर, 02 मई। राज्य बाल सरंक्षण आयोग की अध्यक्ष डॉ. वर्णिका शर्मा ने कहा कि सभी बच्चों में कुछ न कुछ खुबियाँजरूर होती हैं। आपको उन खूबियों को पहचान कर आगे बढ़ना है। उन्होंने प्रेरणा देते हुए कहा कि आप में से कोई वीर शिवाजी जैसा हिम्मती बनेगा तो कोई नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जैसा दृढ़ प्रतिज्ञ बनेगा और कोई रानी लक्ष्मी बाई व अहिल्या देवी जैसी महान बनकर देश का नाम रोशन करेगी परन्तु आप बच्चों को वादों का पक्का होना जरूरी है। बच्चे मन के सच्चे और अच्छे होते हैं। इसलिए सबके प्यारे होते हैं।

डॉ. वर्णिका शर्मा आज प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा विश्व शान्ति भवन चौबे कालोनी रायपुर में आयोजित समर कैम्प के उद्घाटन अवसर पर बच्चों को सम्बोधित कर रही थीं। उन्होंने आगे कहा कि समर कैम्प अपनी प्रतिभा को पहचानने का अवसर देता है। स्कूल के दौरान आप बच्चों को पढ़ाई के अलावा दूसरे कामों के लिए समय नहीं मिल पाता है। इसलिए समर कैम्प का सदुपयोग रचनात्मक कार्यों के लिए करना होगा।

नक्सल प्रभावितों को हर संभव सहायता दी जाए: डेका

रायपुर, 02 मई। राज्यपाल रमेन डेका से राजभवन में बस्तर क्षेत्र के कांकेर, नारायणपुर और सुकमा जिले के नक्सल हिंसा से पीड़ित ग्रामीणों ने मुलाकात की और अपनी समस्याओं से अवगत कराया। श्री डेका ने नक्सल पीड़ितों को हर संभव मदद् देने की बात कही।

राज्यपाल श्री डेका ने सभी पीड़ितों से बात चीत की। शासन की ओर से नक्सल हिंसा से प्रभावित ग्रामीणों को जो सहायता राशि उपलब्ध कराई गई है उस राशि का सदुपयोग करने कहा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में एवं केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह की विशेष पहल पर केंद्र शासन द्वारा बस्तर क्षेत्र में नक्सलवाद को जड़ से खत्म करने के लिए सतत् कार्रवाई की जा रही है तथा वर्ष 2026 तक इस क्षेत्र को नक्सल मुक्त करने का लक्ष्य रखा गया है। उन्होंने बताया कि नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने तथा इन क्षेत्रों के विकास के लिए लगातार कार्य किए जा रहे हैं। दूरस्थ क्षेत्रों में मोबाइल टावर लगाये जा रहे हैं, जिससे ये क्षेत्र मोबाइल नेटवर्क से जुड़ सके। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संपदा से भरपूर बस्तर क्षेत्र में विकास एवं पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं।

राज्यपाल श्री डेका ने कहा कि नक्सल हिंसा में जो दिव्यांग हुए हैं उनको आत्म निर्भर बनाने के लिए प्राथमिकता से कार्य किया जाएगा। उन्होंने नक्सल हिंसा से दिव्यांग हुए सुकमा जिले के ग्राम चिंता गुफा निवासी राहुल सोड़ी का इलाज एम्स रायपुर में कराने के निर्देश दिये।

इस अवसर पर राज्यपाल के सचिव डॉ. सी. आर. प्रसन्ना, गृह मंत्री के ओएसडी श्री अमर सिदार सहित पीड़ित ग्रामीण भी उपस्थित थे।

पेयजल की गुणवत्ता सुनिश्चित करने निर्देश जारी

रायपुर. 02 मई। नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग ने सभी नगरीय निकायों में लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने और पेयजल की गुणवत्ता सुनिश्चित करने विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किए हैं। विभाग ने इसके लिए सभी नगर निगमों के आयुक्तों तथा नगर पालिकाओं एवं नगर पंचायतों के मुख्य नगर पालिका अधिकारियों को परिपत्र जारी कर आवश्यक निर्देश दिए हैं। विभाग ने मौसमी बीमारियों एवं दूषित पेयजल से होने वाले रोगों के प्रति सचेत रहते हुए इनके रोकथाम के लिए आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने को कहा है। नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग ने संचालनालय से सभी निकायों को जारी परिपत्र में 15 जून के पहले नलकूप स्त्रोतों को क्लोरीन या सोडियम हाइपोक्लोराइड डालकर शुद्धिकरण करने के निर्देश दिए हैं। साथ ही नगरीय निकायों में स्थापित एवं संचालित वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट के फिल्टर बेड का संधारण तथा शहरों की उच्च स्तरीय पानी टंकियों की सफाई का काम 10 जून तक पूर्ण करने को कहा है। विभाग ने जल प्रदाय वाली पानी टंकियों की साल में कम से कम दो बार सफाई कराने के निर्देश दिए हैं। टंकी सफाई की तिथि टंकी के कालम में अंकित करने भी कहा है।

नगरीय प्रशासन विभाग ने जल प्रदाय के लिए बिछाई गई पाइपलाइन में लीकेज या टूट-फूट को तत्काल सुधारने को कहा है। विभाग ने सार्वजनिक नलों और हैण्डपम्पों के आसपास पर्याप्त सफाई रखने तथा जन-जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को शुद्ध एवं सुरक्षित पेयजल के उपयोग के लिए प्रेरित करने के निर्देश दिए हैं। निकाय में स्थापित होने वाले नवीन हैण्डपम्पों को भविष्य में संधारण के लिए सूचीबद्ध करने भी कहा गया है। डेंगू व मलेरिया की रोकथाम के लिए खाली जगहों में जमा पानी, कूलर, पानी की टंकी, बर्तन, फ्रिज के ट्रे, टॉयर तथा अन्य वस्तुओं में पानी के जमाव को खाली कर साफ-सुथरा रखने के भी निर्देश विभाग ने नगरीय निकायों को दिए हैं। सतही स्त्रोत पर आधारित पेयजल योजनाओं में जल उपचार वाटर ट्रीटमेंट प्लांट में करने के बाद क्लोरीनयुक्त जल शहरों में प्रदाय किया जाता है। सामान्यतः इस प्रकार की व्यवस्था में पानी के दूषित रहने की संभावना नहीं रहती है जब तक कि वितरण प्रणाली में बाहर से गंदा पानी न मिल रहा हो। विभाग ने अभियान चलाकर वितरण प्रणाली के अंतिम छोरों के सभी जल नमूनों की पुनः जांचकर शुद्ध पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। पम्पिंग मेन एवं वितरण प्रणाली के लीकेजों की तत्काल मरम्मत करने के लिए भी निर्देशित किया गया है। नगरीय प्रशासन विभाग ने नलकूपों पर आधारित पेयजल योजनाओं में नलकूप स्त्रोत, सम्पवेल, उच्च स्तरीय टंकी एवं वितरण प्रणाली के अंतिम छोरों से पेयजल नमूना एकत्र कर हाइड्रोजन सल्फाइड किट के माध्यम से जाँच करने के निर्देश दिए हैं। किसी भी स्तर पर जल का नमूना दूषित पाए जाने पर ब्लीचिंग पाउडर के घोल या लिक्विड सोडियम हाइपोक्लोराइड डालकर जीवाणुरहित करें। जीवाणुरहित करने के एक सप्ताह बाद पुनः उसका परीक्षण करें। जल के नमूने के पुनः दूषित पाये जाने पर विस्तृत जाँच के लिए प्रयोगशाला में भेजें तथा आवश्यक मात्रा में ब्लीचिंग पाउडर का घोल उच्च स्तरीय टंकी में डालने के बाद ही जलप्रदाय करें। विभाग ने स्थल पर नलकूपों या हैण्डपम्पों के माध्यम से शुद्ध पेयजल आपूर्ति के लिए भी इस प्रक्रिया का पालन करने को कहा है।

कौशल किशोर मिश्र प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी की ओर से तरुण छत्तीसगढ़, तरुण छत्तीसगढ़ प्रेस टॉवर, प्रेस काम्पलेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं प्रकाशित प्रधान संपादक- कौशल किशोर मिश्र, पंजी. क्रं. 45088/85 डाक पं.छ.ग./रायपुर संभाग/33/2024-26